

TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180552

UNIVERSAL
LIBRARY



प्रथम-भाग

प्रकाशक

चिनगारी प्रकाशन
पो० बॉ० ७८, वाराणसी

चौथा संस्करण

दो रुपया आठ आना



मुद्रक

चिनगारी प्रेस
वाराणसी

स्व० मैया 'कान्त' को
जिन्होंने जमीन के ज़र्रे को आसमान का तारा बनाया

‘परदेसी’ के बाद !

अपने विषय में कुछ कहना भी क्या कहना है ! और कहने वाले को कुछ कहने ही न आता हो तो वह कहे भी तो क्या ? लेकिन कभी-कभी कुछ कहना ही पड़ता है, बिना कुछ कहे काम ही नहीं चलता । यह स्थिति ठीक वैसी ही है जैसी एकान्त में बेताल-सुर के गुनगुनाने वाले किसी ‘धुरन्धर संगीताचार्य’ की दशा संगीत-सम्मेलन में ।

तो मुझे भी कुछ कहना है आपसे, कुछ अपने विषय में, कुछ अपने ‘छैला’ के विषय में । अब आप ही कहिये, मैं क्या कहूँ, कैसे कहूँ ?

जीजिये, मैं कुछ भी नहीं कहता, केवल इतना ही कहता हूँ कि उपन्यास शिरोमणि स्वर्गीय भैया ‘कान्त’ ने ‘परदेशी’ का पहला भाग लिखा, लोग विस्मय-विमोर हो उठे । कुछ और... कुछ और की माँग पर उन्होंने ‘परदेसी’ का दूसरा भाग लिखना पड़ा, फिर भी लोगों को सन्तोष नहीं हुआ और तब उन्होंने तीसरा भाग लिखने का संकल्प किया; परन्तु दुर्भाग्यवश यह सपना साकार न हो सका, भैया का असमय अवसान !— मैं उनके सम्पर्क में रहने के कारण उनके महान उद्देश्य को कुछ समझता था । समझता ही था, उतनी शक्ति, वह शैली मुझमें कहाँ थी कि उनके अरमान को पूरा करता । फिर भी मन में डमंग हो या न हो, दिल में एक कचोट अवश्य थी । सहमते-सहमते मैंने ‘परदेसी’ का तीसरा भाग लिखने की चर्चा बड़े महया आचार्य अर्जुन चौबे काश्यप, महया अपेश तथा महया जन्यत जी से की । इन लोगों ने इतना प्रोत्साहन दिया कि मैं ‘छैला’ नाम से ‘परदेसी’ का तीसरा भाग लिखने को बाध्य हो गया । अंग्रेजी की एक कहावत याद आ गई “It is difficult to obey but impossible to disobey” स्व भैया ‘कान्त’ की आत्मा तथा उपर्युक्त सज्जनों का ही यह प्रसाद है, मेरा कुछ नहीं ।

मेरे उपन्यास की पायडुंलिपी में आवश्यक सुधार कर महया अपेश जी ने अपने स्नेह का जो परिचय दिया है क्या उसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद दूँ ? जो अपने हैं, उनके लिये धन्यवाद क्या ?

—मधुर ।

जिन्दगी एक सफर है और मौत एक मंजिल, सफर में जिन्दगी है तो मंजिल पर मौत !

सफर में तूफान और भूचाल है तो मंजिल पर खामोशी की चाल !

मैना सफर तय करके अपनी मंजिल पर पहुँच गई थी और ले रही थी शान्ति की साँस !

मौत से लड़ने वाले टिकोरा का सफर जारी था अभी, जीवन की आँधी उसे उड़ाये लिये जा रही थी। जमाने के काँटे उसके कलेजे में चुभे जा रहे थे।

परदेसी से मैना को छीन तो लिया उसने मगर मैना मिली नहीं, मिली भी तो उसकी लाश !

अजगर की तरह फुँफकारने वाला सपेरा, फन नीचा किये चला जा रहा था चुपचाप।

उस भयानक सँपेरे का दिल जल रहा था, पुतलियों में निराशा छाई थी, आवेग से मस्तिष्क फटा जा रहा था। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा नजर आ रहा था !

जमीन का ज़र्रा-ज़र्रा उसका दुश्मन बन बैठा था। जैसे हर इन्सान उसकी आँखों की किरकिरी बन गया हो।

अगर अभी मैना की आवाज फूट पड़े तो एक-एक को मारने की ताकत है टिकोरा में। टिकोरा तो टिकोरा है। हारकर भी हार कबूल करना नहीं जानता। वह मैना की मौत से लड़ेगा। अपनी मैना को जीवन देकर बतायेगा दुनिया को कि कितनी ताकत है उसके पास। और बतायेगा परदेसी को आकर कि उसकी भी कुछ हस्ती है।

धीरे-धीरे दुनिया पर रात ने काली चादर ढाल दी। चाँद-सितारे चमक पड़े। किन्तु पागल टिकोरा को इससे क्या? वह चलता रहा चुपचाप! अभी तो उसकी मंजिल दूर है और उसे अभी जीना भी है मैना को जिलाने के लिए, परदेशी को जलाने के लिये।

इसीलिये खूँखवार टिकोरा मन्थर-गति से चला जा रहा है, अनजान दिशा की ओर।

+

+

+

“छैला !”

“.....”

कोमल कण्ठ से मधुर आवाज निकली मगर बिस्तर पर लेटा युवक चुप ही रहा। जैसे उसने सुना ही नहीं।

“परदेसी बाबू....बोलो न !” विचलित हो उठी युवती, युवक के मौन से।

उसकी पतली-पतली शोख उँगलिया युवक के चमकीले, घुंघराले बालों से खेलने लगीं !

स्पर्श में मादकता पाकर चौंक पड़ा युवक । युवती की चंचल उँगलियों को उसने अपने कामल हाथ में पकड़ लिया ।

“डर गये बाबू !..यह तो मेरी उँगलियाँ हैं । कोई साँप थोड़े ही, जो तुम्हें डँस लेंगी...बोला न....कुछ बालो भी....ऊपर क्या देख रहे हो जी, जरा नीचे तो देखो, कब से तुम्हारी एक मुस्कान देखने के लिये बेचैन बैठी हूँ....सूनी छत में भला क्या है ? तनिक इधर तो देखो !” बोली वह और उसने युवक के मानिन्दचाँद चेहरे को अपनी ओर घुमा लिया ।

आँखों से आँखें टकराईं, मिलकर चार हो गईं ।

एक में बेचैनी की लहर थी और दूसरी में था खामोशी का सागर ।

“परदेसी बाबू !” आँखों में आँखें डालकर बोली वह । उसकी थरथराती आवाज दिल का अरमान लेकर बाहर निकली तो तमनायें हाय-हाय कर उठीं ।

और वह युवक, शहरी छैला !—

वह चुप-चुप आँखों से जादू चला रहा था, गाँव की भोली गोरी पर । लूट रहा था उसे वह और पी रहा था उसके सौंदर्य की मदिरा को और तड़पा रहा था, उसके कलेजे में कैद मासूम दिल को ।

“दैया रे !” चेहरे पर आश्चर्य की लकीर खींचकर बोली वह—“टकटकी लगाये क्या देख रहे हो जी !....ऐसे मत देखो, डर लगता है मुझे...ऐसे तो साँप भी नहीं देखते....”

बोलते-बोलते उसने आँखों में कटार लेकर देखा अपने अलबेले छैला की तरफ ।

घायल हो उठा युवक। चोट की पीड़ा जब बरदास्त के बाहर हो गई तो बोल ही उठा—“तो मैं साँप हूँ ?”

“नहीं जी, तुम तो मेरे दिल के राजा हो !” कहते-कहते शर्म से गड़ गई वह। लज्जा का बोझ सम्हाल नहीं सकने के कारण उसकी बोझिल पलकें बन्द-सी हो गईं।

पलकों की चादर में कटीले नयन कैद हो गये।

“मैं तुम्हारा राजा हूँ ?”

“हाँ !” छोटा-सा उत्तर दिया उसने। चेहरा लाल हो उठा। गुलाब का हुस्न उसके कपोलों पर छा गया।

उसके दोनों हाथ चेहरे का आवरण बन गये।

शरीर छैले ने उसके चेहरे पर चिपके हाथों को प्यार से हटाया।

बदली हटो तो चाँद हँस पड़ा।

वर्षा हुई और हरियाली छा गई।

“हटो जी, तुम तो बड़े वो हो !” वह बोली कोयल की कूक-भरी वाणी में।

“क्या ?”

“चोर !”

“तुम्हारा क्या चुरा लिया है मैंने....क्यों बदनाम करती हो ?...मेरी चोरी करने की तो आदत नहीं !” युवक ने कहा।

“भूठ !...मेरा दिल जो चुरा लिया है तुमने !...मेरा क्रार, आँखों की नींद सभी कुछ तो चुरा ली है....देखो, कलेजा कैसा धक-धक कर रहा है—सिर्फ यही भर तो छोड़ दिया है तुमने—देखो न जी !”

और उसने युवक के हाथ को अपने धड़कते कलेजे से चिपका लिया अपने दिल की आवाज सुनाने के लिये।

यौवन के स्पर्श से युवक अचेत हो उठा। सुध-बुध खो बैठा वह। उस पर मदहोशी-सी छा गई। वह विस्फारित नेत्रों से गाँव की उस शोख गोरी को निहार था।

अब भी उसका हाथ वहीं था।

“मेरे रसिया !” पुकारा उसने प्यार से और हौले से दबाया युवक के हाथ को जो उसके कलेजे पर पड़ा था, बेजान-सा। बोली—“तुम्हें देखती हूँ तो दिल तुम्हीं को देखना चाहता है....यहाँ आते ही तुमने मुझे अपने वश में कर लिया...तुम भी जादू-मंतर जानते हो क्या छैला !—बोलो न, तुम्हारी चुप्पी तो जान ही ले लेती है....”

युवक देख रहा था और सोच रहा था। सोच रहा था और देख रहा था, अपलक, मौन।

उसकी आँखों के इशारे, जवान की ताकत छीनकर बोल रहे थे और जवान, बेजवान हो उठी थी।

जंगल की भोली आँखों की बोली भला कैसे समझे ? वह तो सिर्फ जवान की जबानी सुनना चाहती थी।

युवक गाँव की युवती के कलेजे पर पड़े अपने हाथ का हटाने लगा तो—

“इसे यहीं रहने दो छैला !...बड़ा सुख मिल रहा है.... लगता है जैसे....बहुत भला-भला तो लगता है जी !...”

“क्यों ?”

“तुम्हीं बताओ....शहर में रहते हो न !....बताओ जरा !” पूछा उसने। उस पर मदहोशी छा रही थी।

उसका अस्त-व्यस्त भावों वाला मुखड़ा धीरे-धीरे परदेसी के हसीन चेहरे की ओर आने लगा। वह उन्मत्त हो उठी थी। उसके अंग-अंग में बेहोशी सिहरन बनकर पैठ गई थी। वह इस

तरह भुकी थी अपने छैले के ऊपर, जैसे फूलों से लदी दहनियाँ भुकी रहती हैं।

उसका चेहरा नीचे दुलकता गया और दुलक ही गया। उसकी गरम-गरम साँस, छैला के मस्तक पर लोटने लगी। साँस की चोट से व्यग्र हो उठा युवक। अपने को सम्हाल नहीं सका वह और अपने को सम्हाल नहीं पाया तो उसने उसे अपनी बाँहों में कस लिया।

जल उठी युवती और हाँ उठी विभोर।

समनों की दुनिया से जब युवक वास्तविक संसार में आया तो उसने देखा—आँखों पर बांझिल पलकों की चादर डाले 'वह' उसके कलेजे पर लेटी थी।

उसने उसके सर का आदिस्ते से हटाना चाहा, तभी—

युवती के काँपते हाठों में थरथराती आवाज फूट पड़ी—“मैं नागिन नहीं राजा ! जो डरते हो...डस थोड़े ही लूँगी...मैं तो चम्पकलता हूँ, तुम्हारे गारे-गारे शरीर से लिपट कर शांभा ही बढ़ा दूँगी !”

अब सर उठा लिया था उसने। सिर्फ आँखें तिरछी करके रस उढ़ेल रही थी। क्षण भर में ही उसके चेहरे का भाव बदला। नयनों से तार चलाकर वह फिर उसके कलेजे पर कटे पेड़-सी गिर पड़ी।

“हटो भी...तंग मत करो !”

“जरा-सी राहत दे दोगे तो छोटे नहीं हाँ जाओगे अलबेले !”

“हां गया न ! छोड़ो भी अब....आह ! देखा, मेरा ज़रूम—उफ !” कराह उठा वह।

“अरी, मारी माई ! मैं तो भूत ही गई थी...अभी दवा बनाकर लाई...नहीं तो चिकोरा मुझ पर आकर सारा गुस्सा

उतारने लगेगा !” बोली युवनी और उठ खड़ी हुई। युवक की कराह सुनकर विचलित हो उठी थी बेचारी।

दौड़कर बाहर गई और हरी-हरी पत्तियाँ और जड़ी लेकर पत्थर पर घिसने लगी।

दवा तैयार हो गई तो दौड़ी-दौड़ी आई परदेसी के पास। पैर और हाथों के जख्म पर दवा लगाने लगी।

“आह !” चीख उठा युवक।

दवा ... ने ... ने युवती की उँगलियों से जख्म को चोट पहुँच गई थी शायद।

“दैया रे ! कितना नाच लिया है मरदूद ने...मेरा चिकोरा नहीं पहुँचता तो खा ही डालता हरामी....भला कितना बड़ा था बाबू !” धीरे-धीरे घावों का दवा से सहलाता हुई बोली वह।

“बहुत बड़ा...जरा यहाँ भी लगा दो....” चेहरे की खरोंचों की तरफ इशारा किया उसने।

चेहरे के जख्मों पर जब उसकी नाजुक उँगलियाँ दौड़ने लगीं तो उसका आँखें उसके नयनों से जा टकरायीं।

“यह तो भर गया है छैला !” आँखों में आँखें डालकर कहा उसने।

“भर गया है तो बस करो अब....” करवट बदलते हुये बोला वह—“और जाकर दवा रख दो !”

दवा रख कर आयी अलबेली और अपने छैला की बगल में बैठ गई।

उसके प्याले होंठ आगे बढ़े छैला की आंर और तब....

तब बोली वह—“यह जो है न परदेसी !...ऐसा लगता है कि....”

“लगता है कि खा ही जायगा....वाह बेटा, वाह....अजगर

के भी बाप निकले !....छेदा जैसा मुँह गुफा का भय दिखाता है....
कम्बख्त !....चमकी !....ओ मेरी रानी !....अरी, कहाँ हो
छबीली !....जरा आकर तो देख....तुम्हारे लिये गेहुँअन धर
लाया हूँ—तेरी चोली फट गई है न ! अब बना ले नई-नई...अबे,
ताब मत दिखा नहीं तो गर्दन दबा दूँगा तो टें हो जायगा....
चमकी !”

आवाज सुनकर हड़बड़ा कर उठ बैठी वह । परदेसी भी सजग
हो गया ।

“आई मेरे राजा !....लो, आ गई !” और हवा के झोंके की
तरह आकर चिकोरा से लिपट गई, लता की भाँति—किसकी
गर्दन तोड़ रहे हो ?”

चिकोरा से लिपटी चमकी ऐसा लग रही थी जैसे बरगद से
लता लिपटी हो ।

“अरे, जरा दूर से ही देख न ! नागिन बनकर घेरा क्या
ढालती है—“हाँ अब ठीक है....देख, इस बेईमान की गर्दन दबा
रहा था । शैतान ने दौड़ा-दौड़ा मारा मुझे....”

“तुम तो मरे नहीं हो अलबेले !....तुम तो यहाँ हो, मेरे पास !”

“तुम्हें देखकर जी गया रानी !....” बोला चिकोरा हाथ के
साँप को सम्हालते हुए—“छैला कहाँ है गोरी !”

“यह है !” चिकोरा की ओर इशारा किया चमकी ने और
हँस पड़ी—ही-ही-ही ।

“मैं तो हूँ ही....मगर वह शीतलबाबू कहाँ हैं ?”

“वह तो दिन भर से लेटा ही है मेरे रसिया !....कुछ कहती
हूँ तो कहता है....मनाओ जाकर उसे....तुम्हारा कहा मानेगा....
पड़े-पड़े बदन में जंग भी नहीं लगती है उसके ।”

“चल छबीली, देखूँ जरा छैले को....” बोला चिकोरा ।

चिकोरा चमकी की दिलफरेब आदाओं से मोहित हो उठा था और हो उठा था घायल उसके, नयनों की कटार से ।

“चलो न ?” पतली कमर पर हजार-हजार बल डालकर बोली वह ।

चिकोरा घर में घुसा । चमकी भी उसके पीछे थी ।

उधर सूरज के डूबते ही उजेला, पहाड़ी के उस-पार, विशाल गर्त में विलीन हो गया । शाम के धुँधलके ने भयानक जंगल के बीच बसे उस छोटे से गाँव को अपने अंक में भर लिया ।

दिन की रोशनी में हरे-भरे लगने वाले विशालकाय वृक्ष अँधेरे में दैत्य जैसे भयानक दिखने लगे । अजगरों और साँपों से आच्छादित जंगल की मोटी-पतली लतायें भी साँप बनकर डराने लगीं । काले आवरण के सम्पर्क से सभी चीज भयावनी हो उठी ।

धीरे-धीरे अँधेरा गाढ़ा होने लगा । आकाश में एक-दो तारों के साथ हजारों तारे चमक उठे । पश्चिमाकाश में हँसिया जैसा मायूस चाँद भी जगमग कर उठा । रात की रानी चाँदनी की चादर ओढ़े ओस के मोती लुटाती हुई बीरान बन-प्रदेश में चहलकदमी करने लगी । चटकीली चाँदनी में विस्तृत वनस्थली का वह भू-भाग बड़ा ही भला प्रतीत हो रहा था । लग रहा था, जैसे चाँदनी चाँदी का ताल-सागर बनकर चारों तरफ लहरा उठी हो ।

फूस के बने घर में घुस कर चमकी ने साँप की चर्बी की मशाल जलायी ।

घर में घुसा अँधेरा भाग गया ।

“यह रहा तुम्हारा परदेसी मेहमान !...दिन भर अजगर की तरह पसरा रहता है !” बोली चमकी आँखों के आकाश में प्यार की जलधार लेकर । वह निनिमेष देख रही थी परदेसी की आर । कितना खूबसूरत है उसका छैला ।

“अच्छा, अब चुप रह चमकी !....” बोला चिकोरा बैठते हुए—“परदेसी बाबू ! यहाँ कोई तकलीफ हो तो कहना...हम गरीब हैं खातिरदारी न हो सके तो भूल-चूक छमा कर देना... हम सँपेरे हैं न ! साँपों के साथ खेलते-खेलते साँप बन गये हैं !”

कह रहा था चिकोरा परदेसी की तरफ देखकर—

“फर्क है तो सिर्फ ढँसने और बचाने का ! साँप ढँसकर लोगों की जान लेना है और हम जहर उतार कर मौत का जिन्दगी देते हैं....चमकी मे कोई भूल हो गई हो तो गुस्ताखी माफ करना बाबू !....भोली है न....अभी-अभी महीने भर ही तो हुए हाथ पिला किये...जब से यह मेरी जिन्दगी में आई है....यह झोपड़ी चमक उठी है—क्यों चमकी !” कहते-कहते चिकोरा ने चमकी की छुई-मुई-सी काया की ओर देखा ।

“हटो जी, तुम तो बड़े वैसे हो !” तीर चलाती हुई बोली वह ।

उसके हाँठों की अरुणिमा चुराकर कपोल रक्तिम हो उठे थे । लजारो लता-सी हो गई थी वह ।

थोड़ी देर के लिए सभी चुप हो गये तो चमकी को यह शान्ति खटक गई । बोली—“छैला !”

“अरी अलबेली ! कई बार कहा तुमसे—बाबू का नाम शीतल है, शीतल !” ने कहा ।

“मैं क्या जानूँ शीतल ! जी !....मैं तो छैला ही कहूँगी...हों !” मुँह बिचकाती और हाथ चमकाती बोली वह ।

“देखो न बाबू !...किसी की नहीं मुनती हरामी !”

“उई !” चौक पड़ा शीतल ।

उसकी दृष्टि चिकोरा के हाथ पर पड़ी थी । उसके हाथ में साँप लिपटा हुआ था ।

“डर गये न बाबू ! मैंने कहा न, हम सँपेरे हैं....सॉपों से खेलना तो पेशा ही है। इसका खेल देखोगे बाबू !....लो अपने हाथ में लो न—काटेगा नहीं, मंतर से बँधा है।”

शीतल ने डर से नहीं लिया सॉप को। वह करवट बदल कर लेट रहा।

‘ऐ छैला उठो !’

शीतल ने देखा—वह सॉप चमकी के हाथों में था।

‘उठो नहीं तो—लो !’ और चमकी ने सॉप सोये शीतल पर फेंक दिया।

भय में घबड़ाकर उछल पड़ा शीतल और चिकोरा के पीछे भागकर खड़ा हो गया।

उसे डर से पत्ते की तरह काँपती देखकर हँस पड़ी चमकी। बोली—“बड़े डरपाक हो बाबू !”

“इसे मना कर दो भाई चिकोरा !....मुझे भय लगता है....मैं अब यहाँ नहीं रहूँगा—मेरी तबीयत ठीक हो गई है....मैं अपने शहर जाऊँगा—हाँ !” एक ही साँस में कह गया शीतल।

वह यहाँ के लोगों का भयानक जीवन-क्रम देखकर चकित था।

उसके जाने का नाम सुनते ही चमकी की हँसी ने उदासी का जामा पहन लिया।

“अभी तो तुम्हारा घाव हँस रहा है छैला !....जल्दवाजी में काम बिगड़ जाता है....क्यों रसिया !” चमकी ने होठों पर हँसी चमकाई, अपने चेहरे पर छाई उदासी दूर करनेके लिये।

“हाँ !” चिकोरा ने कहा। स्निग्ध दृष्टि से शीतल की ओर देखा उसने—“चले जाना बाबू ! जरा राहत तो हासिल कर लो....हम तुम्हें खुद ही पहुँचा देंगे....रास्ता खतरनाक है, अजगरों

और जंगली जानवरों से भरा हुआ !....तुम अजनबी भी तो हो !....”

“इसी जंगल में एक शहरी बाबू अजगर की चपेट में आ गया था....अजगर उसे लील गया और....”

“और ?” शीतल चमकी की बात पूरी होने के पहले ही बोल उठा। आगे की घटना सुनने के लिये अत्यन्त उत्सुक हो उठा था।

जब से शीतल यहाँ आया है। उसे विचित्र-विचित्र बातें देखने-सुनने को मिल रही हैं। उसकी कुछ समझ में नहीं आता है तो अज्ञात चीजों के प्रति आश्चर्य प्रकट करके चुप रह जाता है।

“और अगर मेरे गाँव के टिकोरा ने अजगर को पकड़ न लिया होता....बड़ा हरामी है जी टिकोरा !” चमक-चमक कर कह रही थी चमकी।

“और तब क्या हुआ ?”

बीच-बीच में शीतल प्रश्न पर प्रश्न करता जा रहा था। उसे सच्ची घटना में बनावटीपन का पुट मालूम हो रहा था। वह समझ रहा था कि चमकी कहानी कहकर उसे चकमा दे रही है, उसे रोकने के लिये।

“अरे, जाने भी दो बाबू ! इसके फेर में मत पड़ो, नहीं तो इसकी बातें सुनते-सुनते हार जाओगे लेकिन पार नहीं पाओगे !” बीच ही में बोल पड़ा चिकोरा—“जरा पानी-बानी पिलाओ रानी !...है कुछ ?”

“अजगर का हलुआ और करेत का अचार है—खाओगे ?”
“हाँ-हाँ ला जो भी हां..” दिन भर का थका चिकोरा झुँझलाकर बोला।

बिजली की तेजी से चमकी ने चिकोरा के सामने सब कुछ लाकर रख दिया।

और खाने लगा चिकोरा । खाते-खाते ही बोला—“बाबू को भी दे दे !”

“नहीं-नहीं, मैं यह सब नहीं खाता !” शीतल तेजी से बोल उठा ।

“साँप से डरने वाला अजगर खायेगा भला ?....क्या अन-होनी बोलते हो छबीले !....इसे तो जंगली बेर और शरीफा ही ला दो !” बोली चमकी और चिकोरा की बगल में आकर खड़ी हो गई । मगर देख रही थी शीतल के सौन्दर्य को और शीतल कर रही थी अपनी आँखें ।

“मैना का परदेसी कितना भला था जी !....जो खाने को दे दो वह चट कर जाय...पूरा सँपेरा बन गया था वह तो....”

“चुप भी रह चमकी !....वह तो सब कुछ भूल बैठा था बेचारा....उसे तो अपना घर-बार नाम-पता भी नहीं मालूम था !” कहते हुए हाथ में साँप उठा लिया चिकोरा ने और खड़ा हो गया—“मैं तो चला रानी !...जरा शीतल बाबू को गाँव की हवा खिला देना !” कहता हुआ तेजी से बाहर निकल गया ।

चिकोरा !

शीतल और चमकी !—और कोई नहीं ।

“छैला !”

कोयल कूकी किन्तु खामोश रहा शीतल !

और वह बोला नहीं तो तड़प उठी चमकी । खामोशी की चोट सहन नहीं कर सकी ।

“मेरे भोले परदेसी !....नाराज हो गये तुम ?” चमकी के गले में करुणा आ बैठी—“दिल दुख गया हो तो बोलो, मैं नहीं बोलूँगी !” कहती हुई चमकी शीतल के पैरों पर गिर पड़ी ।

आँखों से मोती-सी बूँदें ढुलक पड़ीं ।

मशाल की लौ पर पतिंगे मर मिटे ।

“इधर देखो मेरे छैला !...अपनी चमकी को देखो तो सही...कुछ तो खबर लो बाबू !” उसने अपना सर शीतल के कदमों पर पटक दिया ।

गाँव की गोरी, शहरी छैला के पैरों की धूल बनकर भूल गई सब कुछ—तब ?

पिघल पड़ा शीतल । आदिस्ते से शीतल ने चमकी के चाँद-से मुख को ऊपर उठाया ।

चाँद आँगुओं से भीग रहा था ।

चमकी की वेबसी पर शीतल व्याकुल हो उठा । उसका दिल भी बह चला आँसुओं की धार में ।

नारी के आँसू में जमाने को बहाने की ताकत होती है । उसकी बाँहों में पत्थर को भी मोम बना देने की शक्ति होती है । और शीतल तो एक इन्सान था अपने को रोक नहीं पाया ।

चमकी के एहसान भी तो कम नहीं उस पर । उसके पति चिकोरा ने ही तो उसकी जान बचाई थी । नहीं तो उस खूँखवार शेर ने दुनिया से उसका नामोनिशान ही मिटा दिया होता उस दिन !

“चमकी !”

“छैला !” शीतल की शीतल स्वर-लहरी सुनकर हर्ष से गद्गद हो कूक पड़ी चमकी । उसके गालों पर लेटी आँगुओं की रेखा हँस पड़ी । आँखों का सावन-भादों बसन्त बनकर भूम उठा ।

“मुझे माफ़ कर दो रसिया !...सचमुच तुम बड़े बेदर्द हो !...दिल्ली का बुरा नहीं माना करते...अब नहीं मानोगे न ?...बोलो, मेरे छलिया !”

“कभी नहीं !” छोटा-सा उत्तर दिया शीतल ने मुसकाकर ।

“तुम चले जाओगे छैला !...जाना नहीं....नहीं तो सच मानो,

अपना सर पटककर चूर कर लूँगी...” उसकी आवाज फिर गीली हो उठी थी, बरसाती हवा की तरह ।

“अभी तो नहीं ही जा रहा हूँ...जाऊँगा तो तुम्हें भी ले चलूँगा...चलोगी न ?”

“तुम कहो और मैं ना कर दूँ...भला ऐसा कभी हो सकता है ?” खुशी से उछल-सी पड़ी चमकी ।

मन ही मन वह शहर के सपने देखने लगी ।

बोली—“शहर मे ता बहुत अच्छी-अच्छी चीजें हांती होंगी बाबू !.. मैना का परदेसा भी ता वहीं रहना है...शैतान टिकारा भी वहीं गया है उसके पीछे साँप लेकर....भून जैसा है ही टिकोरा ! अगर रात को देख लो ता नींद न आये, मुव्ह देख लो तो खाना भी न नसीब हा...” एक ही साँस में कह गई चमकी ।

“टिकोरा, मैना, परदेसी...ये सब कौन हैं ? क्या मतलब है तुम्हारा चमकी !” प्रश्नभरी दृष्टि शीतल ने चमकी पर डाली ।

“देखा जी ! मेरा नाम न लिया करा....नहीं तो मैं कुछ नहीं बताऊँगी—हाँ !” शास्त्री से बोली वह । उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें विचित्र तरीके से नाच-नाच कर रस उड़ेलने लगीं ।

“तो क्या कहूँ तुम्हें ?”

“मै क्या जानूँ ?”

“राना !”

चमकी ने दोनों हाथों से अपना मुँह ढँक लिया ।

“अब तो हो खुश ?”

स्वीकारात्मक ढंग से सर हिला दिया उसने अपने मुँह छिपाये ही फिर लेट गई शीतल की गोद में सर रखकर ।

“अब बताओ न ?” शीतल उत्सुक था ।

“चुप भी रहो छैला !...कई रात सो नहीं पायी तुम्हारे

कारण....पीछे बता दूँगी, अभी तो सो लेने दो..." और वह आँखों पर पलकों की चादर ढँके पड़ी रही।

दोनों चुप हुए तो वातावरण भी शान्त हो गया।

मशाल भभकती रही। परवाने जलते रहे और सोती रही चमकी। साथ ही साथ शीतल की व्यग्रता बढ़ती रही। उसके दिमाग में टिकोरा, मैना और परदेसी नाच रहे थे!

इन्हीं प्रश्नों में उलझ गया था वह और हल खोज रहा था। हार गया तो चमकी की तरफ देखने लगा।

उसके सौन्दर्य को अस्त-व्यस्त देख आवाक् रह गया शीतल।

साँप के चमड़े की चोली, कमर में अजगर की खाल का एक लेंहगा और उस पर मोर पंख की छटा। इसके सिवा शरीर का सारा भाग खुला। अर्द्ध-नग्न सौन्दर्य अपनी मादकता बिखेर रहा था। मशाल के काँपते प्रकाश में काली-काली लटों के बीच उसका मुखड़ा चाँद जैसा चमक रहा था। पतले-पतले मासूम होठों पर मुस्कान की एक रेखा खिच गई थी। आँखों के इशारे—जो वक्त-बेवक्त तीर बनकर शीतल के कलेजे को चाक कर दिया करते थे, पलकों की ओट में कैद थे।

शीतल देख रहा था सौन्दर्य की प्रतिमा को, अपलक।

उसकी गोद में सोलह साल की अलस जवानी, बेखबर नींद की चादर ताने खामोश पड़ी थी।

सो रही थी चमकी। उसके अवयवों को मशाल की रोशनी संगमर्मर की चमक प्रदान कर रही थी।

तभी—

ढोलक, नगाड़े और महुवर का सम्मिलित स्वर आया।

बाजे की मधुर ध्वनि जब शीतल के कानों के पर्दे से टकरायी

तो विभोर हो उठा वह । दीन दुनिया की सुध बिसरा कर मधुर स्वर को कानों से पीने लगा ।

उसकी उँगलियाँ चमकी के चमकीले बालों से खेलने लगीं ।

धीरे-धीरे मधुर आवाज पर यौवन का उन्माद छाने लगा । साथ ही साथ शीतल की उँगलियों का कम्पन भी जवान होने लगा ।

शीतल के स्पर्श से सजग हो उठी चमकी और विह्वल भी । पल भर के लिये पलकों के पट खुले फिर बन्द हो गये ।

उसने सोये-सोये ही एक घातक अँगड़ाई ली और शीतल के आगोश में ही पड़ी रही । उसका वक्ष, जिसमें लाखों अरमान और हजारों धड़कने कैद थीं, शीतल के कलेजे से भिड़ गया ।

दो दिलों की धड़कने आपस में कहा-सुनी करने लगीं ।

शीतल अवश-सा हो उठा । खुले आकाश के नीचे रहकर भला कौन सूरज की रोशनी, चाँद की चाँदनी और बरसात की बूँदों से बच सकता है उसने चमकी के शरीर को बाँहों में भर लिया ।

“दैया रे !...सोने भी दो छैला !...ऐसा दबाते हो कि हड्डी-पसली—हाय राम !...एक हो गई । ऐमे तो अजगर भी नहीं दबाता होगा...” निद्रालु स्वर था चमकी का ।

“चमकी !” शीतल का लड़खड़ाया स्वर था ।

“आं-हाँ !...रानी कहो जी, कितनी बार तो कहा...कहो न, क्या कहते हो ?”

दो दिल मिलकर दूध-पानी हाँ गये थे । जवान दिलों की आग धधक रही थी और उठ रही थी प्रणय की लपटें ।

खौफनाक जंगल के एक गाँव में सौन्दर्य की एक प्रतिमा को देखकर शीतल का मन चलायमान हो गया था । आज सात दिन ही तो हुये हैं इसे यहाँ आये, मगर उसे लगता था कि जैसे वह

युगों से बहो हें और हजारों साल से उनकी मुहब्बत है। दो ही दिनों में वे हिल-मिल गये थे।

शीतल बैठा-बैठा जंगल के बीते दिनों की याद ताजा करने लगा।

चिकोरा !

उसके जंगल के इतिहास का प्रथम पृष्ठ चिकोरा ही था। उसकी ही वजह से यहाँ आ सका था वह।

चिकोरा का चेहरा जब शीतल की आँखों में आया तो भय-भीत हो उठा वह। बड़ी-बड़ी मूँछें, साँवला चेहरा, बड़े घुघराले बाल, डरा देने वाली खौफनाक-लाल आँखें और उसका भयानक अट्टहास !

अगर उसे 'यह' सब मालूम हो गया तो....तो वह शीतल को जिन्दा नहीं छोड़ेगा। वैसे तो उसके पास दिल है और वह उससे सहानुभूति भी रखता है। उसकी जान बचायी है उसने और उसी के साथ विश्वासघात कर रहा है शीतल। उसकी पत्नी के साथ....अगर उसे मालूम हो गया तो....तो चिकोरा उसे कुचल देगा। साँपों से खेलने वाला, साँप बनकर ढँस लेगा उसे और फिर वह साँस भी नहीं ले सकेगा।

परिणाम आँखों के आगे आया तो काँप उठा उसका शरीर।

उसका बाँहु-बन्धन ढीला होने लगा। चमकी अब भी लेटी थी उसके आगोश में।

“बोलो भी !....चुप क्यों हो गये छैला !” चमकी की आवाज काँप रही थी—“तुम तो ढीले होते जा रहे हो, जैसे मंतर से बँधा साँप !”

चुप रहा शीतल, वह दूसरी दुनिया में विचरण कर रहा था।

वह बोला नहीं तो झकझोर डाला चमकी ने।

और फटका खाकर शीतल की विचार-धारा टूट गई !

“हैं !” जैसे सपने में जागकर बोल उठा वह ।

“हैं-वैं क्या ?...तुम्हीं ने तो मुझे जगाया और तुम्हीं सो गये मेरी आँखों की नींद चुरा कर....तुम्हें हो क्या जाता है बाबू !”

“घर की याद आ गई थी चमकी !...जी नहीं लग रहा है ।”

“फिर नाम...”

“अच्छा रानी ! भूल गया था मैं !”

“मेरा घर तुम्हें पसन्द नहीं ?”

“है तो !”

“तो फिर ?” कहती हुई उठकर बैठ गई वह और निहारने लगी शीतल के उदासी से धूमिल चेहरे को और निहारती ही रही, बादलों में डूबे चाँद को चकोरी की तरह ।

महुवर और ढोलक की ध्वनि अभी तक हवा की छाता चीरती हुई दूर-दूर तक फैल रही थी ।

“चलो छैला, नाच-गाना देख आयेँ...तुम्हारा जी भी बहल जायगा !” प्यार से ओत-प्रोत स्वर था चमकी का ।

“छोड़ो भी...अब सोने दो मुझे, नींद आ रही है...तुम भी सो जाओ न !”

“जब सोती हूँ तो तुम्हीं आ जाते हो सपने में...आँखें बन्द करके देखने से भला तो जगकर ही देखना अच्छा होता है...चलो न !” आकर्षक स्वर में बोली वह ।

“ऊँ हूँ !” सर हिला दिया शीतल ने ।

“बड़े ढीठ हो जी तुम !...जरा-सी बात भी नहीं मानते !” चमकी ने हठ किया—“चलो भी !”

उसने शीतल की बाँह पकड़ कर उसे खड़ा किया और खींचती हुई बाहर ले आई ।

महुवर की तान और भी सुरीली हो गई थी। नगाड़ों की धमक भी तीव्र हो उठी थी।

हंसिया जैसा चाँद पश्चिमाकाश की ढाल पर लुढ़क गया था। चाँदनी ढल रही थी।

मस्त सँपेरे नाचने-गाने में मशगूल थे। इमली का वही पुराना दरखत खड़ा था अपनी छाया लिये। सँपेरिनें पिला रही थी और सँपेरे भूम-भूम कर पी रहे थे। मर्द गा रहे थे, औरतें नाच रही थीं- छूम-छननन् !

महुवर की हर तान पर उनकी कमर हजार-हजार बल खा रही थी।

ढोलक और नगाड़े की हर ताल पर उनके पैर फुदक-फुदक चूठते थे।

विभोर हो कर नाच रही थीं सँपेरिनें ! महुवर की आवाज पर नागिन बन गई थीं वे !

चिकोरा भी पेड़ की एक जड़ से चूँग कर बैठा था। बैठा-बैठा देख रहा था और पी रहा था ! उसके गले में साँप लिपटा था, नाचनेवालीयों की दिलफरेब अदाओं को देखकर।

“वाह-वाह !...खूब !....वाह रे छबीली !....जरा और पिला.... एक कुल्हड़ और दे—हाँ !” चिल्ला उठा चिकोरा। उसके दिल का हर्ष उछल-कूद मचाता बाहर निकल आया था।

उसकी हड्डी-हड्डी शराब के नशे से भीग कर काँप रही थी। नस नस में मदहोशी छा रही थी।

“आ, आ न !” चिकोरा ने एक की ओर देखकर कहा।

“लो, आ गई राजा !”

“अरे, तू चमकी !....तू आ गई !....तू भी पिला दे—पिला

न ! अरे, परदेसी बाबू ! आओ बैठो....” शीतल पर उसकी नजर पड़ी तो उसने उसे बैठने का कहा ।

पास बैठी सॅपेरिन हट गई , जो कुछ देर पहले से चिकोरा को पिला-पिलाकर रिझा रही थी ।

चमकी की तेज निगाहों ने बातावरण का निरीक्षण किया । सभी पी-पी कर बेखबर थे । नशीली हवा का झोंका आ रहा था । इसके साथ ही उसने एक चीज और देखी—सभी की नजरों का केन्द्र-बिन्दु उसका छैला बन गया था । फटी-फटी-सी सॅपेरिन शीतल के दिलकश चेहरे को निहार रही थीं, जैसे शराब की एक घूँट बनाकर उसे भी गट्ट कर जायेंगी ।

“अच्छा अलबेले, अब तो चली मैं...”

“अरे, बैठ भी !”

“जरा तुम्हारे शीतल बाबू को हवा खिला लाऊँ....चलो जी !”

चिकोरा के कुछ बोलने के पूर्व ही शीतल का हाथ पकड़कर चमकी भाग गई, जैसे सुगन्ध का हाथ पकड़ कर पवन भाग जाता है । दोनों को अन्धकार ने अपने आगोश में छिपा लिया ।

अंधेरी पगडण्डी पर चल रहे थे दोनों । पतली पगडण्डी पर चलते-चलते कभी-कभी दोनों के शरीर आपस में टकरा जाते तो सिरहन की एक लहर उनके अवयवों में लहरा उठती ।

“ठीक से चलो चमकी !...गिर जाओगी तो चोट लग-जायेगी तुम्हें !” शीतल ने कहा ।

“लगने दो !” कहा चमकी ने ।

“गिर कर टॉग तोड़ लोगी तो पीठ पर लादकर ले जाना मुझे ही पड़ेगा !”

“बस !...घबड़ा गये इतने से ही...खैर कोई बात नहीं,

चिकोरा कहता है तू फूल है.. जरा अपनी पीठ पर लाद कर तो देखो. लगती हूँ भारी ?”

तभी शीतल चीख कर आगे कूद गया।

“क्या हुआ जी परदेसी !”

“साँप...साँप पर मेरा पाँव पड़ गया...” डरकर बोला शीतल—“कहाँ ले चल रही हो चमकी !”

साँप से भरे जंगल के अन्धेरे को देखकर शीतल का जी भय से काँप उठा था।

“डर रहे हो ? कैसे मरद हो जी तुम !”

“नहीं-नहीं !” संयत होकर बोला शीतल। उसने अपना डर छिपाने की कोशिश की।

“नहीं तो क्या, तुम्हारी आवाज़ से तो घबड़ाहट निकल रही है छैला !” वह बोली—“अच्छा आआं, इस चट्टान पर बैठें !”

दोनों एक चट्टान की छाती पर जम गये।

तारे मुस्कुरा रहे थे, चांदनी की चादर ओढ़े और दोनों चुप थे।

“वह क्या है चमकी !” नीरवता भंग करते हुए पूछा शीतल ने, एक ओर इंगित करते हुए।

“वह !... वह तो खँडहर है, पहले महल था जी, सुन्दर-सा !”

“अच्छा !” आश्चर्य फूट पड़ा शीतल के स्वर में।

“हाँ, इसी में से तो मैना अपने परदेसी के साथ शहर भाग गई...भीतर-भीतर रास्ता है, जो शहर के पास जाकर दम लेता है—एक नदी के किनारे।” कह रही थी चमकी—“मरदूद टिकोरा भी साँप लेकर पीछे-पीछे गया है मैना और परदेसी के...राम जाने क्या हुआ...टिकोरा बड़ा शैतान है बाबू, किसी कि जान लेने में तो पहलवान है...दैया रे !” चमकी की आँखों में

जब टिकोरा की खूँखवार आकृति आ गई तो स्वर और काँप उठा। उसका बदन रोमांचित हो उठा।

“क्या हुआ ?” घबड़ाई हुई चमकी को अपने से लिपटते देखकर शीतल ने पूछा।

“हुआ क्या !” संयत होकर बोली चमकी—“सब कुछ तो हो गया और तुम्हें जैसे कुछ मालूम ही नहीं।” कहकर हँसने लगी वह। होठों का दरवाजा खुल गया तो हल्की-हल्की चाँदनी में चमकी के मुँह के चमकीले तारे झिलमिला उठे।

“मैं कुछ भी नहीं जानता चमकी !....चलो, अब लौट चलें—देखो, चाँद भी सोने जा रहा है !” शीतल सुनसान देखकर घबड़ा रहा था।

“मगर तारे तो जाग रहे हैं....मैं तो तारों की छड़ियों में ही रात काट दूँगी, तुम्हारे साथ !” और चमकी शीतल की गाँद में सर रखकर लेट गई। बोली—“चाँदनी तो चार दिन की ढाँती है बाबू, तारे तो हमेशा जगमग करते हैं !”

कुछ पल ठहर कर फिर बोली—“एक बात बताओ तो छैला !...यह चाँद जो है न, डूब क्यों जाता है चार ही दिन में, मगर तारे तो रात भर चमकते हैं—ऐसा क्यों ?....दोनों हैं तो एक ही आकाश पर....”

“हैं तो मगर चाँद बड़ा है और तारे छोटे....देखो न !” कहकर देखने लगा शीतल आसमान की तरफ। वह चमकी के छटपटांग प्रश्नों से झुँझला उठा था। इसीलिये उसने कहा—“चाँद जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर अपने घर चला जाता है। तारे बेचारे जा नहीं सकते और रात गुजर जाती है....लेकिन हम लोगों को अब चल देना चाहिये !”

शीतल गगन की ओर देख रहा जमीन के भयाबने वाता-

वरण से ऊबकर। एक सघन वृक्ष के पीछे चाँद ऊँघ रहा था। चमकी ने उसे ऊपर देखते देखा तो बोली—“ऊपर क्या देख रहे हो छैला ! जरा नीचे भी देखो !”

शीतल की आँखें चाँद-तारों की दुनिया से उतर कर पुनः झाड़-जंगलों में लौट आईं। बोला—“चलो घर चलें...मेरा मन घबरा रहा है बाबू ! पर जाने की इच्छा तो नहीं हो रही है....तुम्हें प्यास लगी है छैला !”

“ना !”

“भूख ?”

“चुहूँ !”

“नींद ?”

“हूँ !”

“अच्छा तो सो जाओ !”

“सो जाऊँ, कहाँ ?”

“यहाँ मेरे पास और कहाँ ?...लो, मैं तुम्हारी गोद खाली किये दे रही हूँ...मेरी गोद में सो जाओ...सोओ न !” कहती हुई चमकी ने शीतल का अपनी गोद में जबरदस्ती सुलाने की कोशिश की।

“मैं नहीं सोता !...चलो चलें...रात काफी गुजर चुकी है...” शीतल व्यग्र हाँ चठा और उसकी बेचैनी मुँहलाहट बन-कर बाहर निकल आई।

चमकी ने उसकी आवाज पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। प्यार की भूखी नारी कुछ भी नहीं समझ पाती और यही चमकी के साथ भी हुआ।

बोली वह—“भूटे कहीं के....अभी तक तो देखो, लोग नाच-गा रहे हैं !”

किन्तु शीतल अत्यधिक विकल हो उठा था। उसकी बेकरारी दायरे से बाहर हो गई थी। वह उठ कर खड़ा हो गया और चमकी को चट्टान पर से खींचा, झोट चलने के लिये। वह पतंग की नाई, फटके के साथ शीतल के कलेजे पर आ गिरी।

‘भला ऐमे भी खींचता है कोई कि...’

कहते-कहते चमकी रुक गई, जैसे बीच ही में उसकी जवान को लकवा मार गया हो। उसकी दृष्टि खँडहर की ओर चली गई थी और वहाँ जो कुछ उसने देखा उसे देखकर देखती ही रह गई। अत्यन्त भयभीत हो उठी थी चमकी।

शीतल ने भी देखा। पूछा—“यह हरी-हरी रोशनी कैसी है चमकी !...अरे, वह तो काँड़े...देखो वह तो...”

तभी चमकी ने शीतल के ओठों पर उँगली रख दी। उसने शीतल को चुप रहने को कहा और धीरे से फुसफुसा उठी—
“चलो, यहाँ से जल्दी भाग चलें...अपने घर ?”

“तुम...”

“चुप !” कहा चमकी ने और शीतल को खींचती हुई जल्दी-जल्दी ढग भरने लगी।

वह पहले अपने छैला के साथ, इमली के पेड़ के नीचे गई। जहाँ सँपेरे मस्त हो गा-बजा रहे थे।

“आओ रानी !...कहाँ उड़ गई थी हवा बनकर ?” चिकोरा था

“बताती हूँ रसिया !” और चमकी चिकोरा के कान में मुँह लगाकर कुछ कहने लगी।

“अच्छा !” विस्मित होकर बोला चिकोरा—“अभी तो उसी की बात हो रही थी !”

“मैं शीतल बाबू को लेकर घर जा रही हूँ...देखो जी उसके पास मत जाना...चमकी की कसम है तुम्हें !”

“क्या हुआ चमकी ! तुम घबरा उठी हो...कौन था यह ?”

शीतल कुछ भी समझ नहीं पा रहा था । चमकी की घबराहट देखकर आश्चर्य में डूब उतरा रहा था ।

“चुप भी रहो जी...घर पर सारी बात बता दूंगी !” चमकी ने कहा ।

शीतल ने फिर नहीं पूछा । रात्रि की नीरवता में दोनों चुपचाप चले जा रहे थे ।

उधर दोनों चले जा रहे थे और इधर चिकोरा का नशा हवा हो गया था, चमकी की बातें सुनकर । उसने सभी को एकत्र कर चमकी द्वारा कहीं बातों का दुहराया । सँपेरोँ में एक अजीब हलचल मच गई ।

“इतनी रात को....ताज्जुब की बात है !” एक बूढ़ा सँपेरा बोल उठा ।

“हाँ-हाँ, चमकी भूठ नहीं बोल सकती !” चिकोरा ने कहा ।

“चलो, देखा जाय तब !” दूसरा जवान बाला ।

“अभी चलो !” सभी एक स्वर में चिल्ला उठे ।

सँपेरोँ का गरोह खँडहर की ओर बढ़ा चकित और उत्सुक । दूर से ही लोगों ने देखा—

“वह देखा !” एक धीरे से बोल उठा ।

“हाँ-हाँ, वही है !” दूसरे ने साथ दिया ।

सभी जल्दी-जल्दी हरी रोशनी की ओर बढ़े ।

तभी—

“कौन है !....खबरदार, आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करना, नहीं तो सोंप खींच मारूँगा....परदेसी से हार गया मगर तुम लोग नहीं हरा सकते....मैं तुम लोगों का उस्ताद हूँ—समझे !” चिल्ला उठा रोशनी वाला व्यक्ति ।

उसके हाथ पर साँप की मणि चमक रही थी। गले में विकराल साँप का माला बना था। दूसरे हाथ से वह किसी युवती को अपने कन्धे पर लादकर सहारा दे रहा था।

मणि की रोशनी में उसकी भयानक आवाज के साथ-साथ उसका भयानक चेहरा भी दिखाई दे रहा था। जिस पर चिन्ता की रेखाएँ थीं और क्रोध का ताण्डव भी। चेहरे के हर शिकन पर हार की जीत साफ झलक रही थी।

“हट जाओ सामने से....छोड़ दो रास्ता....नहीं तो टिकोरा से बढ़कर कोई खतरनाक न होगा....” कहकर वह आगे बढ़ा।

सँपरे रास्ता छोड़कर हट गये। उसी में से एक साहम करके टिकोरा की बगल में आ गया। बोला—“कहाँ गये थे टिकोरा !”

“टिकोरा, हूँ !” दुहराया टिकोरा ने और उसके बढ़ते पाँव स्थिर हो गये। उसने उसकी ओर आग्नेय नेत्रों से देखा—तहजीब सीखो...मैं तुम्हारा उस्ताद हूँ...कहाँ गया था ? तुम्हें मालूम नहीं !...कौन हाँते हो तुम पूछनेवाले...बाप हो मेरे ?”

“माफ करो उस्ताद !...मैं तो केवल मैना और परदेसी के बारे में पूछना चाहता था...”

“क्यों ?” चीख पड़ा टिकोरा। परदेसी का नाम सुनकर उसकी बुझती-सी आग पुनः भड़क उठी—“जी रहा है परदेसी और मर गई है मैना !...टिकोरा हारा और परदेसी जीता, समझे !...मगर तुम अब नहीं बच सकते, नहीं जीत सकते...तुमको मैंने अपना भेद बता दिया...तुम कहते फिरोगे, टिकोरा हार गया....जा तू भी....हा-हा-हा !”

पैशाचिक अट्टहास करके टिकोरा ने गले के साँप को हाथ में ले लिया। मणि की रोशनी साँप के पेट में समा गई और तब... और तब हाथ का साँप उस पर फेंका टिकोरा ने और...”

और अन्धकार में सँपेरे के गले से एक करुण चीख निकली ।

“हा-हा-हा !” अट्टहास कर उठा टिकोरा और आगे बढ़ा ।

सभी भय से तितर-बितर हो गये ।

पागल-सा टिकोरा मैना की लाश लिये चला जा रहा था, अपने घर की ओर ।

आज टिकोरा पागल हो गया था । मैना ने उसे पागल बना दिया । मैना की मुट्बत ने उसे लूटा शहर के परदेसी ने उसे तबाह किया और लुटा-लुटा अपनी निधि खोकर वह सिर्फ मैना का बेजान शरीर लेकर चला आया था अपने गाँव ।

आशा पर इन्सान जीता रहता है, मर-मर कर जिन्दा रहना चाहता है । टिकोरा भी अपने हाहाकार करते अन्तर में एक आशा दबाये मैना को लेकर गाँव आया था । फिर उसे जिला देना चाहता था ।

उसकी चाल की तेजी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी ।

“देखा मैना !...यह तेरा घर है....मेरे उस्ताद का घर....” वहाँ रुक गया वह । घर की ओर देखते हुए बाला—“उस्ताद ! आज मैं जीत गया हूँ....टिकोरा उस्ताद बन गया है पर तुम्हारी दया से नहीं....हा-हा-हा !”

वहाँ से अट्टहास करके अपने घर आया ।

घर में घुसा । भीतर अँधेरा था । मत्त पड़ते ही सॉप ने मणि उगल दी । मणि की रोशनी से घर का अँधेरा भाग गया ।

मैना की लाश को चारपाई पर आहिस्ते से लिटा दिया उसने । बोला—“अब सो जा मैना मेरी रानी ! बहुत तड़पाया है तुमने टिकोरा को....आज यह सँपेरा तुम्हारे परदेसी से हार गया....खबरदार फिर भागने की कोशिश न करना....नहीं तो अपनी जान देकर तुम्हारी जान ले लूँगा....”

और विचित्र-सा वह भी मैना की बगल में गिर पड़ा। कलेजे से लगा लिया उसने मैना की लाश को।

साँप ने मणि अपने मुँह में रख ली। बाहर भागा अँधेरा पुनः अन्दर लौट आया।



अन्धेरा जब कमरे में हँस पड़ा तो कुँवरानी ने स्विच आन कर दिया। बिजली की नीली राशनी से सुसज्जित कमरा जगमगा उठा। आधुनिक ढंग से बने कमरे की सजावट मुस्करा उठी।

“कविता!” कुँवर अचलनारायण ने धीमी आवाज में पुकारा

“हूँ!” कुँवरानी का जवाब था यह, एक अक्षर। सर मुकाये खड़ी थी वह कुँवर की बगल में।

“हूँ क्या? ज़रा इधर तो देखो....मैंने तुम्हारा इतना बड़ा-सा नाम लेकर पुकारा और तुमने सिर्फ ‘हूँ’ भर किया।”

“तो क्या कहूँ?...आपका नाम तो ले ही नहीं सकती!” कविता का सर ऊपर उठ गया। मदभरे नयन कुँवर को देखने लगे, होठों पर मन्द-मन्द मुस्कान खेल उठी।

“मेरा नाम लेने से तुम्हारा कुछ बिगड़ जायगा?” कुँवर कुँवरानी को अपलक देख रहा था।

“नहीं तो....मगर....”

“अगर मगर क्या?” प्रश्न किया कुँवर ने। उसकी आँखें कविता के सौन्दर्य को निरख रही थीं।

“मगर यह कि हिन्दू संस्कृति में पत्नी पति का नाम नहीं

लेती....इससे पति के जीवन का ह्रास होता..." मुस्कान बिखेरती हुई बोली कविता—"पति ही तो नारी का सम्पत्ति है....भला वह अपनी दौलत को सिर्फ़ जबान हिलाकर क्योंकर गँवा दे ?....क्या आप ही अपनी इतनी प्यारी वस्तु खोना चाहेंगे, जानते हुए भी ?" प्रश्न करके उसने कुँवर की तरफ़ देखा ।

कुँवर खामोश था । टकटकी लगाये कुँवरानी के चेहरे पर छाये भोलेपन को देख रहा था । सोच रहा था—शोख नारी मासूमियत से सिमट कर कितनी रूपवती हो जाती है ।

"बोलिये न ?....चुप क्यों हो गये....अरे, आप तो इस तरह देख रहे हैं जैसे कभी देखा ही न हो—" कुँवरानी बोली—
"अपनी आँखें तो बन्द कर लीजिये !"

कहते-कहते कुँवरानी ने कुँवर के खुले नयनों पर अपनी फूत-सी हथेली का आवरण ढाल दिया ।

कुँवरानी के मादक स्पर्श से धिभोर हो उठा कुँवर । उसके दिली जख्मों पर मरहम लग गया । दिल की पीड़ा होठों पर मुस्कान बनकर थिरक उठी किन्तु चुप ही रहा वह । मौन हाँकर ही उस अलौकिक आनन्द का अनुभव करता रहा । धीरे-धीरे मदहोशी छाने लगी उस पर । मीठा-मीठा दर्द दिल में अँगड़ाई लेने लगा । और वेदना जब असह्य हो उठी तो उमने दौले से कुँवरानी के शोख हाथों को अपने काँपते हाथों में ले लिया ।

"कुँवरानी !...आँखें बन्द तो कर लूँ पर तकलीफ़ तुम्हें ही होगी...नारी का सर्वस्व पुरुष की ही आँखों में होता है और पति-पत्नी का सम्बन्ध तो....खैर ! वैसे तुम्हारी बात तो कभी टाली नहीं है..." अचल का स्वर काँप रहा था । मदहोशी जो छा गई थी उस पर ।

"आप क्या कह रहे हैं, कहना क्या चाहते हैं ?"

“वही, जो अभी-अभी तुमने कहा—अपनी आँखें तो बन्द कर लीजिये !” कुँवर ने बताया ।

“अरं, आप तो...आपने सोच क्या लिया ?...मेरा मतलब यह नहीं था...मुझे क्षमा कर दीजिये...” लपक कर कुँवरानी ने कुँवर का पैर पकड़ लिया ।

“पगली, यह क्या ?” कुँवर था ।

मगर कुँवरानी क्यों सुनने लगी ?

बोली—“ऐसा मत सोचिये...सालों बाद तो मिले हैं आप !”
कहे जा रही थी वह—“आपक वियोग में किस प्रकार कलंजा पत्थर करके जी रही थी—उफ् !...मासूम ललित को छाती से लगाकर रात-दिन की दूरी एक कर रहा थी । ललित के भोलेपन में आपकी सूरत की छाया देखती थी तो दिल में दर्द उठ खड़ा होता था...ललित को देखकर सन्तोष तो हाता मगर शान्ति नहीं मिल पाती । खिले फूल की याद को भला कोमल कली कैसे मिटा सकती है...पति और पुत्र में यही तो अन्तर होता है ।
पति जवान की सम्बल है और पुत्र बुढ़ापे का सहारा...”

कविता की आँखों में बीते दिन मचल उठे थे । हृदय की पीर नयन का नीर बन पलकों पर छा गया थी ।

उसके छलछलाये आम की फाँक जैसे नेत्रों का देख कुँवर विचलित हो उठा ।

“कविता !...पागल, मैंने तो मजाक किया था सिर्फ !” कुँवर ने कुँवरानी को खींचकर अपने वक्त से दबा लिया । उसके कपालों पर ढुलके झिलमिल मांतिर्यों में कुँवर अपनी वेदना की परछाईं देखने लगा ।

“पागल ही तो हूँ...नारी पागल तो हांती ही है...नारी पागल हांती है तो आँसू बन जाती है । दिल की सारी बेचैनी

दो बूँद पानी में बहा देती है लेकिन पुरुष ? पुरुष जब पागल होता है तो करार हासिल करने के लिये वह कोई न कोई सहारा पा ही लेता है....नारी मिटना जानती है और पुरुष मिटाना.... मैना भी नारी थी....देखा नहीं आपने ?”

हिचकियाँ लेना छोड़कर उपदेश पर उत्तर आई थी कुंवरांनी—
“निरीह मैना ! आपको जीवन वापस कर स्वयं अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठी । नारी जन्मदात्री है....और आपने मुझे गलत समझ लिया ? कितने नादान हैं आप !....कितना मतलबी होता है पुरुष !”

“अगर यों ही रोज अपनी मधुर-वाणी से मधु लुटाया करोगी तो एक न एक दिन नारी को समझ ही लूँगा !” हंसते-हंसते बोला अचल—“अब तक तो नारी को आँसू से भीगा-भीगा ही पाया है मैंने....जरा अपने हसीन चेहरे को आइने के सामने रखकर तो देखो....आँसू बन गई हो एकदम !”

“नारी परिस्थिति के साथ अपने आप को बदलती है.... सहारा पाकर वह जलधार बन जाती है ताकि सम्बल देने वाले को तकलीफ न हो, प्यासा न रह जाय बेचारा !...बेबस नारी जब जमाने की गदिश अथवा मुकद्दर के हाथों पीस दी जाती है तो वह ब्यालामुखी बन जाती है, अन्तर की ज्वाला को आँखों का बादल बना लेती है...” कहा कविता ने ।

“ओह !” आश्चर्य में भर कर बोला कुँवर—“तब तो नारी रंग बदलने में गिरगिट से कम नहीं ?”

“बात का मजाक में उड़ाने की कोशिश न करें कुँवर साहब !—सुनिये !”

“मैं दिलगी नहीं करता, दिल-लगी करता हूँ !” बोला कुँवर । उसने कुँवरानी को अपने अंक में भर लिया—“अब बस भी

करो। नारी के विषय में काफी वकालत हो गई और कहोगी तो बयान भूल जाऊंगा—सच, अभी नादान हूँ न—क्यों ?”

“क्यों, क्या ?...भूठ थोड़े ही, आप से तो कम ही भोला है मेरा ललित !”

“हमारा भी कहो कविता, ललित तुम्हारा ही नहीं....उसके निर्माण में अपना हाथ भी कम नहीं था !” शरारत से हँसकर कहा कुँवर ने।

“वही सही...मगर आप तो...बड़े वैसे हैं आप, शर्म भी नहीं आती बोलते हुए !” कविता कुँवर की बात सुनकर लान हो उठी थी, सबेरे की उषा की भाँति।

“जरा इधर देखो !”

कुँवरानी का रक्तिम-सौंदर्य अचल के सम्मुख आ गया। और तब—

“बड़े शरीर हैं आप....” वह थी।

“और तुम बड़ी शाख !” वह था।

बिजली के प्रकाश में जब कुँवरानी का दिलफरेब, हसीन चाँद-सा चेहरा ऊपर उठा तो उस पर शर्म की गांधूलि छाई हुई थी।

ऐसे ही रात बीत गई। सबेरा आया, बिल्कुल नया सबेरा। आज राज महल में चारों ओर खुशी खिलखिला रही थी। कोई जहन मनाया जाने वाला था।

“बहूरानी !” किसी ने बाहर से पुकारा।

कविता अचल के आलिंगन से बिछुड़कर अलग बैठ गई। अपनी अस्त-व्यस्त भावभंगी को संयत किया।

“तुम लोग चुप बैठे हो ?” कहती हुई रानी साहिबा ने वहाँ प्रवेश किया। कविता उठकर खड़ी हो गई—“कैसी तबियत है रे

अचल !...ठीक तो है न ?” कहती हुई वे कुँवर के पास आ गईं ।
बोलीं—“बहू ! जरा देख तां बाहर लोग क्या कर रहे हैं ?”

कुँवरानी चली गई तो रानी साहिबा अचल के पास आकर खड़ी हो गई । और इधर-उधर की बातें करने लगीं । बात ही बात में बीते दिन जाग उठे । रानी साहिबा ने अचल को कोसा तो—

“मुझे क्षमा कर दीजिये माता जी !...जो कुछ हुआ मेरी असावधानी से...चञ्चल का इसमें क्या कसूर, वह तो नादान है अभी...” कहा कुँवर ने ।

“जो कुछ होना था वह हो चुका । अब तो सावधानी बरत !...”
रानी साहिबा बोलीं—“तुझसे तो कहीं अच्छी मेरी बहू हैं....”

“तभी तो मेरे लिए ला दिया है आपने—क्यों कविता !”
कुँवर ने कुँवरानी की तरफ देखा ।

कविता बाहर से लौट आयी थी । सुनकर भौंप गई वह ।

बोलीं—“माताजी ! वारिस शहर जा रहा है...उसे रुपये दे दीजिये....”

सकुर्ची-सिमटी खड़ी थी बेचारी कुँवरानी । कुँवर की आँखों से उसकी आँखें टकराईं तां भिन्न-सी गई ।

“ललित आपके कमरे में है माता जी !” भिन्न मिटाने के लिए बोली कुँवरानी ।

“हाँ ! जा-जा उसे नये-नये कपड़े पहना दे !...आज उसके बाप का जन्म-दिन है न, जरा वह भी देखे....कितना भाग्यवान है ललित मेरा कि अपने बाप को भी जन्म लेते देख लिया उसने !”
बोलीं रानी साहिबा ।

कुँवरानी जाने लगी तां रोक लिया उन्होंने ।

बोलीं—“ले यह ताली और रुपया निकाल कर वारिस को दे दे !”

ताली लेकर कविता नौ-दो ग्यारह हो गई और कुँवर छः-पाँच में ही रह गया ।

“बैठिये न माता जी !....आप खड़ी क्यों हैं ?”

“अब तो ठीक हूँ रे अचल ! नहीं तो दिल मेरा बैठ ही चुका था...’ बैठती हुई बोलीं रानी साहिबा—“उस दिन लाख मना किया, लेकिन शिकार को चले ही गये तुम ?....तुम्हारा भी क्या कसूर था । यह भगवान की मरजी थी और चञ्चल की चाल...होनी थी सो हो के रही...बड़ा शैतान निकला यह चञ्चल !”

कहते-कहते रानी साहिबा के अन्तर की कसक गले तक आकर काँप उठी, जिसे कुँवर ने अच्छी तरह लक्ष्य किया पर बोला नहीं कुछ ।

माँ-बेटे में बातें होती रहीं ।

वर्षों का बिछुड़ा बेटा !...जिसे लोग मरा समझ बैठे थे—आज मर कर भी जीवन लिये वापस लौट आया था । बूढ़ा माँ की खुशी आकाश चूम रही थी । रानी साहिबा का आँखें ज्योति से जगमगा उठी थीं । उनके चेहरे की झुर्रियाँ बिहँस रही थीं । और—

कुँवरानी !

उसे ता जैसे जिन्दगी मिल गई थी । उसका वैधव्य आज सुहाग से रंगीन हो गया था । वर्षों का खाली माँग सिन्दूर की लाली से भर उठी थी । कुँवर को देखकर उसके अवयवों में एक अजीब जीवन समा गया था । उसकी हर हरकत से, उसके दिल की खुशी भाँक रही थी । आज उसके दिली रेगिस्तान में सागर की लहरें करवट ले रही थी । झालों से सूखे पेड़ का ठूँठ लहलहा उठा था । चाँद को चाँदनी, फूलों की खुशबू, कोयल की कूक और बुल-बुल की चहक, आज सभी कुछ उसे भला लग रहा था ।

राजमहल लाल-पीले और नीले-हरे कागजों से शोभायमान हो उठा था। हर तरफ से फूलों की भीनी-भीनी, मदहोश कर देने वाली खुशबू उड़-उड़कर बिखर रही थी।

शाम का सबेरा हुआ। दिन भर का सजाया महल बिजली के लट्ठूओं से जगमग कर हँस पड़ा। लगा कि चाँद-सितारों की दुनिया भूलोक पर उतर पड़ी हो। बिजली के छोटे-छोटे रंग-बिरंगे बल्ब लग रहे थे जैसे तारे तोड़कर छींट दिये गये हों। चहार-दीवारी, पेड़ और फौवारों के किनारे राशनी से खिल रहे थे।

कुँवरानी ललित को गोद में लिये देख रही थी वह हसीन मंजर। आज उसके शरीर पर रेशम के कीमती वस्त्र थे। हाथों में सोने की चूड़ियाँ चमक रही थीं। आज सुहागिन जो हो गयी थी वह तो क्यों नहीं दुलहन बने !

कुँवरानी का हृदय हर्ष से गद्गद हो उठा था। लग रहा था उसे कि उसकी शादी ही हो रही है। सजावट निखरती हुई आहिस्ता-आहिस्ता कुँवर के पास आई वह और धीमे-से बैठ गई। देखा—

कुँवर दुल्हा बनकर बैठा था।

चाँद पर के बादल हट चुके थे।

मुस्कराते-मुस्कराते कुँवर ने कविता को देखा और फिर उसकी गोद में सिमटे ललित को। चाँद की गोद में तारे को उसने पहली बार देखा था जीवन में और वह भी ज़मीन पर।

“आ बेता, मेला ललित...लफली का घोला लेगा ?” दोनों हाथ फैलाकर कहा कुँवर ने तुतलाने का अभिनय करते हुये।

ललित ने उत्तर में माँ की ओर देखा। मासूम चेहरे पर एक सौम्य भाव था।

“जा...जा न !” कविता ने ललित से कहा।

माँ की ममता छोड़कर नादान ललित पिता के प्यार में चला आया। कुँवर ने ज़ारों से उसे अपने कलेजे से लगा लिया। पिता के हृदय की खुशी आँखों में बादल बनकर उमड़ आयी। स्नेह-बिन्दु कपोलों पर लोट पड़े। आँसू की धार से पिता वर्षों की जुदाई को धोने लगा और पुत्र!—नादान बेटा! वह चुपचाप रहा। भला वह अबोध क्या जाने आँसू की कहानी।

कुँवर रो रहा था और देख रहा था।

बाहर खुशी के बाजे बज उठे। मधुर आवाज से वातावरण गुंजरित हो उठा।

“माँ!....बाजा!” ललित बाजा सुनने के लिये मचल उठा।

“चलो, मैं तुम्हें दिखाऊँ बाजा।” कुँवर कहते हुए उठ खड़ा हुआ।

कुँवरानी भी उठ पड़ी।

बाहर लाखों की भीड़ उमड़ पड़ी थी अपने राजा को देखने के लिये और उस भीड़ के सागर को रोकने के लिये वफादार वारिस अपनी लम्बी-चौड़ी काया लिये बाँध बनकर खड़ा था, सदरगेट पर। वह लोगों को समझा रहा था और खातिर के साथ रास्ता बता रहा था मेहमानखाने का।

“क्यों भाई तुम्हारा मालिक अजगर के पेट से निकल आया....अनहोनी हो गई!”

“वही होता है जो मंजूर खुदा होता है...यह तो खुदा की मिहरबानी है....कज्जाकेअजल का शिकार होकर भी हमारे आका सही-सलामत वापिस आ गये...जरा-सी खरोंच नहीं आई!” हँसते हुए बोला वारिस।

“भारने वाले से बड़ा बचाने वाला होता है भैया!”

“खुदा की कसम तुमने बजा फरमाया!” वारिस ने अपनी

निगाहे आसमान की ओर उठाई। जैसे अल्लाह का दुआ फरमा रहा हो वह।

धीरे-धीरे रात काली हो चली। खुशी रात के बारह-एक बजे तक हँसती रही। सभी अपने राजा के दर्शन कर वापस लौट गये। रानी साहिबा ने मुक्त-हस्त दान दिया कंगालों को।

रानी साहिबा, कुँवर और कुँवरानी को आशीर्वाद देकर चल पड़ीं अपने महल की ओर।

इससे पहिले कि वे सोने जाँय, वे तीनों महल का निरीक्षण करने लगीं। पहले टहलतो हुई फाटक पर आई। वारिस हाथ में बंदूक लिये होशियार खड़ा था।

“अरे, तू अभी तक यहीं खड़ा है...खाना खाया या नहीं...जा आराम कर ले मुल्सन इन्तेजार करती होगी....”

“आपकी मेहरबानी ही वारिस का पेट भरने के लिये काफी है रानी माँ !....खुदा कसम ! आज तो कुँवर साहब ने मिठाई खिला दी...हुजूर, फिकर न करें गुलशन अपने चुनमुन के साथ हँसती-खेलती होगी...”

रानी साहिबा पलटकर चंचल के महल की तरफ चल पड़ीं। वारिस भी साथ हो लिया। चंचल आधी रात तक जग रहा था। पास गई वे। चंचल, कुँवर की तस्वीर देख रहा था। फूलों की माला थी फांटों पर।

“अब आई है अकल !”

“अकलमन्द भैया जो आ गये माँ !....अब तुम्हारा चंचल समझदारी का दुम बन गया है !” हँसते हुए बोला चंचल।

“समझदारी के दुम साहब ! खानदान के रीति-रिवाज का भी खयाल है कुछ ?...जा पहले बड़े कुँवर का पैर छू आ !...”

“वह तो पहले कर चुका माँ !”

“क्या कह रहा था अपने भैया की तस्वीर से ?” पूछा रानी माँ ने ।

“कह रहा था—अब मैं सुधर गया हूँ भैया !” अभिनय करते हुए कहने लगा चंचल—“माँ से कह देना....मेरे शरीर में इतने कोड़े लगवा चुकी हैं...इतने कोड़े लगवा चुकी हैं कि अब कोई जगह ऐसी बाकी नहीं रह गई है...जहाँ वे अपना गुस्सा उबार सकें—बस !”

“शैतान !” वाली हँसकर रानी साहिबा और उन्होंने चंचल की पीठ पर एक चपत जमाई—“अरे चंचल, तेरी ओ बिजली—क्या नाम है उसका—अभी !....हाँ ठीक यही नाम है !....उसे नहीं बुलाया तू ने....दिखायी नहीं पड़ी ?”

“अनी नहीं माँ एनी !....वह बड़ी बदमाश है....उससे मैंने अपना सम्बन्ध कट ऑफ कर लिया है !” और हँस पड़ा चंचल ।

“शट अप !” रानी साहिबा बिगड़ पड़ी । एक-ब-एक अंग्रेजी का वह मुना शब्द कह गई वे ।

“वाह, मेरी माँ !....ता यह गिटपिट I mean english...आप बोलना जान गई....तब तो एनी से खूब पटेगी...मैं आज ही, अभी निमंत्रण लेकर जाऊंगा उसके पास !” खुशी से वह अपनी माँ से लिपट गया ।

“तो जा न...उसे अब मैं यहीं रखूंगी !”

“सच !” विस्मित होकर बोला वह—“अभी गया !” कहकर अपना सूट बदलने लगा चंचल । तभी उसकी दृष्टि बल्ब पर पड़ी उसे ख्याल आया कि रात है, दिन नहीं ।

“I am very sorry माता जी !....रात है यह तो...” कपड़ा पहनते-पहनते रुक गया चंचल ।

रानी साहिबा अपने नटखट बेटे चंचल की चंचलता देखकर

आज ही खुलकर हंसी। उन्हें प्रसन्नता थी कि उनका आवारा बेटा सुधर गया है। भला पीतल को सांभा होता देख, किसे खुशी नहीं होगी ?

“अब तो कल ही जा सकूंगा।”

“तूने तो कहा—आज ही !” रानी साहिबा मुस्करा रही थीं।

“जोश में आ गया था—excuse me...”

“चुप रह ज्यादा अंग्रेजी मत बक....कल जरूर बुला लाना !”

“Sure ! sure !”

“फिर वही अंग्रेजी ?”

“तुम भी तो बोलती हो माँ !...यह बात जरूर है कि कच्ची हो अमी....”

“चुप रह छोकरे ! ज्यादा बक-बक मत कर...अचल का दिमाग ठीक हं गया तो अपने को पागल मत कर ले !...” कहते हुए एक हल्की चपत से रानी साहिबा ने चंचल का प्यार किया।

“Oh it is quite impossiable...Good night माँ !”

बाहर जाती हुई माँ से बोला चंचल और अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया।

माँ-बेटे सलभकर अलग हं गये और इधर—

पति-पत्नी का संवाद आरम्भ हुआ।

“सो गया ललित...कितना भोला लगता है शैतान !” कुंवर अचल नारायण बोले ललित के कोमल बालों को सहलाते हुए।

“अपने बाप की ही तरह है !” कविता थी।

“अपनी माँ की तरह नहीं ?”

“इसकी माँ इतनी भोली नहीं, बाप तो दुश्मन को भी दोस्त बना बैठता है....मैंने काँटों को फूल तो कभी नहीं समझा....सच आप बड़े भोले हैं...हैं न ?”

“जमाने की शोखी तो तुमने चुरा ली है....मेरे हाथ तो बेचारा भोलापन ही लग सका। अगर रश्क हो रहा हो तो बदल लो, मेरा सब कुछ तुम्हारा हो है...”

“अच्छा, अब सो जाइये....रात काफी खिसक चुकी है....”
 अँगड़ाई लेती हुई बोली कुंवरांनी। उसकी कमल जैसी आँखें झप चली थीं।

“चाँदनी के साए में नींद कहाँ कविता !....वहाँ तो सपने ही जागा करते हैं...” कुंवर कुंवरांनी की रनींदी आँखों में आँखें डालते हुए बोला।

“बिजली की रोशनी को चाँदनी कहते हैं; फिर आपका दिमाग उठा-बैठी करने लगा !....बुलाऊं डाक्टर साहब को !”

बातचीत का सिलसिला जारी रहने के कारण कुंवरांनी की नींद भाग गई।

“जाने भी दो, तुम्हीं किस डाक्टर से कम हो ?” अचल था—“तुम चाँदनी से अधिक प्रिय हो मुझे, चाँदनी से अधिक तुममें शीतलता है।”

सुनकर कुंवरांनी मुस्कराई और मुस्करा कर तिरछे-तिरछे देखा अचल की ओर। जिन नयनों में अभी-अभी नींद के बादल छा रहे थे, वहीं इशारे की बिजली चमक पड़ी थी। तीर की चोट से घायल हो उठा कुंवर।

थोड़ी देर तक खामोशी रही। दोनों के चेहरे पर दिली-भाव उग-मिट रहे थे।

“क्या सोच रही हो कविता !” निस्तब्धता भंग करते हुए अचल ने कहा।

“कितना भयानक था वह टिकोरा ! और....और मैना कितनी मासूम थी बेचारी !” एक ठण्डी साँस खींचकर बोली वह—“वह

त्यागमयी प्रेम की प्रतिमा ! कितना प्यार करती थी आपको....” दीवानी बन गई थी आपके पीछे । दुनिया का हर खुशी, दिल का करार, सभी कुछ आप पर कुर्बान कर चुकी थी । वह !.. वह प्यार की भूखी थी, अधिकार नहीं चाहती थी....” कहते-कहते रुक गई कुंवरांनी । थोड़ा रुक कर फिर कहने लगी—“अपना जीवन खोकर उसने आपको जिन्दगी दी और आप....आप सब कुछ पाकर भूल ही बैठे उसे !”

“मेरी समझ में कुछ नहीं आता कविता !...लगता है, जैसे यह सब मनगढ़न्त कहानी है । अजगर की चपेट में आते ही मैं होशोहवास खो बैठा था और जब बेहोशी दूर हुई तो तुम्हारे समीप पाया अपने को ...आँखें खुलीं तो टिकोरा और मैना को देखकर जान भी न सका कि वे किस देश के हैं...इसम भला मेरा क्या कसूर ?....अभी-अभी की घटना को तुम—तुम क्या सभी कह रहे हैं कि साल भर गुजर चुका है....”

अचल कुछ भी नहीं समझ पा रहा था । आखिर यह सब क्या हो रहा है ? कब उसने मैना को चाहा, क्यों टिकोरा उसका दुश्मन बन बैठा और क्या-क्या हो गया ? जब यह सब याद करते-करते भी कुछ स्मृति बटोर नहीं पाता तो कविता का आँचल थाम लेता, भूली हुई स्मृति को हवा करने के लिये, अपनी कहानी उसके मुख में सुनने के लिये ।

जब कुंवरांनी उसके हठ पर सुनाने लगती तो वह सुन-सुन कर विस्मित होने के सिवा और कुछ नहीं कर पाता ।

“कविता !”

“.....” पर बोली नहीं कुछ वह ।

कुंवरांनी की आँखों में मैना की मनोरम छाया नाच रही

थी। उसके अमर-त्याग के विषय में सोच-सोचकर विचलित हो उठी थी वह।

अनजाने में ही उसके नयनों से नीर बह चले। दिल की वेदना आँखों में नदी बनकर सपाट गालों के मैदानी भाग पर बह चली।

“कविता !...तुम रो रही हो...तुम्हारे साथ इतने दिन गुजर गये किन्तु तुम्हें रोते तो नहीं देखा था कभी—आज यह क्यों ?” कुँवर का स्वर आर्द्र था—“आँखों से बिजली गिरने के बदले यह कैसा रस उड़ेल रही हो आज ?...कविता ! तुम्हें अब तक नहीं समझा मैंने....अपने अन्तर की ज्वाला दिखाओ मुझे, मैं तुम्हारा पति हूँ....”

“आप से कुछ भी तो नहीं छिपाया है अब तक !” कविता ने साड़ी के छार से बहते आँसुओं को पोंछा; फिर बोली—“पत्नी पति का अधिकार और अपना कर्तव्य जानती है...और....”

“और कुछ नहीं...पहले इन आँसुओं की कहानी तो कहो.... क्यों टूट पड़े ये तारे आँखों के आकाश से ?”

“आँसू तो वेबफा होते हैं....इनकी कहानी क्या ?...गुजरे जमाने की याद आते ही ये घर छोड़कर भाग निकलते हैं और सारा राज फाश कर देते हैं...” चेहरे पर हँसी छा गई। मुस्कान की एक रेखा होठों पर लेट गई कुँवरानी के।

“हँसो की एक रेखा गम के हजारों रेखाओं को नहीं काट सकती...कुछ छिपाने की कोशिश मत करो साफ-साफ कहाँ, क्यों रो पड़ी तुम ?”

“तो सुन ही लीजिये !” कहने लगी कविता—“मैना ने मेरे सुहाग को अमर किया, मेरे जीवन-दीप को जलाया, मेरे सुनसान हृदय को आबाद कर दिया उसने मगर उसे क्या मिला, उफ् !.... वह देवी थी। अपना सब कुछ लुटा कर उसने मुझे दे दिया और

बिना प्रतिदान पाये चली गई...उसके एहसानों का बदला किस प्रकार चुका सकूंगी मैं ? वह देवी..." कहते-कहते भी कह नहीं सकी कुंवरांनी । उसके गले में करुणा मचल पड़ी ।

"टिकोरा !!" टिकोरा को याद कर काँप उठी वह । जैसे उसे साँप सूँघ गया हो ।

"जाने दो कविता, बीते दिन की स्मृति शूल होती है..." कुंवर ने कविता का हाथ अपने हाथों में ले लिया ।

लेकिन वह कहती ही गई—"मैं उस देवी का चरण भी नहीं छू सकी और टिकोरा मौत बनकर ले भागा उसे—पता नहीं कहाँ ?...कितना जालिम था वह शैतान !"

"टिकोरा कौन था मैना का ?" कुंवर ने पूछा ।

"वह !...वह मैना के गाँव का ही था । मैना को चाहता था किन्तु मैना तुम्हें चाहती थी....इसलिये टिकोरा तुम्हारी जान का भूखा हो गया था । उसी ने तुम्हें अजगर के पेट से निकाला था । और तुम्हें मारने के लिए साँप भी उसी ने छोड़ा था !"

"जाते वक्त कितना गम्भीर था वह कविता !...उसके चेहरे पर दुःख के चिह्न उभरे थे....उसके हाथ का साँप भी तो कम खतरनाक नहीं था...."

"उसी साँप ने तो काटा था आपको..."

"उफ् !...आखिर क्यों ?"

"वह मैना को हासिल करना चाहता था....चाहे जैसे भी और वह उसे मिल गई...मैना की लाश से ही सन्तोष कर लिया उसने...वह तुम्हारे पास खाली पिंजड़ा भी नहीं देखना चाहता था....ओह ! उसकी यह आवाज़—परदेसी बाबू ! आज तुम्हारे

दरवाजे से हार कर जा रहा हूँ...मैना मेरी है....तुम इसे नहीं पा सकते—कितनी थी हड़ता उसके स्वर में। सचमुच आप मैना को नहीं पा सके, पा नहीं सकते आप...”

मैना !

त्याग की अमर मूर्ति ! आज कुँवरानी के समक्ष नहीं थी, किन्तु उसकी याद तो थी ही। कुँवरानी उसके प्रेम का वह निर्भय बलिदान देखकर अपने आपको धिक्कारने लगी। वह नारी है और मैना भी एक नारी ही थी लेकिन कितनी दूरी थी दोनों में। पत्नी बनकर भी कुँवरानी मैना के स्थान पर नहीं पहुँच सकी।

कुँवरानी और मैना !

जमीन और आसमान !

साधारण नारी और स्वर्ग की देवी !

सोचकर विचलित हो उठी कविता। वह लेट गई विस्तर पर कुँवर की बगल ही में। रात के तीन बज चुके थे। मैना को याद करती-करती सो गई कुँवरानी।

लेटे-लेटे धरदान देने वाली देवी की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करने लगी वह, भगवान से।

“कविता !”

“हूँ !” सो नहीं सकी थी वह। आँखें मूँदे पड़ी थी केवल।

“अब सो जाओ ...जां हो गया सो हो गया।” कहकर कुँवर ने ‘वेडस्वीच’ ऑफ कर दिया। कमरे में अन्धेरा हँस पड़ा।

कुँवर करवट बदल कर सो गया किन्तु कुँवरानी अँधेरे में करवटें बदलती रही बेचैनी से ! जरा भी आँखें लगती तो पलकों की छाया में सपने जाग पड़ते और मैना की मुस्कराती मोहनी सूरत भोलेपन के साथ कहने लगती—“परदेसी को जान दी है

मैंने सरकार !...इसे सम्हालकर रखना, मेरा परदेसी बड़ा मासूम है, फूल की चोट भी बरदास्त नहीं कर सकता..."

और तब—"मैना !!" चीख कर दौड़ पड़ती कुँवरानी मैना को पकड़ने के लिये और...

और इसी तरह हमेशा उसकी नींद भटके के साथ खुल जाती। सपने टूट जाते। सपनों के टूटने के पहले ही उसके दिल के लाखों-हजारों टुकड़े आँखों की राह निकल पड़ते।

अन्धकार के पदों से सबेरा भाँक उठता और फिर कुँवरानी अपने पति की सेवा में लिप्त हो जाती।

आज कुँवर उसके समक्ष उसका पति ही नहीं, मैना की सौंपी अमानत भी है।

आकाश की सफेदी पर ऊषा की गुलाबी छाने लगी। संसार के मुनहरे सपने टूट गये। लांगों की आँखों की नींद आकाश का तारा बन गई।

“वारिस !”

“हजूर !” कविता का स्वर कानों में पहुँचा और वारिस हाथ जोड़े उपस्थित हो गया।

“जाकर डाक्टर दास को बुलाओ...”

हुक्म पाते ही वारिस के पैरों में पंख लग गये।

थोड़ी ही देर में आँधी की तरह डॉक्टर साहब को लेकर हाज़िर हो गया। कुँवर के पैरों की पट्टी बदली गई, जहाँ से मुँह लगाकर मैना ने जहर चूसा था।

“गुलनार !” आज्ञा सुनने के लिये आ खड़ी हुई गुलनार भी।

“जा ललित को नहला दे....तुम्हारा चुनमुन तो....”

“उसकी फिकर छोड़ो हजूर, वह तो सोया है !” कहती हुई चली गई गुलनार और अपना काम कर लाई।

सबको काम-धाम समझा कर कुँवरानी रानी साहिबा के पास जाने लगी पूजा करने के लिये। जाते-जाते वारिस से कहती गई—
“जरा अपने मालिक का ध्यान रखना !”

“खुदा कसम ! आप फिकर न करें सरकार !...कुँवर साहब के रंजोगाम को अपनी हँसी-खुशी देकर खरीद लूँगा !”

वारिस की तेज निगाहों ने गौर से देखा की उसकी मालकिन की तबियत आज किसी सदमे से नासाज है।

“अरी ओ गुलनार !...” जाती हुई गुलनार को पुकारा वारिस ने। वह पास आ गई तो बोला—“खुदा कसम ! आज कुँवरानी साहिबा की तबीयत कुछ खराब जान पड़ती है... खिदमत में कसर न रखना....चाँद पाकर भी खुश नहीं हैं....उन्हें खुशी दे गुलनार !....मेरे मौला ! कुँवरानी माँ की गम से उबार ले।”

थोड़ी देर तक वारिस गुलनार से बातें करता रहा, फिर गुलनार अपने काम पर चली गई। और वारिस किसी काम से खिसक पड़ा।

सूरज आकाश की चोटी पर धीरे-धीरे चढ़ रहा था।



^{रात} प्राची का कलेजा चाक हुआ। ^{सूर्य} बाल रात्रि खून से लथपथ बाहर निकला। रात की रानी चाँद सितारों की दुनिया बटोर कर भाग गयी, दूर बहुत दूर। जहाँ सूरज की रोशनी उसे छू नहीं सकती थी।
सारा संसार विजयी, लहूँसे सराबोर सूरज के आगे नतमस्तक

हो गया। अपनी जीत पर हँस पड़ा रवि तो क्षणभंगुर दुनिया जगमगा उठी उसके स्वच्छ प्रकाश से।

सभ्य संसार से दूर, उस जंगल में जब रहिमियों का आगमन हुआ तो कुहराम मच गया। वह, वह जंगल जहाँ सबेरा हमेशा देर से और सन्ध्या अपने समय से पूर्व ही आ जाती थी।

हरी-हरी कोमल एवं मासूम पत्तियों से लदे 'विशाल वृक्ष सफेद रेशमी चादर ओढ़ कर शर्म से झुक गये। जालिम हवा का एक बेरहम झोका आया और पेड़ों की शर्म को रौंदता हुआ चला गया लज्जा का बन्धन हाय-हाय करके टूट गया, दिन पूरे हुए कैदी के जंजीर की तरह। जब लाज की डोरी नहीं रही तो बेशर्म होकर झूल पड़े, जंगली वृक्ष।

सुबह की मदहोश हवा सोये गाँव को गुदगुदाने लगी। जंगली गाँव के आगोश में सोये लोग रात के सपनों को सँवारने लगे, जो दिन के जागते ही टूटने लगते थे। आखिर सपनों का तारतम्य टूट ही गया चीख-खीख कर।

दिन के आते ही सपेरोँ में नयी जिन्दगी आ गई। दिन गरम हो चला। ऊँचे-नीचे पहाड़ों का दामन प्रकाश से भींग उठा। चट्टानें, जो रात की चाँदनी पी-पीकर हिमानी हो गई थी, तप्त हो चलीं। बेजान चट्टानों की छाती से लगकर धूप जाग रही थी मगर...

मगर टिकोरा अब भी सो रहा था, मैना को कलेजे से लगाये घर की दीवारें जो दो प्रेमियों को अँधेरे में देखने से असमर्थ थीं, दिन की रोशनी में देख रही थीं, न देखना चाहकर भी।

प्रेमियों के रस मिलन को देखकर दिवार की आँखें शर्म से झुकी जा रही थीं। चेहरा लाल होता जा रहा था।

टिकोरा सो रहा था बेखबर, दुनिया की सुध बिसारे, पाँव

पसारे । हफ्तों से मैना के पीछे जगा टिकोरा आज चैन की नींद सो रहा था । जैसे सभी दिन के बदले आज ही सोकर रहेगा ।

दरवाजे का कलेजा जमाने की गर्दिश से टूट गया था । बिछिन्न दरवाजे के रास्ते गरम सूरज की तीखी किरणें टिकोरा के बदन को आहिस्ता-आहिस्ता सहला रही थी । थोड़ी ही देर में गर्मी पाकर जग पड़ा वह । उठा तो सबसे पहले उसकी नजर मैना पर पड़ी । एक आँगड़ाई ली उसने । शरीर की नसें चटख पड़ीं । थका-वट मुँह फेर कर भाग गई ।

शान्ति का एक लम्बी साँस खींचकर वह खड़ा हो गया ।

“मैना !....मेरी रानी !” कहते-कहते फिर बैठ गया टिकोरा मैना की बगल में ।

“.....” चुप रही मैना ।

बीणा के टूटे तारों से आवाज भला कैसे आ सकती थी ?

मैना के मौन से तड़प उठा टिकोरा ।

बोला—“बोलो न मैना !....देखा, सबेरा हो गया है....अब जग भी जाओ रानी !”

वह धीरे-धीरे उसके शरीर पर हाथ फेरने लगा । मूर्ख टिकोरा भूल गया था कि मैना हमेशा-हमेशा के लिए सो गई है । उसकी नींद कोई ऐसी-वैसी नहीं जिसे कहर भी ताड़ सके ।

“रूठ गई मैना !...सच जानो, तुमने मुझे बेजान कर दिया है...टिकोरा की हर साँस पुकार-पुकार कर थकी जा रही है....जी कर भी मुर्दा हो गया हूँ अलबेली !” पीड़ा से लबरेज स्वर था टिकोरा का । उसकी पुरनम आँखें मैना को निहाल रही थीं ।

मगर मैना तो थी चुप, नीरव, शान्त !

और टिकोरा ?—पागल, आहत, बेचैन !

टिकोरा की भयानक आँखें जो आग की लपटें उगला करती

थीं, आज बादल बनकर बरस रही थीं। अबिराम गति से अश्क मचल रहे थे। बहते आँसू की बूँदें बोल रही थीं कुछ। टिकोरा के अन्तर का हाहाकार मैना को पुकार रहा था, किन्तु मैना खामोश थी। वह तो दूसरी दुनिया की रानी बन गयी थी। वहाँ की—जहाँ दुःख भूल कर भी नहीं जा सकता था और टिकोरा था परिवर्तनशील संसार का प्राणी। दोनों का सम्बन्ध था असंभव! हिमालय के योगी को दुनिया के लोगों से क्या मतलब ?

टिकोरा दिल के तूफान को अन्तर में नहीं रोक सका। बिलख-बिलख कर रोने लगा, एक मासूम बच्चे की तरह। पहाड़ जैसा टिकोरा रो रहा था। पर्वत से नदियाँ निकलरही थीं। उसके आँसुओं के एक-एक कतरे में हजार-हजार अरमान भरे थे।

आकाश रोता है तो जमीन का कलेजा शीतल हो उठता है।

बसन्ती-बहार चलती है तो चमन गुलजार हो जाता है।

नदियाँ बहती हैं तो लाखों-हजारों की प्यास मिट जाती है मगर....

मगर इन्सान रोता है तो अपने अन्तर की आग भी नहीं बुझा पाता।

टिकोरा की आँखें नदी तो बन गई हैं किन्तु मैना जीवित नहीं हो रही है। मैना की प्यास नहीं बुझा पा रहा है टिकोरा ! कितना मजबूर है वह। इन्सान की आँखों का खारा सागर किसी काम का नहीं।

“मैना ! आज हार गया हूँ मैं...तुमसे हार गया है टिकोरा... आज टिकोरा की ताकत तुम्हें नहीं बाँध सकती...” बोला टिकोरा असंयत स्वर में—“मगर....मगर अभी लड़ूँगा...मैं अभी हारा नहीं....हार नहीं सकता....तुम्हें जिला नहीं सकता मगर जान दे

सकता हूँ...हा-हा-हा टिकोरा को हराणा बायें हाथ का खेल नहीं मैना रानी !....अभी लडूँगा तुम्हारी जिद से !”

एक-ब-एक कठोर हो गया टिकोरा । चट्टान-सा हड़ हो उठा । आँखों में चमक-सी आ गई ।

“कब तक तुम जिद की शान में रहोगी !....देखेगा टिकोरा !...तुम्हें अपनी बना कर ही छोड़ूँगा !” बोला वह और अपनी बाहुओं में उठा लिया उसको—“जय उस्ताद !” अनजाने में वह बोल गया ।

और तब उस्ताद फेरई की आकृति उसकी आँखों में जाग पड़ी । चेहरे पर व्यंगपूर्ण हंसी फैल गई ।

“उस्ताद !. आज रहते तुम तां देखते, टिकोरा किसकी कृपा से उस्ताद बना है...हारा नहीं हूँ मैं !....मैना भी मेरे ही पास है—तुमसे भी ऊपर उठ गया टिकोरा ।” वह बुदबुदा उठा ।

टिकोरा को किमी ने उस्ताद नहीं माना है; लेकिन वह अपने से सारे गाँव का सरदार बना है । किसी की हिम्मत नहीं कि जरा टिकोरा से आँखें मिला ले । सभी उसके डर से थर-थर काँप रहे हैं । उसकी याद से खाना हराम हो रहा है । साँप का जहर उतार सकते हैं गाँव वाले मगर टिकोरा की बातों का असर जो उनके दिलों में भय बनकर उतर गया है, उसे वे नहीं दूर कर सकते ।

रात में ही आया टिकोरा और एक को सुरधाम भेज दिया । समूचे गाँव में सनसनी फैल गई है, जैसे एक बार अजगर के पेट से परदेसी के निकलने पर फैली थी ।

टिकोरा मैना को उठाये जंगल की तरफ चला । ठंडी-ठंडी हवा मैना के शरीर से टकराकर सर झुकाये निकल रही थी । साँप जैसी पगडंडी पर अजगर जैसा टिकोरा मन्थर-गति से चल रहा ।

था। रास्ते के लोग दूर से ही उसे देखकर रास्ता छोड़ दे रहे थे। और देखने लगते थे उसे भीत दृष्टि से।

इस समय टिकोरा के चेहरे पर क्रूरता नहीं, विषाद की रेखायें उभरी थीं। आँखें भीगी थीं पर नीचा नहीं था। अंग-अंग से वही पुरानी अकड़ भाँक रही थी।

टेढ़ी-मेढ़ी पगढण्डी की छाती रौंदता हुआ वह जंगल में घुसा। पेड़ों की छाया के नीचे था वह अब। पगढंडी का साथ छोड़ वह पास की एक चट्टान पर जा बैठा।

मैना अब भी उसकी गोद में थी।

थके पाँवों को कुछ देर आराम देने के बाद वह उठा और घने जंगल के बीच से गुजरने लगा। लताओं से उलझी भाड़ियों को धीरे-धीरे हटाते, कंटकाकीर्ण रास्ते से बचते हुये वह पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ने लगा। थोड़ी ही देर बाद हाँफता हुआ एक ऊँची चट्टान की चोटी पर आ पहुँचा।

दूसरी तरफ पहाड़ का उतार लेटा था। नीचे पहाड़ी नदी कल-कल कर बह रही थी और सुना रही थी अपनी जीवन-यात्रा की करुण-कहानी।

उतार पर धीरे-धीरे उतरने लगा टिकोरा। चिकनी चट्टानों पर थके पाँव फिसलते-फिसलते भी थम जाते।

नदी के पास पहुँच कर उसने मैना को एक साफ-सुथरी शिला पर लिटा दिया। तभी—

एक भाड़ी से खड़-खड़ की आवाज हुई। उसने पीछे पलट-कर देखा। किसी को देखकर बोल उठा—“कौन है ?”

मगर तब तक ‘कोई’ छिप गया। टिकोरा ने अधिक ध्यान नहीं दिया उधर। अपने शरीर की तरफ देखा उसने। खरोंच लगने की वजह से जगह-जगह से खून भाँक रहा था। फीके होठों

पर एक फीकी हँसी आई। जैसे उसे कुछ फिकर ही नहीं। एक अँगड़ाई ली उसने और शान्ति की एक साँस भी।

“कैसा हसीन मंजर है !” अपने आप बोला टिकोरा और फिर—“मैना ! जरा अपनी आँखें खोलकर तों देखो !”

मैना क्यों आँखें खोलने लगी ?

उसे चुप देख बोला—“नहीं खोलोगी....खोली नहीं तो पानी से नहला दूँगा....” और टिकोरा ने चुल्हू भर पानी लेकर मैना के मुँह पर छीटा दे मारा।

मैना ने आँखें नहीं खोली, नहीं खोली। और उसकी आँखें नहीं खुली तो विचलित हो उठा टिकोरा, रो पड़ा। नयनों के आँसू दरिया की लहरों में मिल गये।

थोड़ी देर बाद मैना को गोद में उठाया। उसके शरीर से लिपटे साँप के चमड़े को उतारा टिकोरा ने। बेजान जिस्म की खूबसूरती कुछ देर निहारता रहा वह। फिर नदी में मैना की लाश को मल-मलकर नहलाया। खुद भी नहाया।

शीतल जल ने उसके बेखबर शरीर में प्राण भर दिये।

मैना को फिर उन्हीं वस्त्रों में लपेट दिया उसने।

फिर जमीन पर पालथी मारकर बैठ गया, आँखें बन्द कर लीं। उसके भयानक होठों में कम्पन होने लगा। हाथों में हरकत हुई। चुटकी में धूल लेकर दक्खिन दिशा में फेंका उसने।

यह क्रिया कुछ देर तक चलती रही। दूसरी, तीसरी, चौथी बार भी धूल लेकर दक्खिन की तरफ फेंका उसने।

उसके होठों का कम्पन रह-रहकर तेज हो रहा था। उसने धूल की पाँचवीं चुटकी भी दक्खिन की तरफ फेंकी।

और पाँचवीं चुटकी का फेंकना था कि कोई चीज उड़ती

हनहनाती उसके आगे आकर गिर पड़ी। उसे टिकोरा ने अपने हाथों में उठा लिया और उसे सहलाने लगा।

“फों !” हाथ की चीज फुत्कार कर उठी।

साँप था वह, भयानक, विकराल, खतरनाक !

साँप जमान पर आ गया था हाथ से।

साँप की आँखों में देखते हुए मंतर पढ़ रहा था टिकोरा। वातावरण पहाड़ी नदी के कल-कल से सजग था। झाड़ी, जिधरसे खड़खड़ाहट की आवाज आई थी। जहाँ ‘कोई’ छिप गया था, वहीं से चार आँखें टिकोरा की गतिविध को गौर से देख रही थीं।

टिकोरा इस बात से पूर्णतया अनभिज्ञ था। वह अपने में ही व्यस्त तल्लीन था।

एकाएक उठ खड़ा हुआ वह और मैना को कन्धे पर लादकर गाँव की ओर चल पड़ा। पत्थरों का कलेजा रौंदता हुआ। पैर थाम लेने वाली लताओं को भटकारता हुआ।

स्नान के बाद से उसमें एक नवीन उमंग पैदा हो गयी थी। उद्भ्रान्त मस्तिष्क कुछ-कुछ संयत हो उठा था। मगर पागल हुए मानव का दिमाग सहज में भला पागलपन कैसे छोड़ सकता था? जंगल के बीच से चल रहा था वह। थोड़ी देर में उसका बरगद जैसा शरीर वृक्षों की छाया में विलुप्त हो गया !

टिकोरा के चले जाने के बाद झाड़ी की आँखें ‘आदमी’ के रूप में बाहर निकल आईं।

दोनों व्यक्तियों में जाने क्या-क्या बातें हुईं और वे उधर ही चल पड़े, जिधर अभी-अभी टिकोरा गया था।

एक मर्द था और एक थी औरत !

दिन अब जवान हो चुका था।

सूरज आसमान के कलेजे की आग बन गया था, जिससे धरती जलने लगी थी।

और टिकोरा बैठा था अपने घर में मनहूसियत लिये। उसके चेहरे पर मुर्दनी छाई थी। आँखें लाल थीं। आँसू की दो रेखायें गालों पर सूख गई थीं। शायद कुछ देर पहले रोया था वह।

कई दिनों का भूखा-प्यासा टिकोरा मैना की जिन्दगी चाहता था। वह चाहता था कि पत्थर की मूरत बोले, आकाश का चाँद जमीन पर आकर चमके लेकिन....

लेकिन इश्क कितना जालिम, सितमगर होता है और मानव कितना मूर्ख और अबोध ! प्रेम मनुष्य को त्रिशंकु बना देता है। वह मर भी नहीं सकता, मरना चाहकर भी और जी भी नहीं सकता। जीना चाहकर। मोहब्बत कितनी बड़ी मजबूरी है। यह रोग इन्सान को शान्ति की साँस नहीं लेने देता।

हमेशा मैना को आँखों का तिल बनाये रहता था टिकोरा। मैना को देखते-देखते थकती नहीं थी उसकी निगाहें।

और मैना !

वह तो काजल की डली बन गई थी। पूनम की चाँदनी अंधकार में परिणत हो गयी थी। मगर अमा की रात्रि बनकर भी चाँद अपनी आभा नहीं खो पाया था। अभी मैना में रूप का आकर्षण विद्यमान था।

जब से टिकोरा गाँव में आया है तब से उसकी खबर लेने कोई नहीं आया था। आये भी कौन ! किसको अपनी जान भारी हो गयी थी ? कौन साँप के बिल में हाथ डालना चाहे। उसके क्रोध से तो गाँव का जर्जर-जर्जर परिचित था।

गाँव भर टिकोरा के खिलाफ था। बच्चे-बूढ़े और गाँव के पंच भी नाराज थे उससे। अपने बाप के दुश्मन को कौन प्यार कर

सकता है ? उस्ताद की मौत से टिकोरा कैसे पूज्य हो सकता था ? उसने एक उस्ताद को ही नहीं, कितनों को ही मारा था । छचमकू और लजारों का हत्थारा भी वही था । रात को उसने एक सँपेरे को मारा था । इतना ही नहीं मैना का अपहरण भी उसने किया ।

किसी नारी की अस्मत् लुटने वाले से सँपेरे कैसे दोस्ती कर सकते थे भला ।

गाँव के सँपेरे धिमानी के घर जुटे थे ।

धिमानी !

पंचों में से एक । बुजुर्ग सँपेरा ! बूढ़े चेहरे पर रोब और जमाने की सतायी हुई झुर्रियाँ उस पर सफेद-सफेद दूध की तरह दाढ़ी और मूँछ, जो तीक्ष्ण अनुभव की परिचायक । जीवन के दुख-सुख के भार को लादे-लादे उसकी कमर धनुष बन गई थी, किन्तु थरथराते हाथों में लाठी लिये वह उसे सहारा दे रहा था । बूढ़े की जिन्दगी आखिरी मंजिल की तरफ जा रही थी । मगर गले में धिपैले साँप की माला बनाकर जंगलों में घूमना अभी तक नहीं छूट सका था ।

क्रोधित सँपेरे मौन थे । सभी की सूरत पर टिकोरा के लिये घृणा और उपेक्षा के भाव थे और आँखों में मैना के लिये सहा-नुभूति के चिन्ह ।

“अब क्या होगा बाबा ?” एक सँपेरा था ।

“होगा क्या बेटे ! वही होगा जो अजगर के चपेट में आ जाने पर होता है ।” सफेद भौंहों को ऊपर उठाकर बोला धिमानी ।

“टिकोरा से बदला लेना होगा... उसने उस्ताद की जान ली है और अपने मन का उस्ताद बन बैठा है... बाबा ! उसकी परीक्षा

ॐ छमक और लजारों कौन थे ! परदेसी ‘प्रथम’ खण्ड देखिये ।

लो, हम भी तैयार हैं, जो जीतेगा वही सरदार बनेगा....” दूसरा सँपेरा था वह ।

चुपचाप सर नीचा किये सोचता रहा धिमानी । बूढ़े चेहरे की झुर्रियों पर चिन्ता के चिह्न थे ।

“मैना का क्या होगा बाबा !” यह चिकोरा था । टिकोरा के खिलाफ वह भी आया था—“अगर ऐसे ही वह गाँव की बहू-बेटियों को जबरदस्ती लूटने लगेगा तो इज्जत रास्ते की धूल बनकर रह जायगी....बाहर निकलना मुश्किल हो जायगा...”

गाँव में सभी सँपेरे मौजूद थे वहाँ । धिमानी ने सुना और इस बार भी उसकी चुप्पी भंग न हो पायी ।

“तारा तोड़ने के लिये आकाश पर चढ़ना ही होगा....जिसे उस्ताद बनने की हसरत है तो मैदान में उतरे....” चिकोरा कहता जा रहा था—“साँप छोड़ा जाय....जां जीते बाजी उसकी...” चारों तरफ देखा उसने और अपनी जगह बैठ गया ।

चिकोरा के बैठते ही सँपेरों में कानाफूँसी होने लगी । सन्नाटा फुस-फुसाहट में परिवर्तित हो गया ।

धिमानी भी अब तक चुप था ।

“टिकोरा का बुलाकर पूछा जाय....उसे उस्ताद बनाया तो किसने ?” एक सँपेरा बोल उठा ।

धिमानी के होठ कुछ कहने के लिये खुले, किन्तु उसके पूर्व ही सभी सँपेरे बोल उठे—“ठीक है...ठीक है !”

सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हो गया । मण्डली बर्खास्त हो गई ।

सभी के चले जाने के बाद धिमानी गम्भीर होकर ठण्डे दिल से विचारने लगा—टिकोरा में गुण और करतब दोनों हैं मगर है

बढ़माश, जरा-सा अपने को सुधार ले तो उस्ताद फेरई से कम नहीं....सारी विद्या तो सीखा दी उस्ताद ने उसे....

इधर सभी टिकोरा से युद्ध करना चाहते और टिकोरा !

वह मैना की दयनीय दशा देख-देखकर निष्प्राण हो रहा था । उसकी आँखों में काली रात की सघनता घुसी जा रही थी । उसका जीवन अस्म-व्यस्त, अव्यवस्थित हो उठा था, सरसता आसमान का तारा बन गई थी । मैना की दाहक स्मृति उसे राख बनाये जा रही थी ।

वह जानता है कि साँप के विष से इन्सान इतनी जल्द मर नहीं सकता, मरता नहीं । और उसे यह भी मालूम है कि मैना के ऊपर उस्ताद के मणि वाले साँप का जहर चढ़ा है, जिसे दूर करने की क्षमता स्वयं उस्ताद में भी नहीं थी । मणि वाले साँप का जहर चढ़कर उतरना नहीं जानता ।

मैना टिकोरा से बहुत दूर चली गई, चाँद-सितारों की दुनिया में । फिर भी एक आशा लिये वह उसे जिलाने की चाह रखता है और इसलिये वह कोशिश कर रहा है । आशा पर तो दुनिया ही टिकी है तो भला टिकोरा निराशा का दामन क्यों पकड़ता ?

आग जल रही थी धुआँ उठ रहा था । कमरा बेमौसम ही सावन की काली घटाओं से आच्छादित हो उठा था । चारपाई पर मैना लेटी थी । पास ही भूला-भूला टिकोरा आँखें मूँदे बैठा था । उसके होंठ बुदबुदा रहे थे । वह आँखों से आग में किसी पदार्थ का भस्म छोड़े जा रहा था । उससे एक तीव्र गन्ध निकल रही थी । विषैला धुआँ जब-जब टिकोरा की नाक में घुसता वह अपनी नाक बन्द कर लेता । थोड़ी-थोड़ी देर पर वह रुक जाता और अपनी क्रिया का प्रभाव मैना के ऊपर देखने लगता ।

“नहीं बोलेली मैना !” टिकोरा के अन्तर की करुणा गले पर

दर्द का रूप धारण कर फूट पड़ी—“टिकोरा हार कर भी हारना नहीं जानता गोरी !...अभी लड़ूंगा....तुमसे तुम्हारी मौत से... अजगर के पेट में गया परदेशी जी सकता है और साँप के जहर से चुप मैना बोल भी नहीं सकती....ऐसा कभी नहीं हो सकता मैना !....मेरी रानी ! तुम्हें बोलना ही होगा आज तो....”

अपनी सारी ताकत लगा कर मंत्र पढ़ने लगा टिकोरा । उसने उस्ताद के बताये सभी मंत्रों को दुहरा डाला मगर मैना हिली तक नहीं ।

मैना जीत रही थी और टिकोरा हार रहा था ।

“मैं हार नहीं सकता !” अपनी हार देखकर चीख उठा टिकोरा किसी जड़ी का पीला-पीला बुरादा लेकर उसने जलती आग में डाला । रंग बिरंगी लपटें उठी ।

थोड़ी देर बाद उसी बुरादे का लेकर साँप के तेल में मिलाया उसने और उसके शरीर पर मालिश करने लगा । वह उसके शरीर की कालिमा को दूर करना चाहता था । मुर्दे में जान लाना चाहता था मगर टेसू के फूल में सुगन्ध कहाँ से आये ।

लाख दवा करके हार गया टिकोरा । कुछ भी असर नहीं हुआ असर नहीं हुआ उसके मन्त्र का, उसकी दवाओं का तो खीम उठा वह । पागल बन गया । पास ही पड़े पत्थर को उठा कर अपने सर पर दे मारा । मस्तक लहू उगलने लगा । उसकी आँखें भर आईं । खून की बूँदें मैना के बदन पर भी गिरीं । देखकर चौंक पड़ा टिकोरा । उसके चेहरे पर अजीब बेबसी व्याप्त थी ।

आग उगलने वाला ज्वालामुखी आज हिमालय की शीतलता लिये चुप था ।

बदहवास बैठे टिकोरा के चेहरे पर आशा की एक किरण जल उठी । वह खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर दौड़ पड़ा

तभी—किसी से टकरा गया वह ।

“तुम !” सम्भल कर संयत स्वर में बोला वह ।

“पहचान नहीं सके ?”

“खुद को भूलने वाला, तुम्हें क्या पहचानेगा चिकोरा !”

“जरा अपने को याद करो नहीं तो बरबाद हो जाओगे !”

चेहरे पर घृणा थी चिकोरा के ।

उसके भावों को पढ़ कर जल उठा टिकोरा । क्रोध से रन्मत होकर बोला—“चिकोरा !”

आगे नहीं बोल सका टिकोरा । उसके आगे मैना की आकृति नाच उठी । और तब उसका खयाल आया ।

“जरा कायदे से बोल टिकोरा—हाँ !”

“टिकोरा नहीं....उस्ताद कहो....देखते हो यह साँप !” विकराल मणिधर को गले से उतारते हुए बोला टिकोरा—“यह उस्ताद का ही साँप है....इसे भूले तो नहीं ही होगे ?”

“तुम्हें किसने उस्ताद बनाया ?” प्रश्न था चिकोरा का ।

“किसी की किरपा से नहीं बना, इतना ही जान लो,...बखत नहीं है, नहीं तो बता कर ही जाता....” कहता हुआ टिकोरा जंगल की तरफ दौड़ पड़ा ।

चिकोरा मुड़कर घर के अन्दर गया । देखा—मैना सोयी थी पलकें बन्द किये ।

“मैना !” धीरे से पुकारा उसने ।

“.....” बोली नही मैना । और तब...तब चिकोरा का माथा ठनका ।

चीख पड़ा चिकोरा दौड़कर उसके नजदीक गया उसने गौर से देखा उसे हिलाया-डुलाया और...और तब वह आकाश से जमीन पर गिर पड़ा । वहाँ रुक नहीं सका ।

अब वह समझ सका—टिकोरा क्यों गम्भीर था। क्यों रह-रह कर विचलित हो रहा था और क्यों उसके चेहरे पर दर्द की सिकुड़न थी।

दौड़ा-दौड़ा वह दूटी चारपाई पर बिस्तरे की तरह फैल गया। उसके मस्तिष्क की नसें तन रही थीं। ज्ञान-तन्तुओं की सजीवता लुप्त होती जा रही थी।

उसका अन्तर चीख पड़ा—“मैना मर गई...”

भय में उसने आँखें मूँद ली! सर को हथेलियों से ठोकने लगा। चोट खाकर पागल दिमाग शान्त हो गया।

“मैना मर गई!” बुदबुदाया वह—“किसने मारा उसे?”

और उसकी आँखों के आगे टिकोरा की खूँखार छाया आकर खड़ी हो गई, अट्टहास करती हुई।

“टिकोरा!” तेज मगर धीमी आवाज में चीख पड़ा वह। उठकर बैठ गया। आँखों में क्रोध उतरा आया।

“क्या है मेरे राजा!....कहाँ है टिकोरा!....बहुत खोये-खोये नज़र आ रहे हो?” घर के अन्दर पैर रखती चमकी ने पूछा।

“कुछ नहीं रानी!...बस, यों ही, जरा-सी....” चमकी को देखकर मुस्करा उठा चिकोरा, एक फीकी हँसी।

और निहाल हो गई चमकी। बोली—“बस जरा ही?” वह हँस रही थी घातक हँसी।

“टिकोरा के पास गये थे न?” चमकी ने फिर प्रश्न किया—“क्या कहा मरदूद ने? हाथा-पाई तो नहीं हो गई?...हाँ तो बहुत रहे हो जी!...कहो न साफ-साफ!”

चिकोरा के बिल्कुल समीप बैठी थी वह।

चिकोरा की आँखें चमकी को निहार रही थीं। धीरे-धीरे वह

तभी—किसी से टकरा गया वह ।

“तुम !” सम्भल कर संयत स्वर में बोला वह ।

“पहचान नहीं सके ?”

“खुद को भूलने वाला, तुम्हें क्या पहचानेगा चिकोरा !”

“जरा अपने को याद करो नहीं तो बरबाद हो जाओगे !”

चेहरे पर घृणा थी चिकोरा के ।

उसके भावों को पढ़ कर जल उठा टिकोरा । क्रोध से उन्मत्त होकर बोला—“चिकोरा !”

आगे नहीं बोल सका टिकोरा । उसके आगे मैना की आकृति नाच उठी । और तब उसका खयाल आया ।

“जरा कायदे से बोल टिकोरा—हाँ !”

“टिकोरा नहीं....उस्ताद कहो....देखते हो यह माँप !” विकराल मणिधर को गले से उतारते हुए बोला टिकोरा—“यह उस्ताद का ही साँप है....इसे भूले तो नहीं ही होगे ?”

“तुम्हें किसने उस्ताद बनाया ?” प्रश्न था चिकोरा का ।

“किसी की किरपा से नहीं बना, इतना ही जान लो,...बखत नहीं है, नहीं तो बता कर ही जाता....” कहता हुआ टिकोरा जंगल की तरफ दौड़ पड़ा ।

चिकोरा मुड़कर घर के अन्दर गया । देखा—मैना सोयी थी पलकें बन्द किये ।

“मैना !” धीरे से पुकारा उसने ।

“.....” बोली नहीं मैना । और तब...तब चिकोरा का माथा ठनका ।

चीख पड़ा चिकोरा दौड़कर उसके नजदीक गया उसने गौर से देखा उसे हिलाया-डुलाया और...और तब वह आकाश से जमीन पर गिर पड़ा । वहाँ रुक नहीं सका ।

अब वह समझ सका—टिकोरा क्यों गम्भीर था। क्यों रह-रह कर विचलित हो रहा था और क्यों उसके चेहरे पर दर्द की सिकुड़न थी।

दौड़ा-दौड़ा वह टूटी चारपाई पर बिस्तरे की तरह फैल गया। उसके मस्तिष्क की नसें तन रही थीं। ज्ञान-तन्तुओं की सजीवता लुप्त होती जा रही थी।

उसका अन्तर चीख पड़ा—“मैना मर गई...”

भय में उसने आँखें मूँद ली! सर को हथेलियों से ठोकने लगा। चोट खाकर पागल दिमाग शान्त हो गया।

“मैना मर गई!” बुदबुदाया वह—“किसने मारा उसे?”

और उसकी आँखों के आगे टिकोरा की खूँखार छाया आकर खड़ी हो गई, अट्टहास करती हुई।

“टिकोरा!” तेज मगर धीमी आवाज में चीख पड़ा वह। उठकर बैठ गया। आँखों में क्रोध उतरा आया।

“क्या है मेरे राजा!....कहाँ है टिकोरा!....बहुत खोये-खोये नज़र आ रहे हो?” घर के अन्दर पैर रखती चमकी ने पूछा।

“कुछ नहीं रानी!...बस, यों ही, जरा-सी....” चमकी को देखकर मुस्करा उठा चिकोरा, एक फीकी हँसी।

और निहाल हो गई चमकी। बोली—“बस जरा ही?” वह हँस रही थी घातक हँसी।

“टिकोरा के पास गये थे न?” चमकी ने फिर प्रश्न किया—“क्या कहा मरदूद ने? हाथा-पाई तो नहीं हो गई?...हाँफ तो बहुत रहे हो जी!...कहो न साफ-साफ!”

चिकोरा के बिल्कुल समीप बैठी थी वह।

चिकोरा की आँखें चमकी को निहार रही थीं। धीरे-धीरे वह

मैना को भूलता जा रहा था। फूलों की माला पहन कर काँटों का तीखापन कितना जल्दी भूल जाता है इन्सान !

चिकोरा की आँखें 'कुछ' बोलने लगी थीं। चमकी की पलकें भी मूक भाषा में जवाब दे रही थीं। मौन आँखों के इशारे आपस में कुछ कह सुन रहे थे।

“मैना कैसी है रसिया !” बोल पड़ी चमकी मौन भंग करती हुई।

वह चिकोरा की विशाल छाती पर लेट गई।

“मैना !” आगे नहीं बोल सका चिकोरा।

भूलती-भूलती याद को जगा दिया था चमकी ने। उसका स्वर पीड़ा से भीग उठा था जिसे चमकी ने देखा नहीं।

“क्या कर रही थी वह...कैसी है ?”

“वह तो सो गई...सो रही थी रानी !” कहते-कहते चिकोरा का बुरा हाल हो रहा था।

“तो जगा लिया होता....परदेसी का हालचाल ही मिल जाता...कहीं टिकोरा ने मार तो नहीं डाला उसे....बेचारा परदेसी !”

“मैना नहीं जागेगी री !....वह अब नहीं जाग सकती !”

कहते-कहते चिकोरा का दर्द उठ खड़ा हुआ। आँखें रोने-रोने को हो चलीं। उसने चमकी को जोरों से सीने में दबाया अपनी पीड़ा को रोकने के लिये।

“मोरी मइया। क्या अनहोनी बोलते हो जी !....समझ में कुछ नहीं आ रहा है....” उठकर बैठ गई थी चमकी। और आश्चर्य छा गया था उसके ललाम चेहरे पर...” जरा खुलकर कहो छबीले !”

“उसे टिकोरा ने साँप कटा दिया है...वह मर गई है चमकी... गोरी-गोरी देह काजल बन गई है।...टिकोरा मैना को नहीं,

उसकी लाश लेकर आया है—शैतान !” दाँत पीसते हुए बोला चिकोरा !

“तब तो परदेसी को भी मार डाला होगा उसने....क्या करता था करैत ?”

“जंगल गया है !”

“सबेरे ही तो मैंने और शीतल बाबू ने देखा था उसे ।.... मैना को नहला रहा था नदी में, तभी तो कुछ बोली नहीं मैना...वरना टिकोरा की ऐसी-की-तैसी, वह क्या छू सकता था उसे...अब क्या होगा ?”

अपनी सहेली की मौत से घबड़ा उठी थी चमकी । उसकी आँखें छलछलता आई थीं । उसका मगज काम नहीं कर रहा था कुछ ।

“पूछती हो उसका क्या होगा...अजगर का मांस बनाकर बटवा दूँगा गाँव में....” चिकोरा के स्वर से प्रतिकार की भावना बोल रही थी ।

थोड़ी देर तक इसी प्रकार की गरम-गरम बातें होती रहीं । दिन की जवानी ढलने लगी । चिकोरा का क्रोध धीरे-धीरे शान्त हो चला ।

मस्तिष्क सोचने लायक हो गया तो बोला वह—“शीतल बाबू कहाँ हैं ?”

“बाहर बैठकर साँप और नेवले की लड़ाई देख रहे हैं.... बुला दूँ ?”

“नहीं, जखम तो ठीक हो गया है न ?”

“ठीक ही समझो अब तो....”

“अच्छा, जा अब....आँखें लग रही हैं मेरी ।”

“दिन में ही सोओगे मतवाले !....सबने जगने लगेंगे—हाँ !” बोली चमकी अदा के साथ—“मैं क्या करूँ ?”

“जब दिन में मैं सपने जगा रहा हूँ तो तू जाकर तारे गिन.... गुदगुदी मत लगा !...तुम्हारी उँगलियाँ बाप कसम, साँप बन जाती हैं...अरी छोड़ नहीं तो ले....”

“दैया रे !...चीख पड़ी चमकी—“हटो जी बड़े वो हो !.... काटते हो तो साँप की तरह....गाल न हो गया....” कहते-कहते शर्म से झुक गई चमकी।

“अच्छा, अब तो टल !”

“लो टल गई !....बाबा रे, फुँफकारते क्यों हो ?”

चमकी वहाँ से हटकर अपने शीतल, छैला के पास चली।

दरवाजे के बाहर पैर रखा ही था उसने कि किसी को वहाँ खड़ा पाया।

“तुम !” चमकी ने पूछा—“छिपकर हम लोगों की बातें सुन रहे थे ?”

“नहीं, सर हिला कर उत्तर दिया उस व्यक्ति ने—“मैं तो यहाँ तक तुम्हें बुलाने आया था, मगर....”

“हटो जी, बातें खूब बना लेते हो....शहरी छैला हो न !” बोली चमकी और उसका हाथ पकड़ कर दूसरे कमरे में खींच ले गई।

वह शीतल ही था। खड़ा होकर बातें सुन रहा था।

आकर चारपाई पर बैठ गये दोनों।

“टिकोरा की बातें हो रही थीं न ?...वही न, जिसे नदी पर दिखाया था तुमने ?” शीतल ने पूछा।

“हाँ, जी !...मैना को तो ढँस लिया गेहुँवन ने....परदेसी भी नहीं बच सका होगा....बेचारा परदेसी !....बड़ा भोला था जी वह...बिलकुल तुम्हारी तरह” बोली चमकी—“जरा बगल हो जाओ अलबेले ! तनिक लेट लूँ।

चित्त लेट गई वह तो शीतल ने देखा—यौवन का कसाव ।

“परदेसी के विषय में बता सकती हो चमकी !” शीतल ने प्यार भरे लहजे में पूछा ।

“पराये की तरह क्यों पूछते हो बाबू ! बताऊँगी क्यों नहीं.... चमकी का सब कुछ तेरा हा गया है । विश्वास न हो तो कलेजे पर हाथ रखकर धड़कनों से पूछ लो !.... आँखों के बहते आँसुओं से पूछो कि तुम्हारे लिए मेरा दिल कितना-कितना बेचैन रहता है....सच मेरे रसिया ! तुम्हारे बिना चमकी को अब कुछ नहीं सुहाता है...” कहते-कहते चमकी का स्वर करुण हो उठा ।

“मुझे क्षमा कर दो चमकी !....गलती हो गई ।”

“क्षमा न माँगो बाबू !...तुमने कसूर ही क्या किया है... दिल लगा कर गलती तो मैंने की है ...” चमकी उठ कर बैठ गई—“मैना के बाबू कहते थे शहर के लोग बड़े होते हैं, उनसे चूक नहीं होती...तुम्हीं मुझे क्षमा कर दो...कर दो न !”

“अच्छा, कर दिया !” चमकी के भोलेपन को देखकर हँस पड़ा शीतल । बोला—“अच्छा अब बताओ परदेसी के बारे में ।”

“शहर का ही तो था वह....जहाँ तुम रहते हो....अजगर के पेट से निकला था बेचारा !....मैना के बाबू ने बचाया था उसे । मैना के बाबू उस्ताद थे न, उनके हाथ में जस था जस....मंतर पढ़कर फर मुर्दे को छूते जी उठता था ।” उन्मीलित नेत्रों से देख रही थीं चमकी शीतल को ।

उसके काले-काले बाल हवा में फहरा रहे थे । उसने शीतल के हाथ को अपने हाथों में भर लिया और धीरे-धीरे सहलाने लगी, दबाने लगी ।

“ऐसा ?” आश्चर्य से बोला शीतल ।

“हाँ जी, हाँ !....विश्वास न हो तो किसी से भी पूछ लो ।....

चमकी झूठ नहीं बोलती !” नयनों के कमान से कटाक्ष का तीर छोड़ती हुई बोली चमकी ।

अजगर के पेट में जाकर कोई बाहर निकल सकता है ?

शीतल को यकीन नहीं हो रहा था । यहाँ की हर चीज में, उसे नवीनता और विचित्रता दिखाई देती थी ।

“तुम्हें विश्वास नहीं होता बाबू ?” फिर प्रश्न किया चमकी ने । शीतल को खामोश देखकर !

शीतल चुप ही रहा । उसे विश्वास ही भला कैसे हो ? शहर का वाशिन्दा, सभ्य संसार का प्राणी । भला कैसे यकीन कर लेता वह । रानी के मुँह से सुनी कहानियों की तरह से उसे सब झूठा लग रहा था । साँप काटे इन्सान को जीते नहीं देखा है उसने तो अजगर के पेट से निकले जीवित के बारे में कैसे वह गलत धारणा बना ले ।

शहर में सुना था उसने कि सँपेरे साँप खाते हैं । इसे भी वह उनकी दुनिया में आने के पूर्व मनगढ़न्त ही समझता था । मगर अब तो वह देख रहा था कि सँपेरे साँप खाते हैं । और चमकी ने बहुत-बहुत से जादू-मंत्र के खेल भी दिखाये थे । इस अनहोनी पर भी उसे यकीन करना ही पड़ा अपनी धारणा के विरुद्ध उसे विद्रोह करना ही पड़ा ।

“अजगर देखा है तुमने बाबू !”

“नहीं....”

“यहाँ हो तो देख ही लोगे कभी न कभी !”

“अब कुछ देखने की अमिलाषा नहीं रही चमकी, सिर्फ घर जाने की तमन्ना है....मुझे जाने क्यों नहीं देती तुम ?” चमकी की ओर देखते हुए बोला शीतल ।

शीतल के आगे शहरी बातावरण जाग पड़ा था । शहर जाने

की इच्छा तीव्रतर हो उठी उसकी। शहर की रंगीनियों के आगे यह जंगल उसे नर कुण्ड सा जान पड़ा। पग-पग पर साँपों का फुत्कार ही तो भरा पड़ा था यहाँ।

“बाबू जाना चाहोगे तो चमकी रोक नहीं सकेगी तुम्हें...” बोली आर्द्र स्वर में वह—“बिल में घुसे साँप को बाहर निकालने की ताकत है मुझमें, उड़ते परिन्दे को मंतर से बाध तो नहीं ही सकती...यह तो दिल की मजबूरी है परदेसी बाबू!....पूछते हो जाने क्यों नहीं देती? यह मुझे खुद पता नहीं।”

“यह बात नहीं चमकी!...यहाँ का वातावरण मुझे पसन्द नहीं। सोता हूँ तो सपने साँप बन जाते हैं, जागता हूँ तो जिन्दगी डंसने लग जाती है....मुझे डर है, किसी दिन मैं भी न साँप बन जाऊँ....उफ्!” बेचैन होकर बोला शीतल—“मुझे घर जाने दो चमकी!...मुझे शहर तक पहुँचा दो या रास्ता ही दिखा दो—बड़ी मेहरबानी होगी।”

“मेहरबानी तो तुम्हारी चाहिए बाबू!” चमकी के गले पर करुणा आ बैठी।

और शीतल की भूत की स्मृति वर्तमान में पीड़ा बनकर उसके हृदय को दबोच रही थी। वह अपने घर जाना चाहता था।

“तुम्हें मेरा घर नहीं सुहाता छैला!....मेरा साथ तुम्हें पसन्द नहीं....मैं अच्छी नहीं?”

“नहीं!” सभी का जवाब दो अक्षरोंमें झुँझला कर दिया उसने।

घर की याद आ गई थी शीतल को तो अच्छी लगने वाली चमकी भी बुरी हो गई।

“तो तुम जा सकते हो...” चमकी ने आँखों के सागर को पी डाला। उसकी आवाज अब भीगी थी—“चमकी रोयेगी नहीं तुम्हारे लिये।....यहाँ पत्थरों का ढेर है बाबू! कलेजे पर रखकर

सबर कर लूँगी। पहाड़ बन कर अब नहीं रोऊँगी तुम्हें, पगटण्डी बनकर तुम्हारा रास्ता साफ कर दूँगी...जाओ, चले जाओ छलिया छैला !”

आखिरी शब्द कहते-कहते रो पड़ी चमकी !

अन्तर के तूफान को नारी का नरम कलेजा नहीं रोक सका। आँखें सावन-भादों बन बरसने लगी। पलकों का साथ छोड़कर जब आँसू गालों पर मचले तो शीतल भी विचलित हो उठा। आँसू के आँगारों को बेमुध होकर बरसते नहीं देख सका वह।

चमकी आँखों में पत्थर को पिघलाने की ताकत थी। शीतल तो इन्सान ही था, वह चला !

बोला—“तू तो रोने लगी चमकी !”

“हाँ, बाबू ! रोने लगी हूँ।” हिचकी लेती हुई बोली वह—
“मेरे आँखों का पानी तुम्हें रोक नहीं लेगा परदेसी !...आँसू की एक-एक बूँद फूल बनकर राह में बिछ जायगी.. शौक से हँसते-कुचलते चले जाना !”

“चमकी !” शीतल बातों की चाँट से तिलमिला उठा !
चमकी का हाथ पकड़ लिया उसने।

“हाथ मत पकड़ो बाबू !...सहारा देने की ताकत तुम में नहीं !” चमकी कहे जा रही थी। और शीतल प्रस्तर प्रतिमा-सा मूक गाँव की गोरी को आँसू से नहाते देख रहा था।

“हँस-हँस कर दिल लगाया था तो रो-रोकर दिल को समझा भी लूँगी...अपनी खुशी के लिये तुम्हारे अरमानों का खून नहीं करेगी चमकी !”

“रानी !”

“रानी कहकर जलाओ मत परदेसी !...मेरा नाम चमकी है

चमकी....मेरी नजरों से दूर हो जाओ....जाओ” कहकर चमकी ने शीतल को पकड़ कर घर के बाहर ढकेल दिया ।

चला गया अहंकारी शीतल । और चमकी चारपाई पर कटे पेड़-सी गिर पड़ी । आँखों से नदियाँ बह चली । और दिल जलता रह गया उसका । संग दिल साजन का मन ही मन चिन्तन करने लगी वह ।

बेसुध पड़ी रही, बेखबर रोती रही । वह कब तक रोती रही उसे भी पता न चला । सजग हुई तब जब किसी ने प्यार भरे हाथों से उसके सर को सहलाया ।

चौंककर उठ बैठी । उसने देखा—

शीतल सामने बैठा था । उसके सपनों का राजा, उसका छैला वापस लौट आया था ।

सहसा उसे विश्वास नहीं हुआ अपनी आँखों पर । लगा जैसे सपना देख रही है वह ।

“चमकी !” प्यार भरे स्वर में धीरे से पुकारा शीतल ने ।

“तुम...तुम्ही तो हो !....वापस लौट आये बाबू !” चमकी बोली—“एक बेबस जान का तड़पना देखने आये हो, आग लगाकर लपटें देखने आये हो ?....देखो...देख लो जी-भर.... निहाल कर लो अपनी आँखें...”

“जाने के लिए नहीं आया हूँ मैं...अब नहीं जाऊँगा चमकी !”

“सच !...मेरे छैला, सच कह रहे हो तुम ?....”

“हाँ !” कहा शीतल ने ।

चमकी को जैसे सब कुछ मिल गया, हँस पड़ी । उसके गालों पर लेटी आँसू की लकीरें मुस्कुरा उठी ।

“मेरा तो दिल ही बैठ गया था बाबू !...”जाने का नाम न लिया करो कभी....भला क्यों लौट आये तुम ?”

“लौटने का इरादा तो नहीं था मगर....” कहते-कहते रुक गया शीतल ।

“अगर-मगर क्या जी !” खुलकर बोलो न !” चमकी ने कहा ।

“तारों का टूटना अशकून होता है न ?”

“होता तो है....पर दिन को तारे तो टूटते नहीं और अभी रात नहीं...मैं समझी नहीं कुछ ।” बोली चमकी । अपने कमल के ढंठल जैसे नाजुक हाथों को ठुड्डी पर रखकर उसने आश्चर्य का भाव प्रकट किया । और चेहरे पर प्रश्न-चिह्न लेकर शीतल की तरफ देखने लगी !

“तुम रो रही थी न ?”

“हाँ, तो...?”

“तुम्हारी आँखों के आकाश से आँसुओं के कितने ही तारे टूट पड़े थे....तो कैसे जा सकता था मैं....तुमने आँसुओं की नदी की वेगवती धारा में मुझे बहा दिया और मझदार में मैं साहिल खो बैठा—भूल गया रास्ता !” हँसते हुए कहा शीतल ने ।

मगर चमकी दुखी हो उठी । सोचने लगी—उसी के कारण शीतल लौट आया । उसके दगाबाज आँसुओं ने रोक लिया उसके छैला का ।

“अगर मैं आँखों के तारों को पलकों में छिपा लूँ तो चले जाओगे बाबू !”

“हाँ-हाँ !” शराफत से हँस कर बोला शीतल—“तब तो अशकून पैदा ही नहीं होगा...ऐसा कर सको तो कितना अच्छा....”

“तो अब चले जाओ परदेसिया !....आगे कहते-कहते गला भर आया चमकी का । अपने हाथों अपने अरमान का खून कर रही थी वह । विवश नारी का अपूर्व त्याग था वह ।

शीतल भी जाने के लिये तैयार हो गया। उठकर खड़ा हो गया वह।

चमकी का हृदय हा-हाकार कर उठा; किन्तु खामोश रही। तूफान आने के पहले-सी शान्ति छाई रही।

“अच्छा तो चला मैं.. रोना मत!” और शीतल ने दरवाले के बाहर पैर रखा।

“जरा रुको परदेसी!” रोती आवाज निकली चमकी के गले से। उड़ता फरिन्दा रुक गया क्षण भर के लिए।

“क्या है?”

“अगर चमकी से भूल-चूक हुई हो तो क्षमा कर देना....” कहते-कहते चमकी के गले में आँसू अटक गये—“दरसन की साध लिये तुम्हारा इन्तजार करूँगी...कभी आ सको तो आ ही जाना दिल का दरवाजा हमेशा खुला ही मिलेगा तुमको....”

कहकर चमकी शीतल के पैरों पर गिर पड़ी। मगर शीतल पत्थर ही बना रहा। चमकी ने उसके पैरों की धूल को उठाकर मस्तक में लगा लिया। और....

और तब पैर खींचकर निर्मोही परदेसी, बेदर्द छैला, बेदिल शीतल चला गया।

शीतल चला जा रहा था और चमकी देख रही थी। देख रही थी कि किस शान से उसके दिल का प्यार, उसकी दुनिया उजाड़ कर चला जा रहा था।

थोड़ी देर में जंगलों की छाया में शीतल की काया लुप्त हो गई।

चमकी घर के भीतर आई और फिर चारपाई पर फिर गिर पड़ी। शराबी आँखों की मीठी मदिरा खारा पानी बनकर बहने लगी।

दूसरे कमरे में चिकोरा बेखबर सोया था। चमकी के दिल में आया कि चिकोरा से कह दे सारा किस्सा। लेकिन शीघ्र ही चमकी के दिल के भाव बदल गये। रोते-रोते सो गई वह, जाने कब।

दिन का अवसान हो रहा था।

×

×

×

×

चिकोरा गाँव की पगडण्डी पर चला जा रहा था। उसकी चाल में तेजी थी। खूँखार चेहरे पर शान्ति व्याप्त, आँखें रक्त-रंजित। आग के धधकने के पूर्व धुआँ उठ रहा था।

अपने उस्ताद की बेटी की मौत से बौखला उठा था वह। वह मैना को बहन की तरह मानता था ! बहन की मौत पर कौन दुखी नहीं होगा ? रह-रहकर उसका दिल प्रतिहिंसा की आग में जलने लगता। हाथों की मुट्ठियाँ बँधजातीं, होंठ फड़कने लगते।

गले में लपटे विकराल साँप को हाथों में ले लिया चिकोरा ने। फुफकार उठा भयानक साँप।

“टिकोरा !” उसके होठ बुदबुदाये—“समझता है दुनिया का हर इन्सान उससे हार मान गया है...गेहुँअन !”

टिकोरा की स्मृति से उसका अन्तर घृणा से भर उठा।

टिकोरा !

उस्ताद का हत्यारा टिकोरा !

मैना का खूनी टिकोरा !

परदेसी का लुटेरा टिकोरा !

साँप !

साँप ही तो है वह। करैत से भी ज्यादा जहर भरा है उसमें। चिकोरा का मस्तिष्क विचारों का तूफान लिये उड़ा जा रहा

था। उसके पग बढ़ते जा रहे थे। हाथ साँप के मुलायम चमड़ों पर अविराम गति से दौड़ रहा था।

चन्द मिनटों के बाद वह धिमान्ती के भोपड़ों के सामने था।

अन्दर सभी सँपेरे बैठे थे। वह भी अन्दर जाकर, उदास-उदास क्रोधित हो बैठ गया।

सभी के चेहरे पर घृणा थी। वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति टिकोरा के खिलाफ बैठा था। सभी भयानक दैत्य की मृत्यु के बारे में विचार कर रहे थे।

“हम बदला लेंगे बाबा !” एक सँपेरा उठकर खड़ा हो गया—
“गाँव के कानून के खिलाफ कदम उठाने वाले की गर्दन तोड़ देंगे हम....हमारी इज्जत और जान ज़मीन का ज़र्रा नहीं, जिसे कोई कुचल कर गुजर जाये....ऐसे लोगों की टाँग काट लेंगे हम !”

“अपने मन से कोई राजा नहीं बन जाता...हम उसे उस्ताद नहीं मानते तो उसे हुकुम चलाने का अधिकार नहीं...शाम को टिकोरा आये और जवाब दे...ऐसा क्यों करता है वह ?” दूसरा भी बोलकर बैठ गया।

इसी प्रकार साँपों से खेलने वाले सभी सँपेरे दिल का ज़हर उगलते रहे।

धिमान्ती और उसके सहयोगी पंच चुपचाप नये खून का जोश देख रहे थे।

आखिर तय हुआ कि टिकोरा को उनकी बातों का जवाब देना होगा। सभा बरखास्त हो गई। सभी सँपेरे चले गये टिकोरा को गालियाँ देते।

बैठा रहा तो सिर्फ चिकोरा। वह नहीं गया। धिमान्ती की बूढ़ी आँखों ने शाम के धुंधलके में टटोल कर पहिचाना।

बोला—“तू क्यों बैठा है बेटे !....कोई काम है...कुछ कहना चाहता है ?”

“हाँ !” छोटा-सा गम्भीर उत्तर दिया चिकोरा ने !

“बोल, क्या कहना है ?”

“टिकोरा का खून करूँगा मैं और सुनो....”

“यह तो सभी कहते हैं बेटे !” हँसते हुए कहा धिमानी ने ।

“पूरी बातें सुनो बाबा !....तब अपना फैसला सुनाना....सुनो कान खालकर—मैना को टिकोरा ने ढँस लिया..मैना मर गई, मर गई मैना !”—तेज आवाज थी चिकोरा की, मगर करुण ।

सुनकर बूढ़ा धिमानी काँप उठा । पैरों तले से ज़मीन खिसक गई ! बूढ़े तन में साँप लिपट गया जैसे ।

मड़ा नहीं रह सका धिमानी तो बैठ गया । चिन्ता से चेहरे की झुर्रियाँ उभड़ आयीं ।

“चुप हो गये बाबा !...अब हँस नहीं सकते तुम ?”

“चुप रह छोकरे !....” धिमानी का स्वर काँप रहा था, जैसे जमाने भर का भार शरीर पर लद गया हो ।

“चुप तो हूँ बाबा !....खामोश ही होकर तूफान पैदा करूँगा....बिना चुप्पी के आँधी उठ भी तो नहीं सकती, उठती भी तो नहीं !” कहा चिकोरा ने—“कुचला साँप दुश्मन को नहीं छोड़ता बाबा !....टिकोरा का पाप पूरा हो चुका है...”

“धीरज से काम ले बेटे !....हो सकता है कि टिकोरा बेगुनाह हो ?”

“साँप बेगुनाह नहीं होता बाबा !....आँखों से देखा है सब कुछ तो झूठ कैसे मान लूँ ?”

“मगर किसी काम में जल्दबाजी नहीं की जाती !....” धिमानी की आवाज पहले जैसी ही थी ।

“लगी आग को बुझाने के लिये जल्दबाजी ही बेहतर है.... नहीं तो घर जलने का भय रहता है....टिकोरा से डर गये हो बाबा तुम !...बूढ़े भी तो हो चले हो ?” व्यंग करता हुआ बोला चिकोरा।

सुनकर धिमानी जल उठा। कल के छोकरे को अपने ऊपर कीचड़ उछालते देख साँप बन गया बुजुर्ग।

“नादान छोकरे !...तू मेरी ताकत देखना चाहता है ?....बूढ़ा हो गया हूँ तो क्या, तेरे जैसे साँपों के दाँत तोड़ने की ताकत चली नहीं गई है....देखेगा मेरी ताकत ?” गरजा धिमानी।

“देखने का बखत नहीं है मेरे पास....नहीं तो देख लेता...” उठकर जाने लगा क्रोधित चिकोरा।

“चुपचाप बैठ !” धिमानी बादलों सा गरजा—“पहले तहजीब सीख, फिर नसीहत बाटना....”

चिकोरा के उठे पाँव बैठ गये।

बूढ़े का चेहरा क्रोध से जल रहा था, तमतमा उठा था। देखकर सहम गया चिकोरा।

“मुझे क्षमा कर दो बाबा !....बड़ी भारी गलती हो गई” धीमे से बोला चिकोरा।

“अब अकल आई है...”

“अकल तो आई बाबा !...मगर दुःख दूर नहीं हुआ है। तुम टिकोरा को बेगुनाह कहते हो....वह पूरा नाग है बाबा ! ऐसा साँप है वह कि मन्तर से भी बाँधा नहीं जा सकता....साँप के दाँत तोड़े जा सकते हैं, पर टिकोरा के दाँत तो उसके कलेजे में हैं....”

“चुप रह छोरे ! दुनिया में कोई बात मुश्किल नहीं....दिल के दाँत तोड़ने का भी औजार है...प्यार से यह दाँत आसानी से टूट सकता है....टिकोरा को कम मत समझ, बड़ा अकलमन्द है वह। उस्ताद का एक-एक मन्तर उसके साथ है...जरा-सा सुधर जाय तो

ऊपर चढ़ जाय....उस्ताद भी तो यही कहते थे। इसीलिये तो हमेशा ज़मा किया करते थे।...विकराल साँप को बश में करने से ही मणि मिलती है ...” कहकर धिमानी थोड़ी देर के लिये साँस लेने लगा।

तभी चिकोरा करुण वाणी में बोला....“मैना का क्या होगा बाबा ?”

“भूत की बात भूल जा...जो हो गया सो हो गया।...मैना अब नहीं आ सकती...” कहा धिमानी ने। बूढ़े गले में करुणा भर आई—“माना टिकोरा ने मार डाला मैना को, मगर टिकोरा को मारने से वह वापस नहीं आ सकती....टिकोरा की गरदन तराशने से उस्ताद भी नहीं लौट सकते....जा तू, मेरी बात मान....”

चिकोरा चला गया। धिमानी सर पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा।

X

X

X

जंगल के एकान्त में एक चट्टान की छाती पर बैठा चिकोरा कुछ सोच रहा था, शायद मैना के बारे में ही। आजकल तो वह मैना की मौत का ही मातम मनाया करता था हर घड़ी, प्रत्येक पल।

गले में साँप की माला पहने बैठा था वह मदारी। चेहरे पर बेचैनी और दिल में तूफान लिये। वह टिकोरा से बदला लेने की बात सोच रहा था। सोच रहा था कि जमीन पर सरकने वाले साँप की तरह जमीन पर चलने वाले इन्सान पर भी मंत्रों का प्रभाव होने लगे तो कितना अच्छा हो। अगर हो जाय तो टिकोरा को मंत्र फेंक कर मार डाले वह।

गले में लिपटे विकराल साँप को हाथों में ले लिया। और मंत्र से बाँधकर पृथ्वी पर छोड़ दिया।

सिद्धहस्त मदारी का सिखाया साँप फों कर उठा ।

उसके होंठ मंतर पढ़ रहे थे, आँखें साँप की आँखों पर थीं मगर दिल तो अन्तर में उठते तूफानों के बीच कलैया खा रहा था । उसके मन का पंछी टिकोरा के पास उड़कर चला गया था और उसकी गतिविधि पर गौर कर रहा था ।

थोड़ी देर पूर्व जो उसके ऊपर धिमाती की बातों का प्रभाव पड़ा था, वह अब धीरे-धीरे गायब होता जा रहा था । वर्तमान की स्थिति भूत की बातों को भूलने के लिये मजबूर कर रही थी ।

और नादान चिकोरा इस अक्त वर्तमान का भी छोड़कर भविष्य का निर्माण करने में मशगूल था ।

उसके दिल की बेचैनी बढ़ती जा रही थी । बाँते दिनों की घटनायें मन में साँप बनकर रेंग रहा थीं । मस्तिष्क के चित्रपट पर उस्ताद फेरई आये आर चले गये !—चमकू. लजारा, परदेसी सभी आये और रुके नहीं । थोड़ी ही देर में मैना भी आई और रह गई वह....जा नहीं सकी ।

“मैना !” चिकोरा का अन्तर चीख पड़ा—“मेरी अच्छी बहन मैना !...तूमे टिकोरा ने मार डाला....मैं लूंगा बदला तेरे खून का...”

“टिकोरा !” दाँत पीसकर बुदबुदाया चिकोरा—“समझता है कि बड़ी भारी ताकत है उसके पास....उस्ताद की दया पाकर शैतान अपने को नाग ही समझने लगा है....अपने फन अ नीचे दुनिया देखना चाहता है—हूँ !”

एक क्रूर-भाव से उसने अपने चेहरे को चमकाया । स्नोफलाक मुस्कान उसके भयकर हाँठों पर खल उठी और कमर में लटके महुवर को हाथों में लेकर हाँठों से लगाया ।

एक सुरीली आवाज से जंगल का कोना-कोना मदहोश हो

उठा। पत्ता-पत्ता कान खोलकर पीने-सा लगा उस स्वर-लहरी को।

पेड़ों की ढालियों में लिपटे साँप मदहोश होकर जमीन पर टपकने लगे।

एक साँप चिकोरा के शरीर पर आकर गिर पड़ा, काला-काला, बदन पर सफेद धारियाँ थीं उसके। मगर चिकोरा चौंका नहीं। उसकी उँगलियाँ अविराम गति में चलती रहीं। गाल फूलते-पिचकते रहे।

जमीन पर वह जहरीला साँप भी भूमता रहा फन उठाये।

महुवर बजाते-बजाते चिकोरा का चेहरा तमतमा उठा। मस्तक की नसें फूल आईं। पसीने की बूँदें पेसानी पर मोतियों की तरह चमकने लगी।

उसके कलेजे की आग धधकती रही और उससे प्रतिहिंसा की भावना लपटें बनकर उठती रही, जलती रही।

महुवर की ध्वनि से हवा शान्त हो उठी मगर चिकोरा का अन्तर अशान्त ही बना रहा। करार नहीं हासिल हुआ उसे तो बेकरार हो उठा।

वह पागल हो गया। होठों से लगे महुवर को बेदर्दी से उसने उठाकर जमीन पर पटक दिया। साँपों में हलचल-सी मच गयी। शान्ति भंग हो गई। वह साँप भी सजग हो उठा।

चिकोरा बौखला उठा था। जमीन पर पड़े साँप को उठाने के लिये उसने हाथ बढ़ाया।

तभी—

किसी ने रस्सी से उसके बदन को कस लिया। हिल भी नहीं सका वह। क्रोधित चिकोरा के गुस्से में घी का काम किया उसने। तेजी से जोर लगाकर खड़ा हो गया वह। बदन की तरफ

निगाह डाली तो उस रस्सी को देखकर मुँह से चीख निकलते-निकलते भी निकल नहीं पायी ।

करीब पाँच हाथ का काला-काला सफेद धारियों वाला विकराल साँप उसके बदन को कसे जा रहा था धीरे-धीरे ।

गनीमत थी कि उसके दोनों हाथ खुले थे ।

संयत हो उठा चिकोरा । उसके होंठ काँपे । मंत्र निकलने लगा ।

मंत्र पढ़कर चिकोरा । जमीन से धूल उठाने के लिए झुकने लगा तो—

“फों !” फुँफकार उठा साँप । झुक नहीं सका वह ।

और झुक नहीं सका तो कमर से एक कौड़ी निकाली उसने । कौड़ी को साँप के बदन में छुआ दिया । मंत्र से बँधी कौड़ी चिपक गई साँप के मुलायम बदन पर । बेबस-सा हो गया वह । चिकोरा ने उसकी गर्दन पकड़ ली ।

“अब कहो बेटा !” कहकर गाँव की तरफ चल पड़ा चिकोरा । रास्ते में सम्पू मिला ।

“कहाँ जा रहे हो चिकोरा !”

“तुम्हारे बाप का खून पीने !....हैं न मजे में ?” तेज स्वर था चिकोरा का ।

टेढ़ा जवाब पाकर चुप हो गया सम्पू । वह समझ गया कि ‘बाप’ से चिकोरा का मतलब टिकारा से है । तभी नजर नये साँप पर पड़ी, जिसकी गर्दन चिकोरा के हाथों में थी ।

“यह साँप तो बड़ा विषैला लगता है....कहाँ पा गए ?” पूछा सम्पू ने ।

“भगवान ने भेजा है, तुम्हारे बाप को ढँसने के लिए....” कहता हुआ आगे बढ़ गया चिकोरा ।

सम्पू देखता ही रह गया। वह समझ गया कि चिकोरा टिकोरा से लड़ने जा रहा है। शायद चिकोरा टिकोरा की हस्ती भूल गया है। जाते चिकोरा को देखकर हँस पड़ा सम्पू!

सम्पू!

गाँव का ही एक संपेरा था। टिकोरा का दाहिना हाथ बना था आजकल।

क्रोधित चिकोरा आज टिकोरा से लड़ने का इरादा लिये चला जा रहा था। आस-पास की सुध भूल, विक्षिप्त-सा बढ़ा जा रहा था। तभी—

“चिकोरा !”

किसी ने पुकारा मगर क्यों सुनने लगा चिकोरा ?—आकाश में नड़ने वाला पंछी जमीनी ज़र्रे की पुकार कैसे सुने ?

“चिकोरा !” पुकारने वाले ने तेज स्वर में पुकारा।

अबकी सुना। चिकोरा जैसे आकाश से जमीन पर गिर पड़ा लड़खड़ा कर। देखा तो धिमानी था। उसकी तरफ खांजभरी आँखों से देख रहा था।

“क्या है बाबा !”

“चल आ मेरे पीछे-पीछे...काम है एक....” बूढ़ी आँखों ने जवान दिल के भावों को पढ़ लिया था।

बिना कुछ कहा-सुनी के चिकोरा पीछे-पीछे चल पड़ा।

उधर चिकोरा के घर में कोई चोर की तरह चौकन्ना, सम्हल-सम्हल कर डग रखे हुए, शाम के धुंधलके का आवरण बदन पर लपेटे घुस रहा था।

अन्दर चमकी थी किन्तु बेखबर, छैला की याद में बेहोश।

सड़क की छाती पर चमचमाती हसीन मोटरकार भागी जा रही थी, सरपट। वायु का कलेजा बेतरह चाक हुआ जा रहा था। भागती मोटर के पीछे गर्द बादल बनकर उठ रही थी और फैलकर विलिन होती जा रही थी।

दौड़ती कार के गति के साथ अगल-बगल के बँगले होड़ ले रहे थे। ज्यों-ज्यों मोटर आगे भागी जा रही थी त्यों-त्यों आली-शान बँगले पीछे की तरफ दौड़ रहे थे। अजीब होड़ थी यह !

कार अमीरों की बस्ती के बीच से गुजर रही थी। यठ शहर का वह भाग था, जहाँ अँग्रेजों और दौलतमन्द सेठों के बँगले थे। शहर के कलरव से दूर, एक किनारे—शान्ति की गोद में।

डूबते सूरज की आखिरी किरण हसीन बँगलों को हसरतभरी आँखों से देख रही थी।

एक अजीब छटा, एक विचित्र आकर्षण बिखरा था चारों तरफ।

प्रत्येक बँगले के आगे एक खुशनुमा बाग हँस रहा था। फूलों के नन्हें-मुन्ने पौधे अपनी काया पर रंग-विरंगी सजावट लिए झूम रहे थे। शाम होत ही वहाँ के शौकीन बाबू अपनी-अपनी फुलवारी के बीच आकर सौरभ से कलेजा तर कर रहे थे।

कार उसी बँगले में से एक के आगे आकर रुक गई।

एक हसीन नौजवान उतरा। बदन पर कीमती रेशमी सूट खिल रहा था उसके। गले में टाई लहरा रही थी। प्रशस्त मस्तक

पर काले-काले बालों की लटें लोट रही थीं। होठों पर मुस्कान की रेखा और दिलफरेब चेहरे पर उत्सुकता के चिह्न थे।

निस्संकोच युवक ने बैंगले में प्रवेश किया।

उसकी उँगलियों में शोखी की एक लहर दौड़ी और उसने गुलाब के एक मासूम फूल को तोड़ लिया। फूल को नाक के पास ले जाकर युवक ने एक लम्बी साँस ली। सौरभ से अन्तर भर-सा उठा उसका।

बाग में और कोई बैठा नहीं था। वरामदे में आ गया युवक। 'कालिग बेल' पर उसका हाथ गया और तब बेचैन-सा स्वर फूट पड़ा—“एनी !....मिस एनी !”

अन्दर से कोई आवाज नहीं आई। क्षण भर बाद ही आपस में चुम्बन करते दरवाजे के बेजान पल्ले सिसक कर जुदा हो गये।

काली-काली आखों में शराब की मदहोशी, भूरे-भूरे लहराते बाल, पाउडर से लिपे-पुते गाल और पतले-पतले होठों पर गुलाब की गुलाबी लिये एक हसीन एङ्गलों-इण्डियन युवती बाहर आई।

देखकर युवक मुस्करा पड़ा। यही थी उसकी एनी।

“गुड इवनिङ्ग एनी !” कहते हुए युवक ने अपना हाथ आगे बढ़ाया मगर...

मगर एनी मुड़ चुकी थी, अन्दर जाने के लिए।

रुपेक्षा की चोट से तिलमिलाता युवक भी पीछे-पीछे चला। अन्दर जाते-जाते उसने पीछे से एनी की बाँह पकड़ कर अपने सम्मुख कर लिया।

एनी ने युवक के हाथों को झटक दिया।

“तुम बहुत नाराज हो डियर !” बोला युवक दुखी होकर....
“मैं तुमसे कुछ बातें करने आया हूँ।”

“I am very sorry चञ्चल कुँवर ! ममी इस टाइम में बाहर गया है....Why you came to me ?” पूछा एनी ने ।

“मुझे तुमसे मतलब है एनी !” चञ्चल आगे बढ़कर एनी के पास आ गया—“मैं तुम्हारा साथ चाहता हूँ...”

“हम आपका साथ नहीं दे सकता छोटी कुँवर ! आप जा सकती है !” एनी की आवाज तेज थी ।

अन्दर-अन्दर चञ्चल अपना अपमान देखकर गुस्सा हो रहा था । अगर उसकी माँ उसे बुलाने के लिये नहीं भेजती तो वह हरगिज नहीं आता एनी के पास ।

बोला—“Keep your temper Anne, I have some thing to tell you ...”

“No, no हम नहीं सुनेगा....I know you very well छोटी कुँवर !....तुम दगाबाज है !....You want to ruin your family...हम हरगिज साथ नहीं देगा !” एनी बोली और मुड़कर दूसरे कमरे में जाने लगी ।

“गुजरी बातों को भूल जाओ एनी !...मैंने अपना इरादा बदल दिया है....” बोला चञ्चल एनी के पीछे चलता हुआ—“अब तो भैया भी आ गये हैं !”

“What do you say man !....बड़ी कुँवर आ गई from heaven ? ...You want to befool me ?” एनी के चेहरे पर अविश्वास खिलखिला रहा था । उसने यकीन नहीं किया चञ्चल की बातों पर ।

जो इन्सान साल भर पहले अजगर द्वारा निगल लिया गया है वह कैसे वापस आ सकता है । यही सोच रही थी एनी । उसने सोचा, चञ्चल की यह कोई नई चाल है ।

“Believe me, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ...” कहा चंचल ने—“तुम्हें माँ और भाभी ने बुलाया है...”

“तुम True भी बोलती है छोटी कुँवर !—Strange !” व्यंग का तीर चलाती हुई बोली एनी ।

चंचल मुड़कर बाइर की तरफ चल पड़ा । वह वहाँ अब अधिक रुटना नहीं चाहता था ।

आकर वह अपनी कार पर बैठ गया । कार उसे लेकर भाग चली शहर की ओर ।

कार की गति के साथ उसकी विचारधारा भी दौड़ रही थी । पीछे की बातें सोचते-सोचते उसका मस्तिष्क उड़ने-सा लगा । एनी को एक दिन उसने ठुकरा दिया था और एनी ने आज उसे ठुकराया । कल की एनी, जो उसके बगैर क्षण भर नहीं रह सकती थी—उसी ने उसे ठुकरा दिया ।

कितना बुरा हो गया है चंचल ! घृणा का पात्र बन गया है वह ।

“बहुत बुरा हूँ मैं !” मन ही मन सोचकर चंचल ग्लानि से भर उठा । बाती बातों को भूलना चाह रहा था । अपने बिगड़े दिमाग का दूसरी तरफ ले जाना चाहता था मगर सफल नहीं हुआ ।

वह भाई की जान लेना चाहता था । भाभी को अपनी बनाना चाहता था । जिम भाभी ने उसे माँ का-सा प्यार दिया, बेटे की तरह दुलार किया....

रियासत की भूख ये परेशान चंचल मासूम ललित का भी दुश्मन बन गया । उस नहीं जान ने क्या बिगाड़ा था उसका ?

“उफ् !” चंचल ने एक हाथ से अपना माथा पकड़ लिया और एक हाथ से स्टेयरिङ्ग हिल पकड़े रहा ।

कार टकराते-टकराते बची। पागल-सा सोचने लगा चंचल—
उमे मर जाना चाहिये...

“तू सॉप है रे चंचल ! भाई की जान लेना चाहता था ..दूर हो मेरी नजरों से !” रानी साहिबा की आवाज उसके कानों में गूँज उठी। उसे हट जाना चाहिये अभी की निगाहों से, दुनिया की नजरों से उसे दूर, बहुत दूर भाग जाना चाहिये। वह पापी, दगाबाज, धूर्त है।

मॉटर भागी जा रही थी। मस्तिष्क उड़ा जा रहा था। अपनी परेशानी दूर करने के लिये वह होटल पहुंच गया। होटल आकर खूब पीया उसने। नशे ने साचने की शक्ति का जब बेकाबू कर दिया तो उसे राहत मिली। सिगरेट का कश खींच-धींच कर धुएँ के छल्ले बनाता रहा।

रात काफी गुजर चुकी थी मगर चंचल अभी तक होटल ही में था।

वारिस ने रात के नौ बजे आकर रानी साहिबा को इत्तना दी....“छोटे कुँवर हवाखोरी करके अभी तक वापस नहीं लौटे हैं, फाटक बन्द होने का वक्त हो गया है।”

उधर चंचल शराब के नशे में पड़ा था बुत और इधर घर के लोगों का नशा हिरन हो गया था।

अचल ने सुना तो उसे खोज लाने के लिये तैयार हो गया।

“माँ !...आप चिन्ता न करें मैं उसे खोज लाता हूँ।” कहा उसने।

“तू फिकर न कर...सिनेमा देखने चला गया होगा शैतान !... उसके सर का वह भूत तो मुझे कत्तई पसन्द नहीं है अचल !” रानी साहिबा बोलीं।

नौ-दस और ग्यारह-बारह बज गये...

रानी साहिबा के बूढ़े चेहरे पर चिन्ता के चिह्न नजर आने लगे। वह टहलती हुई अचल के महल की ओर बढ़ गई।

“अभी तक नहीं आया चंचल !” चिन्तित स्वर था रानी साहिबा का।

वे इस समय अचल के शयन कक्ष में थीं। सुनकर अचल भी सोच में पड़ गया। कविता भी विचारने लगी कुछ।

अचल ने वारिस को आज्ञा दी। रात के सन्नाटे में वफादार नौकर अपने मालिक की खोज में निकल पड़ा। साथ में मोटर भी थी और था शंकर झाड़वर।

परिचित होटल के आगे आकर कार रोक दी शंकर ने। वह जानता था कि इसके सिवा वह कहीं नहीं होगा। वारिस उतर कर होटल के दरवाजे के पास गया। बहुत पुकारने पर हरामखोर बेयरे की नौद खुली। अन्दर गया वारिस तो बेहोश मिला चंचल। उसने उसे उठाया और मोटर में लाद लिया।

रात के एक डेढ़ बजे के करीब महल पहुँच गया वारिस चंचल को लेकर। रानी माँ को शान्ति मिली। अचल और कविता भी सोने लगे।

“बहुत शैतान हो गया है चंचल !...शराब भी पीने लगा है....” अचल ने लेटे-लेटे कहा। कविता उसका पैर दाब रही थी।

“राजा का बेटा है न !...और दीजिये सिनेमा जाने के लिये पैसे !”

“चुप रहो कविता ! मैं बेकार की बातें सुनना नहीं चाहता....” धीमे मगर तेज स्वर में कहा अचल ने !

सुनकर स्तम्भित रह गई कविता। थोड़ी ही देर में अचल सो गया। वह भी धीरे से उठकर ललित की बगल में जाकर लेट गई।

रात का अँधेरा जवान हो गया था। कविता की आँखें झपने लगीं। नींद के भोके से पलकों के फाटक बन्द हो गये।

रात धीरे-धीरे खिसक रही थी। सबेरा होने में घड़ी भर बाकी रह गया था।

दम्पति आराम की नींद में बेहोश थे।

तभी—

करवट बदलते-बदलते जोरों से चीख पड़ा कुँवर।

कविता हड़बड़ा कर उठ पड़ी। ललित भी उठ बैठा। वह अचल के पलंग पर दौड़ कर आयी। हाँफ रहा था कुँवर। कविता ने अपना कोमल हाथ उसके मस्तक पर रख दिया। स्पर्श से वास्तविक लोक में आ गया कुँवर।

पति की परेशानी देखकर कविता विचलित हो उठी।

पूछा उसने—“क्या हो गया, बात क्या है ?”

“कुछ नहीं कविता, योही....सपना देखकर डर गया था मैं !” संयत-सा होकर वाला कुँवर—“बड़ा भयानक स्वप्न था—वही....वही सँपेरा मुझे साँप फेंक कर मारना चाहता था....मैं भाग रहा था और उसका साँप मेरे पीछे दौड़ा आ रहा था....साँप मेरे पैरों में आकर लिपट गया...मैं गिर पड़ा और चिल्ला उठा....”

“पानी पीकर सो जाइये आप।”

“अब तो सबेरा हो जायगा थोड़ी ही देर में...और दूटी नींद भला फिर क्यों आने लगी ?”

“आप की आँखों में नींद तो भर सकती हूँ....” कहा कविता ने—“मगर सपने के तार जोड़ने की क्षमता मुझमें नहीं....”

“भला कैसे सुलाओगी मुझे, लोरियाँ गाकर ?”

“हूँ....”

तभी घड़ी का अलार्म घनघना उठा। सुबह के चार बज गये थे।

टेबिल घड़ी की घनघनाइट ने ललित को भी जगा दिया था। आँखें मलता हुआ उठ बैठा वह।

अर्द्ध-जाग्रत अवस्था में ही बोला वह—“माँ, बालिस छेअमे गुमाने का कओ...”

कविता ने बिस्तर से ललित को अपनी गोद में उठा लिया और कुँवर से बोली—“आप भी उठियेगा या बिस्तर की गोद में ही पड़े-पड़े निदिया रानी का बुलाइयेगा....”

“निदिया रानी रुक करने लगी ?....तुम्ही आओ न !”

“जाने भी दाँजये, मैं....”

“मुझे ले चला माँ, बाबू जी का छोल दे !”

कुँवरानी के बोलते-बोलते ही बीच में ललित बोल उठा।

कुँवरानी ललित के साथ चली गयी तो अचल सपने की बात सोचने लगा। थोड़ी देर बाद वह भी उठा और शौचादि के बाद बैठक में जा बैठा।

डाक्टर दास आये और पैर के घाव की पट्टी बदल कर चले गये।

“वारिस !” बुलाया कुँवर ने।

“दजूर !” सुनते ही वारिस आ खड़ा हुआ।

“चंचल को बुला लाओ !”

वारिस ने तुकम तामील की।

थोड़ी देर बाद चंचल बड़े कुँवर के आगे नर झुकाये उदास-उदास, मौन खड़ा था।

“रात को कहाँ रुक गये थे चंचल !....बड़ी देर बाद लौटे ?” अचल ने पूछा। स्वर गंभीर था।

“.....” चंचल चुप ।

आजकल चंचल सभी की नजरों की ओट में रहता था । परिवार से अधिक सम्पर्क नहीं रखता था वह । कभी-कभी जाता भी तो अपनी माँ के महल में । वहीं माँ से हँसता-बोलता और दिल बहलाया करता । भाभी भैया के सामने तो एक अपराधी की भाँति जाता और क्षण भर हो में लौट जाता अपने महल को । दिन भर अकेला बैठता, सिगरेट के धुँएँ से अपना मन बहलाता उससे भी शान्ति नहीं मिलती तो रेडियो खोलकर गाना सुनने में तल्लीन हो जाता । कभी-कभी बीते दिनों की बात सोचता तो ग्लानि से भर उठता ।

कितना बुरा हो गया था वह ! सभी की जान लेकर मालिक बनना चाहता था । इसीलिये तो सभी उपेक्षा से देखा करते हैं । और....और बुरे की जरूरत किसी का भी नहीं उसे मर जाना चाहिये और तब वह मरने की ठान लेता मन में !

“कुछ बोले नहीं चंचल !” इम बार हँसकर कुँवर ने कहा—
“अरे, तुम खड़े हो, बैठो न !”

चंचल पूर्ववत् गम्भीर बैठ गया कुर्सी पर ।

सोच रहा था—क्या कारण बताये और वह बताये भी क्यों, सभी तो जान ही चुके हैं ।

चंचल के माँन से व्यथित-सा हो उठा अचल का हृदय ।

“जाओ चंचल !...तुम्हें बिगड़ने के लिए मैंने नहीं बुलाया है....जी ऊब गया था, साचा तुम्हें को बुलाकर कुछ बातें कर लूँ... एक भाई की साध और हो ही क्या सकती है ? कभी-कभी आकर बातें कर जाया करो !” कुँवर ने धीरे से गम्भीर स्वर में कहा ।

चंचल उठ कर चला गया । उसने सोचा, मज्जाक उड़ाने का भैया ने नया तरीका निकाला है । अचल के विकल हृदय को

परख नहीं सका चंचल । उसका मन सभी से दूर, दुनिया से दूर जाने के लिए उतावला हो उठा ।

चंचल के व्यवहार से चोट तो लगी अचल को मगर रहा चुप ही । वह नादान नहीं था । चंचल को अच्छी तरह समझ सकता था ।

अचल कमरे में धीरे-धीरे टहल रहा था, अपनी पीड़ा भुलाने के लिए । टहलते-टहलते ही बोला—“वारिस !...माँ को बुला ला तो....”

हुकम पाते ही दौड़ पड़ा वारिस रानी साहिबा को बुलाने । दरवाजे पर पहुँचा ही था कि किसी से टकरा गया वह ।

टकराने वाले का सम्हल कर देखा वारिस ने । बोल उठा—
“सरकार, आप !”

“You ghost ! देखकर नहीं चलती....” जमीन पर गिरे बेनिटी केस को उठाती हुई बोली एनी—“रास्कल !”

“वाईसिकिल कहाँ है हजूर ! यह तो मैं हूँ, मैं—वारिस !” हँसता हुआ बोला वारिस ।

एनी की अस्त-व्यस्त भावभंगी के ऊपर छाये क्रोध और अंग्रेजी जबान पर फिसलती हिन्दी सुनकर अपने आपका हँसने से रोक नहीं सका वारिस ।

“तुम हँसती, हमारा चांट देखकर...Blind man !... थोड़ी एटीकेट भी नहीं जानती....”

एनी अपने सफेद और मुलायम कपड़ों का गर्द झाड़ती और वारिस को बुरा भला कह-कह कर कोसती जा रही थी ।

“हम नहीं जानती बड़ी मेम ! कुँवर साहिब जानती...अन्दर हैं !” वारिस एनी की भाषा में बोल गया और जल्दी से उड़न-छू हो गया ।

जाते वारिस को एनी ने लाल आँखों से घूरा और दरवाजे का पर्दा हटाकर अन्दर चली गई। वहाँ अचल को सचमुच देखकर काँप उठी। उसका दोषी मन काँप उठा। चेहरे पर विचित्र भाव नाच उठा।

अचल सर नीचा करके किताबों के अक्षरों को आँखों से सहला रहा था। वह इतना तल्लीन हो गया था पढ़ने में कि एनी के आने की आदृष्ट तक न मिल सकी उसे।

खड़ी-खड़ी एनी पेशोपेश में पड़ी थी। कैसे बोले, क्या करे ?

आखिर हिम्मत बटोर कर धीरे से बोल उठी—“Good-morning बड़ी कुँवर !”

एनी का स्वर सुनकर अचल सजग हो गया। उसकी आँखें किताब की खयाली-दुनिया से हटकर वास्तविक संसार में आ गई !

और उसकी नजरों ने देखा—खतरनाक सौन्दर्य की गुड़िया उसके समक्ष उपस्थित थी। अपने कातिल को अचल भूल भी कैसे सकता !

“बैठिये !” पास की कुर्सी की तरफ इशारा करके कहा अचल ने।

छिपी-छिपी नजरों से कुँवर एनी को पखरने लगा। पहले-सा असावधान नहीं रहता था कुँवर अब।

इसीने तो उसके प्याले में जहर डाला था।

सौन्दर्य काले दिल का पर्दा है, आवरण है। ऐसा आवरण, जिसमें इन्सान भूल जाता है, खो जाता है, मगर अचल तो आकर्षण से बहुत दूर रहता था। भला वह कैसे उलझ सकता था, इस अनोखे जाल में।

“कहिए, कैसे आना हुआ ?....कोई नौकरी तो नहीं...”

“No, nothing of the kind...हम आपको देखने आया....” बीच ही में सहम कर बोल पड़ी एनी ।

तभी रानी साहिबा आ गई और पीछे-पीछे कविता आई ।

कुँवर और एनी उठकर खड़े हो गये ।

“अरे यह कब आई....कल क्यों नहीं आई बेटी !”

“कल के लिये माफी माँगता है हम Mother !”

एनी रानी साहिबा से माफी माँगकर कविता के पास गई ।

कविता लेकर उसे भीतर चली गयी । अचल और रानी साहिबा अकेले हो गये ।

कमरे में घुसते ही एनी कविता से लिपट गई । आश्चर्य के साथ बोली— ‘Sister ! बड़ी कुँवर कहाँ से आई, हमसे तो आप बोला था...’

“हूँ !...मैंने ठीक ही कहा था, अजगर के पेट में चले गये थे वे...और निकल भी आये, यही तो ईश्वर की लीला है !” बीच ही में बोल उठी कविता ।

My God !...हम तो दंग है Sister !”

कविता ने सारा कहानी एनी को बतलायी । सुनते-सुनते एनी चित्रलिखित सी हो गई । उसकी आँखें आश्चर्य में डूब उतरा रही थीं, चेहरे पर अनोखा भाव उगम-मिट रहा था ।

“तुम इधर आती क्यों न थीं ?...अरे, तुम रो रही हो एनी !—क्यों ?”

कविता ने देखा, एनी की काली-काली आँखें मोतियाँ उगल रही थी ।

“हम बड़ा दुखी हो रहा है...बड़ी कुँवर को Poison दिया था न !...हम छोटी कुँवर के बात में आ गया था....” दुखी एनी बोली—“हमको माफी बोलो Sister !...बोलो न !”

“अच्छा-अच्छा, कर दिया माफ !” कहा कविता ने ।

सुनकर एनी आश्चर्य से हुई । ग्लानि से भरे हृदय को शान्ति मिली ।

थोड़ी देर इधर-उधर की बातों से एनी को हँसा कर कविता बोली—“एक बात कहूँ, बुरा तो नहीं मानोगी ?”

एनी ने सर हिला कर कहा—“नो !”

“तुम चंचल से प्रेम करती हो ?”

“परेम—You mean love perhaps...करता था but not these days...छोटी कुँवर दगाबाज है !” एनी के स्वर से घृणा टपक रही थी ।

“दगाबाजों से मुहब्बत करना बुरा है ?” कविता एनी को देख रही थी ।

“Yes ! very bad...बहुत खराब !” एनी का जवाब था यह—“Dagger का अपनी heart में हम रखने नहीं माँगता....”

“दिल में खंजर रखा भी नहीं जाता एनी !” कविता बोली—“हाथ में रखा जाता है वह तो...और हाथ का खंजर घातक नहीं, मुसीबत में सहायक होता है....एक ही पेड़ में फूल और काँटे दोनों होते हैं...इन्सान के पास अच्छी-बुरी भावना होती ही है....चंचल बुरा था मगर अब तो नहीं है । उसका दिल जूते की उभरी कील नहीं जो तुम्हारे पाँवों में गड़ जाय...”

एनी मौन हो गौर से सुन रही थी ।

“मुहब्बत करना शायद तुम नहीं जानती हो....” कविता कहे जा रही थी—“धोखेबाज बुरे तो होते हैं मगर दिल जिसे एक बार अपना मान लेता है तो उसे छोड़ना नहीं चाहता....जिस्म के किसी भाग में फोड़ा हो जाय तो कोई उसे काट कर फेंक नहीं देता, नष्टर लगाकर ठीक किया जाता है....चंचल ने तुम्हारे साथ

ही धोखे का खेल नहीं खेला...वह तो पूरे खानदान का दुश्मन बन बैठा था...भाई की जान का भूखा, ललित के खून का प्यासा और मुझे हँसने के लिये तैयार था। अपने सुहाग और जिगर के टुकड़े की जान के भूखे का कोई नारी भला प्यार दे भी कैसे सकती है, किन्तु मैं चंचल का प्यार करती हूँ...है तो अभी नादान ही.... कुत्ता सहानुभूति पाकर पूँछ हिलाने लगता है और चंचल जैसा इन्सान प्रेम की चोट से विचलित नहीं होगा, यह तो असम्भव है एनी !....”

थोड़ी देर रुककर कुँवरानी एनी की आंर देखने लगी। देखने लगी कि उसकी बातों का प्रभाव क्या हो रहा है।

मगर एनी—कविता जैसी नारी को पहचानने की क्षमता नहीं थी उसमें, जो पति की मृत्यु का तूफान आने पर भी खून का घूट पीकर खामोश ही रही थी।

जो अपना सतीत्व तो लुटा सकती थी मगर उस माँ के धड़कते दिल को चोट नहीं पहुँचाना चाहती थी, यह कहकर कि उसकी कोख से ज़हरीले नाग ने जन्म लिया है।

जो हृदय में चुभे शूल को भी फूल की सेज पर सुला सकती थी।

नारी की सहनशीलता पराकाष्ठा तक पहुँच गई थी।

“मुद्बत सब कुछ कर सकती है एनी !....पुरुष की बुराइयों को नारी अपने आँसू से धोकर पावन बना सकती है !”

कुँवरानी के उपदेशों से एनी प्रभावित होती जा रही थी। उसके चाँदनुमा चेहरे पर पश्चात्ताप के निशान उभर पड़े थे।

“तुमसे मैंने वादा किया था कि तुम्हारे साथ पूरा-पूरा न्याय होगा...किया था न ?”

“हूँ !” एनी ने स्वीकारात्मक ढंग से सर हिलाया।

“अब भी सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ, सिर्फ तुम्हारे ‘हाँ’ और ‘ना’ पर निर्भर है यह....चञ्चल तुम्हें अब भी प्यार करता है.. सभी ओर से निराश इन्सान सहारा चाहता है....सबेरे का भटका शाम को घर आ गया है, दरवाजा खाल दा एनी ! उसे चले आन दो....मैंने माता जी से सब कुछ कह दिया है....चञ्चल अपने महल में है....जाकर मिल लो और अपना इरादा बताओ....” कहकर खड़ी हो गई कुँवरानी ।

पशोपेश में पड़ी एनी भी उठ खड़ी हुई ।

“हम चञ्चल कुँवर से बोलेंगे, जो आपने बोला...”

“जरूर !”

कुछ सोचते-भिन्नकते, हाथ के केश कां झुलाती एनी धीरे धीरे चंचल के महल की ओर चल पड़ी ।

X

+

X

X

रानी साहिबा के बिगड़ने की वजह से पलंग पर बद्दहवास-सा गिर पड़ा था चञ्चल । वह सोच रहा था दुनिया में उसका कोई नहीं । अपनी माँ ही ठोकर लगा दे तो दूसरों का क्या कहना ?

अचल के प्रति आज फिर उसके हृदय में दुर्भावना घर कर गई । थोड़ी देर तक वह सभी के बारे में सोचता रहा लेकिन उसे गलती किसी की मालूम न हुई । जहाँ देखता वहाँ उसे अपनी भूल ही पहले नजर आती ।

वही बुरा है !

भाई की जान का भूखा चञ्चल बुरा है ।

अपने खानदान का दुश्मन चञ्चल बुरा है, बुरा है ।

“उफ !” अपना सर पकड़ लिया उसने ।

बिचारों का तूफान, अतीत की घटनायें, आँधी बनकर उसके

मस्तिष्क में हलचल मचा रही थीं और सूखे-पत्ते की तरह उड़ा जा रहा था वह, उस भंभा-भंकोर में।

सोचते-सोचते चञ्चल का हृदय ग्लानि से भर उठा। उसे अपने आप से घृणा हो चली।

वह तकिये पर सर पटक कर रोने लगा। अन्तर की ग्लानि आसू की बूंदों में बदल गई।

कितना मूर्ख होता है मानव भी। जब उसे अपनी गलती मालूम हो जाती है तो जान देकर ही प्रायश्चित्त करना चाहता है। आत्म-हत्या करके अपने तमाम गुनाहों का खून करना चाहता है।

नादान इन्सान यह नहीं सोचता—खुदकशी खुद एक बड़ा पाप है और.. और वह अपने सर पर एक और बड़ा गुनाहों का पहाड़ रखकर मिट जाता है।

तब ?

दुनिया ऐसे इन्सान की मौत पर आँसू बहाने के बदले हँसती है। हमदर्दी दिखाने के बदले कीचड़ उछालती है।

उद्भ्रान्त मन को समझाना चाहा चञ्चल ने मगर समझा नहीं पाया और समझा नहीं सका तो दुनिया से दूर जाकर समझाने की सोचा उसने, अपने बिगड़े दिमाग को।

चेहरे पर एक चमक आई भयंकर, खौफनाक भयावनी !

उठकर खड़ा हो गया वह। बन्द आलमारी की ओर उसके पाँव बढ़े।

आपस में गलबाँही डाले आलमारी के बेजान और बेबस पल्ले, चीख कर अलग हो गए।

खुल गई आलमारी तो चञ्चल के हाथों में एक खौफनाक कम्पन हुआ। जीवन का आखिरी कम्पन ! काँपते हाथ घुस पड़े।

और जब बाहर निकला उसका हाथ तो पंजे में काली-काली मौत हँस रही थी।

आज वह चञ्चल का खात्मा कर देगा, फिर उसे कोई डॉट नहीं सकता, बुरा भला नहीं सुना सकता।

थोड़ी देर तक विज्ञान के उस छोटे-से खतरनाक आविष्कार को देखता रहा चञ्चल, देखता रहा—एकटक।

पागल मस्तिष्क की उलझी विचार धारा तूफान बन गई थी। हृदय में अजीब द्वन्द्व उठ खड़ा हुआ था। जिन्दगी कह रही थी—‘जियो’ और ग़्तानी कह रही थी ‘मरो’—मरकर प्रायश्चित्त करो, गुनाहों का खून करो।

जिन्दगी और मौत जमीन-आसमान की दूरी लिये खड़ी थी, एक विकट प्रश्न-चिन्ह बनकर। और चञ्चल इस प्रश्नको सुलझानेका प्रयत्न कर रहा था मगर उसे जटिल प्रश्न का हल नहीं मिल रहा था।

उसे जबाब देना होगा, देना ही होगा।

“उफ्!” बाँये हाथ से दुग्वते दिमाग को पकड़ लिया उसने। दाहिने हाथ के पंजे में पड़ी काली मौत को जोरों से दबाया। उसका पिस्तौल वाला हाथ मस्तिष्क की ओर बढ़ने लगा।

चारों तरफ की खिड़कियाँ बन्द थीं मगर पीछे का दरवाजा था खुला। खुले दरवाजे से हवा का तेज झोंका आया और...



और छोटी-सी पहाड़ी के पीछे, दिन भर का चमकता आफ-ताब मायूस होकर छिप गया। रात के काले हाथों ने दिन का गला घोट दिया।

आकाश की गोद में सुशनुमा चाँद हँस पड़ा ।

बड़ी अजीब है यह दुनिया भी और इसकी गोद में रहने वाला इन्सान तो इससे भी बढ़कर ।

इन्सान का काम है हँसना, हँसाना नहीं और दुनिया का काम है रुलाना, रोना नहीं ।

जमीन के जुगनुओं जैसे लाखों-करोड़ों तारे आसमान की छाती पर टिमटिमा रहे हैं ।

आकाश का चाँद हँस रहा है और जमीन का चाँद अँधेरी रात के एक कोने में मुँह छिपाये रो रहा है, सुबक रहा है !

घर के अँधेरे में चमकी अपनी चमक खोकर पड़ी थी, उसी तरह जैसे तूफान आने पर पत्ते बिखर जाते हैं, अपनी जगह छोड़कर अन्यत्र पड़े रहते हैं । चमकी का कलेजा आग बन कर धधक रहा था । सपनों का महल आँधी के भोकों पड़कर भहरा गया था । उसके अरमान पिघल कर आँखों के बादल बन गये थे । आज ही तो उसके मासूस कलेजे पर पहाड़ का एक टुकड़ा गिर गया था और उसकी चोट से दिल की धड़कन रो रही थी । बन्द हो-होकर भी चल रही थी ।

दिल के मीठे-मीठे खेल ने तबाह कर दिया था चमकी को अगर वह जानती होती कि मुहब्बत की जुदाई दर्द की कहानी और अशकों का समन्दर होती है तो वह कभी भी चल्फत की ठंडक कलेजे में रखकर आग नहीं पैदा करती । कितनी बड़ी गलती की उसने, काँटे को फूल समझ कर प्यार करने लगी तो तेज नुकीला काँटा उसकी छाती में चुभ गया और अब पछता रही है वह ।

जुदाई के सदमे से उसका दिल टूक-टूक हो गया था । गुजरे जमाने की मधुर-स्मृति मस्तिष्क के पर्दे पर उभड़-उभड़ कर सही

ज्ञान तन्तुओं को छेड़-छेड़ कर परेशान कर रही थी। विकृत होता जा रहा था उसका मन।

कितने मादक दिन थे वे !

हँसी हँसी में दिन बीत जाता और रात रंगीन सपनों में।

सोच नहीं पाती थी चमकी कि इस दुनिया में परदेसी छैला के अतिरिक्त और लोग भी रहते हैं। चिकोरा से भी बहुत कम बोला करती थी वह। अपनी सखी-सहेलियों को तो बिल्कुल भूल ही गई थी।

उसे आज मालूम हो रहा था अपने-पराये का अन्तर।

वह आज जान पा रही थी कि दिन के तारों की तरह होता है परदेसी का प्रेम !—रात के सपनों की तरह होता है बेदर्दी का प्यार !

सोच-सोचकर चमकी का मस्तक फटा जा रहा था। दिल बैठा रहा था। वह भूलना चाहती थी शीतल को मगर नादान को क्या मालूम कि जल्म धीरे-धीरे भरता है और भर जाने पर भी उसका दाग तो नहीं ही मिटता।

अपने बढ़ते आँसुओं में परदेसी की याद को बहा देना चाह रही थी वह। किन्तु बहा नहीं सकी और बहा नहीं सकी तो बेकल निगाहों से रात के अँधेरे में खोजने लगी शीतल की मूरत।

आँखों में बादल था उसके और दिल में अमावस की रात। आशा की एक किरण भी नहीं थी, जिसके आसरे अपने टूटे दिल को सहारा देती।

मामूली खटके की आवाज सुनकर भी चमकी चौंक-चौंक उठती। उठ खड़ी होती और पलकों के पट खोलकर, दरवाजे की ओर देखने लगती। उसे लगता कि उसका परदेसी, उसका छैला

लौट आया है। मगर उड़ा परिन्दा क्यों वापस आने लगा। किसी को देख धम्म से चारपाई पर टूटे तारे-सी गिर जाती।

अभी-अभी चिकोरा आयेगा, पूछेगा—“शीतल बाबू कहाँ हैं?”
तब क्या जवाब देगी चमकी। कैसे क्या कहेगी।

“उफ़ !...” चमकी ने अपना सर पटक दिया पथरीली ज़मीन पर और अपने आप बुदबुदाने लगी—

“मेरे छैला !...चिकोरा पूछेगा तो क्या जवाब दूँगी....क्यों न बताते गये तुम ! छलिया बाबू ! बेदर्दी रसिया !”

उसके सवाल का जवाब किसी ने नहीं दिया।

तभी—

किसी का प्यार भरा हाथ उसकी पीठ पर पड़ा। अनजान स्पर्श से चौंक पड़ी वह। घबराकर उठ खड़ी हुई और अपने भीगे नयनों को पोंछ डाला उसने।

अँधेरे में खड़ा व्यक्ति उसके उदास चेहरे को नहीं पढ़ सका।

“चिकोरा ! मेरे राजा ! ...छैला चला गया....चला गया वह परदेसा !” दौड़कर लिपट गई चमकी चिकोरा से।

“जाने दा रानी !...उसे तो जाना ही था एक न एक दिन.... आज ही चला गया...खैर !”

चिकोरा का स्वर सुनकर चमकी चौंक पड़ी, छिटक कर दूर हो गई। दौड़कर चकमक रगड़ा उसने और मशाल जलाया। राशनी से कमरा जगमगा उठा और....

और मशाल की रोशनी में चमकी ने देखा—अपने चाँद को, अपनी खुशी को !

दौड़कर उसके कलेजे से लग गई वह। उसके मन का अँधेरा आँखों का सागर और दिल का दर्द, चाँद की रोशनी से हँसी में बदल गया।

“तुम !” खुशी के तूफान में उड़ती चमकी के होठों पर इतना ही आ सका ।

“उँ-हूँ !....चिकोरा !”

“झैला !...मेरे बाबू !” चमकी की गोरी-गोरी बाँह उसके गले की माला बन गई ।

शीतल ही था वह ।

गाँव की गोरी का दिल चुराकर भागा जा रहा था शहरी चोर, मगर भाग नहीं सका । समुद्र में चलते जहाज का पंखी चारों तरफ उड़कर फिर जहाज पर आ गया ।

“चमकी !” बोला शीतल, उसे अपने आलिङ्गन में भरते हुए ।

“तुम लौट आये बाबू ?”

“हाँ !”

“क्यों ?”

“तुम याद जो कर रही थीं....कहो तो चला जाऊँ !”

“चमकी ने तुम्हें कब कहा जाने के लिये ?” चमकी के गले में आँसू आकर अटक गये—“मेरे झैला ! तुम चले गये तो रात का अँधेरा दिल में समा गया....आँखों में तुम्हारी सूरत तो थी मगर कलेजे से नहीं लगा सकती थी उसे...छू भी न पा रही थी, आँखों में छाये तुम्हारी हसीन चेहरे को । चारों तरफ तुम्हीं छाये नजर आते थे....मेरी आँखों में देखो....हैं न तुम्हारी सूरत !” कहते-कहते चमकी ने अपनी बड़ी-बड़ी पुरनम आँखें शीतल के आगे फैला दीं ।

पलकों की कोरों पर आँसू अटक रहे थे अब तक ।

फैली आँखों की ओर देखा शीतल ने । मदभरे नयन रोते-रोते सूज गये थे । मोती-सी चमकदार आँखें लाल-लाल हो गई थीं । चमकी का वह बेहाल हाल—बिखरे बाल, भीगी आँखें, उदास

चेहरा और गालों पर सूखे आँसू की धार—देखकर तड़प उठा शीतल। तड़प कर रह गया। एक शब्द भी जबान से निकल नहीं पाया।

वही तो था उस भयानक दृश्य का निर्माता !—

वही तो था खिजाँ का बेरहम भोंका, जिसने लहलहाते चमन की हरियाली लूट ली थी।

एक दिन के कुछ ही घण्टों में गुलाब का फूल जुदाई की गर्मी से झुलसकर मुरझा गया था।

“छैला !”

“.....” कुछ बोला नहीं शीतल। देखता ही रहा एकटक चमकी के चेहरे की तरफ।

शहर का चाँद गाँव के चकोर को पकड़ कर देख रहा था। देख रहा था कि कितना-कितना प्यार है चकोर के दिल में। परख रहा था कि कितनी जलन अन्तर्हित है चकोर के कलेजे में और—

चकोर।

चकोर के दर्द की कहानी, जो रोज-रोज अधूरी रह जाती है चाँद के चले जाने के बाद। और वह अपनी अधूरी कहानी की याद का आँसुओं से नहला-नहला कर, धो-धोकर सबेरा कर देता है। नया बिहान होते ही आँखें मूँदकर रात की—अधूरी कहानी को जबान पलकों की चादर पर सपने का रूप देखकर पूरा करना चाहता है। ख़ाब की हसीन दुनिया में चाँद को देख-देखकर दिल में लगी आग को संतोष की निर्मम साँसों से बुझाना चाहता है। मगर आग हवा के झोंके से और भी धधक उठती है, उठती ही जाती है। और जलता रहता है बेचारा चकोर !

“मेरे छैला !....ऐसे....ऐसे मत देखो मेरी ओर...तुम्हारी

इन्हीं नजरो ने पागल कर दिया है मुझे !....जादू मत करो बाबू!....फेर लो अपना मंतर !”

शीतल ने नजरे मुकायी नहीं । देखता रहा और चलाता ही रहा जादू !

चमकी बेहोश होती गई । बेसुध होने लगी वह । उसकी भींगी-भींगी पलकों के बीच की दूरी आदिस्ता-आदिस्ता कम होने लगी ।

बन्द हो गई पलकें ।

शीतल के अधर चमकी के अधरों की तरफ बढ़े ।

“बस करो बाबू !....मुझे सब कुछ मिल गया अब तो....” लड़खड़ाता स्वर था चमकी का ।

दोनों स्वस्थ होकर चारपाई पर आकर बैठ गये । साँप की चर्बी की मशाल जल रही थी ।

“चमकी तुम मुझसे प्रेम करती हो—सचमुच !” पूछा शीतल ने । वह खोज भरी आँखों से उसकी तरफ देख रहा था ।

“परेम-वरेम नहीं जानती बाबू ! तुम्हारे दगैर जी नहीं लगता मेरा, बस इतना ही तो खबर है मुझे !....तुम्हें देखते ही दिल धड़कने लगता है एक बात पूछूँ ?”

“पूछो !”

“तुम नहीं रहते हो तो दिल घबरा क्यों जाता है, रात नागिन क्यों बन जाती हैं, चाँद सूरज क्यों बन जाता है, पानी आग क्यों बन जाता है अलबेले !....चिकोरा के जाने पर ऐसा फुल्ल तो नहीं होता...बाबू ! अपना जादू वापस ले लो....किसी और पर डालो जाकर....मैं बरबाद हो जाऊँगी झैला, तुम्हारे चले जाने पर....मैं मिट जाऊँगी—किसी की जान लेना बहुत बुरा होता है....होता है न ?”

“.....”

चुप रहा शीतल । क्या जबाब दे चमकी को वह । सोच नहीं पा रहा था ।

चमकी धारा-प्रवाह कढ़ती जा रही थी—

“मेरी जान के ही भूखे हो तो ले लो पर....मुझे छोड़ दो... छोड़ दो मुझे बाबू मेरे !”

“चुप रहो चमकी !...बस करो अब !” शीतल ने चमकी के मुँह पर हाथ रख दिया । उसे जोरों से कलेजे से दबा लिया उसने उसका भी दिल रो पड़ा था चमकी के दर्द के स्पर्श से ।

“मुझे रोको मत बाबू ! कह लेने दो...” मुँह पर से शीतल का हाथ हटा दिया उसने—“दिल में बहुत-बहुत घाव कर दिये हैं तुमने...और दर्द से कराड़ रही हूँ तो हँसने को कहते हो ? .. चाहते हो साँप काटे और जहर भी न चढ़े !...कलेजा चाक हो जाय और खून का एक कतरा भी न निकले ?...यह नहीं होगा बाबू !...ऐसी अनहानी नहीं हो सकती....मेरे छलिया !...निर्माही परदेसी !” चमकी ने अपना सर शीतल का छाती पर पटक दिया । हिचकियाँ भरती-भरती बोली—“मेरी जान ले लो घोट दो मेरा गला...आँखें फाड़कर अपनी सूरन निकाल लो...”

“उफ् !...बस करो चमकी !” शीतल भी रो उठा—“मेरी कसम ! मत रोओ अब !”

शीतल की आँखों के आँसू चमकी के हाथों पर आ गिरे । जल उठी चमकी !

उसने भीगी-भीगी निगाहें ऊपर उठाकर शीतल पर डाली ।

“आग से आग नहीं बुझती छैला !...पहले अपनी आँखों को तो समझाओ....”

दोनों ने एक दूसरे पर छाये बादलों को पोंछा ।

आकाश साफ हो गया तो तारे चमक उठे। चमकी और शीतल गले-गले मिले। वियोग के क्षणों की आप-बीती सुनाने लगे दोनों।

थोड़ी ही देर में उदास-उदास आया चिकोरा ! बोला तो सभी से मगर खुश होकर नहीं। खाने के लिये चमकी ने कहा तो तबियत खराब का बहाना करके टाल दिया।

गमगीन चिकोरा ने गले में पड़ी साँप की माला को उतार कर हाथ में ले लिया और चारपाई पर लेट रहा। मंतर से बंधा साँप जमीन पर घृत्ताकार हो बैठा रहा फन उठाये।

चिकोरा को शान्त देखकर चमकी भयभीत हो उठी। तरह-तरह की चिन्तायें मन में साँप बनकर रेंगने लगीं।

“यह साँप तो नया लगता है मेरे राजा !...कहाँ पा गये ?” छेड़ा चमकी ने।

“हूँ !” करके रह गया चिकोरा। ‘कहाँ पा गये’ का जवाब नहीं मिला चमकी को।

थोड़ी देर में चमकी ने बेखबर नींद का दामन थाम लिया।

दूसरी तरफ शीतल भी लेटा था मगर चिकोरा बेचैनी से करवटें बदल-बदल कर सोच रहा था।

आज बूढ़े धिमांनी ने मन की नहीं करने दी। नहीं तो देखता वह टिकोरा की ताकत कितनी है। खैर ! साँप बिल में है, बाहर निकालना मुश्किल नहीं—सोचते-सोचते चिकोरा की आँखें भी झपकी लेने लगीं।

चिकोरा, टिकोरा के मारने का षण्यन्त्र रच रहा था। शीतल और चमकी सपनों की दुनिया की सैर में लीन थे।

और टिकोरा ? आँखों में वेदना के आँसू लिये जग रहा था अपनी झोंपड़ी में।

और मैना ? नयनों में शान्ति छिपाये सो रही थी टिकोरा की गोद में ।

मैना को गोद में लिये टिकोरा पुरनम आँखों से देख रहा था उसके भोले चेहरे पर छायाी मौत की छाया । आग उगलने वाली आँखें आज आकाश के मेघों का रस चुरा कर छलक रही थीं ।

मुहब्बत करने वालों की दुनिया भी अजीब । रंजोगन का बारिश से भीगी । खुशी की रोशनी का निशान तक नहीं । गम का अंधेरा छाया रहता है वहाँ । बाढ़ रे इश्क ! जिसका दामन थाम ले उसे तबाह करके ही दम ले ।

प्रेम के ताप से कठोर चट्टान चटक कर टुकड़े-टुकड़े हो गयी थी । छोटी पहाड़ी-सा दीर्घाकार टिकोरा भी उलकत की उलझन में उलझ गया था । रोम-रोम में संचित मैना की मधुर याद उसे वरबाद कर रही थी । और—

टिकोरा था मैना की मुहब्बत से मजबूर !

मैना की सूरत से विवश !

मैना की मौत से मृतप्रायः ।

टिकोरा का प्यार एक बार, सिर्फ एक बार मैना को अपनी पुकार सुनाना चाहता था । मैना की खामोशी से भी 'कुछ' सुनना चाहता था और चाहता था कि मैना उसे बिगड़े ही, उसे गाली ही दे मगर बोले वह, सिर्फ एक मरतबा !

पहले मैना उसे प्यार नहीं, उसका तिरस्कार ही करती थी तो बड़ा भला लगता था टिकोरा को और अब तो वह भी नहीं मिलता है उसे ।

वासना प्रेम का मूल है....

पहले टिकोरा मैना के हुस्न से खेलना चाहता था । उसे अपने

कलेजे से लगाकार वासना की भूख मिटाना चाहता था मगर अब वासना मिट गई है उसकी तो वासना की ओट में छिपा प्रेम उठ खड़ा हुआ है ।

“तुम नहीं बोलोगी मैना !....टिकोरा को हरा दिया तुमने... मेरे मन की न करा राना ! पर बोलो तो सही....पीठ मे छूरे का घाव किया है तुमने !...लो यह छुरा, एक-दो घाव कलेजे में भी कर दो ताकि देख सकूँ उसे...मैना !”

मगर क्यों गुनने लगी मैना ! मैना तो उड़ चुकी थी केवल बाकी था ग्वाली घोंसला !

वियोग की घड़ियाँ आशा के सहारे जीती हैं ।

और मैना के जीवन से मायूस टिकोरा भी उसके जी उठने का सपना देख रहा था । रोज-रोज तो क्या हर वक्त, प्रत्येक पल उसके अधरों पर मंत्र लोटा करता था । चौबीसों घण्टे तरह-तरह की जड़ी-बूटियों का प्रयोग कर मैना को जिलाना चाहता था । पर सब बेकार ! मैना की आत्मा साँप तो नहीं जो उसके मंत्र से बंध कर आ जाय !

आधी रात हो गई है...

भूखा-प्यासा टिकोरा हाथ में विकराल मणिधर लिये मन्त्र पढ़ रहा है । कई दिनों के जागरण ने आँखों में लाली भर दी है । भावभंगी उदास-उदास, अस्त-व्यस्त है ।

काँपते होंठ क्षण भर के लिये रुक गये जैसे पहाड़ के आगे आकर आँधी । हाथ के साँप को जमीन पर उतारा उसने । आज टिकोरा जीवन का अखिरी खतरनाक प्रयोग करने जा रहा था ।

हाथ में सात कौड़ियाँ ली उसने और बोला—“मैना ! आज उस्ताद का सिखाया अखिरी मंत्र पढ़ रहा हूँ....अपनी जान

देकर जरूर जिन्दा करूँगा रानी !” कहते-कहते चेहरे पर भयानक क्रूरता छा गयी ।

मंतर पढ़ा उसने । सातों कौड़ियों जमीन पर पड़े साँप की पीठ में चिपक गई । निश्चल साँप बौखला उठा । कौड़ी के स्पर्श से साँप के मुलायम चमड़े में आग-सी लग गई ।

फन उठा कर वह झपटा टिकोरा की ओर !

टिकोरा आँखें खोले साँप की आँखों में देखता रहा और मन ही मन मंतर पढ़ता रहा ।

काली रात नीरवता पीकर साँय-साँय कर रही थी । बाहर विपैले साँपों की फुत्कार-हवा कलेजे में जहर पैदा कर रही थीं । टिकोरा ने चुटकी भर भूल उठाकर साँप पर फेंका ।

खुले दरवाजे की राह उड़ चला साँप, जंगल की ओर ।

× × × ×

टिकोरा खतरनाक प्रयोग में जीत तां गया मगर मैना की मौत से नहीं ही जीत सका ।

मौत के अमृत से अमर मैना का शरीर अस्त-व्यस्त था । लेकिन टिकोरा अनभिज्ञ था इस बात से । बैठा-बैठा कुछ सोचने में तल्लीन था वह । तभी बाहर से किसी ने पुकारा—“उस्ताद !.... घर में हो....”

“.....” मौन रहा टिकोरा । सुना नहीं उसने ।

“उस्ताद ! अरे, ओ उस्ताद !” हाँक लगाता कोई व्यक्ति अन्दर घुस आया । मगर भूला-भूला रहा टिकोरा ।

मैना जमीन पर एक तरफ पड़ी थी । विचारों में लीन टिकोरा पास ही बैठा था और पास ही अंगों को समेट कर बैठा था विकराल विपथर भी और अब तो आने वाला व्यक्ति भी पास

सभी पास-पास तो थे मगर एक दूसरे से अनभिज्ञ अज्ञान ! किसी को आस-पास की खबर नहीं थी ।

“उस्ताद !...यह जो...”

“कौन !...तुम !...” कान के पास किसी का स्वर सुनकर बोल पड़ा टिकोरा । विचारों की शृङ्खला टूट गई—“कब आये सम्पू !”

“अभी ही तो...” कहा सम्पू ने—“यह जो मैना है न उस्ताद !...खराब होने लगी है....अब माथा-पच्ची करना बेकार है....फेंक दो इसे...गाँव वाले भी डर रहे हैं....”

“क्यों ?”

“कहते हैं मैना भूत बन गई है मर कर !”

“हा-हा-हा !” एक-ब-एक अट्टहास कर उठा टिकोरा । भयभीत हो उठा सम्पू—“मैना मर गई है....भूत बन गई है....हा-हा-हा.... गाँव वाले शैतान हैं सम्पू !”

“उस्ताद !” टिकोरा की वह विकृत भाव-भंगी देख काँप उठा सम्पू ।

“मैना मरी नहीं सम्पू ! सो गई है....और इसे अब जगाना ही होगा....”

“हाँ उस्ताद पर...” कहते-कहते रुक गया सम्पू ।

“पर क्या ?....बोल न !”

“मैना का शरीर बर्बाद है उस्ताद !...कोई दवा बना कर लगा दो तो बदन सही-सलामत हो जाय....”

“बना दे दवा !...लगा दूँगा पर इसे मरी मत जान सम्पू !... मैना ता जीती है, मर तो गया है टिकोरा !...शहर के परदेसी ने टिकोरा की जान ले ली...” कहते-कहते उसके चेहरे पर पैशाचिकता नाच उठी—“परदेसी की जान लेकर

छोड़ूँगा मैं...उस दिन मैंने माफ कर दिया उसे...पर अब माफ नहीं कर सकता...उसने मेरी दुनिया उजाड़ दी...मैना को छीन लिया उसने...खूनी परदेसी !—साँप !” दाँत पीसने लगा परदेसी को याद कर वह ।

“मुझे डर लगने लगा है उस्ताद !”

“किससे....किससे डरता है तू ?...क्या परदेसी से ?”

“नहीं, गाँव वालों मे....सभी खिलाफ हैं उस्ताद !”

“किसके ?”

“तुम्हारे !” कहा सम्पू ने ।

“हा-हा-हा....टिकोरा की ताकत इतनी कम नहीं सम्पू !....मुट्ठी भर गाँव वाले कुछ बिगाड़ नहीं सकते मेरा !...अभी मंतर से गाँव भर के साँपों को बाँध दूँ तो पिटारी में छिपे साँप निकल कर एक-एक को डंस लें और कोई उल्टी साँस भी न ले सकें...किसी की मिहरबानी से उस्ताद नहीं बना हूँ...”

“पर कोई तुम्हें उस्ताद तो नहीं मानता उस्ताद !....कहते हैं, परीक्षा लेंगे तुम्हारी !”

“टिकोरा के मुकाबले खड़ा होना आसान नहीं सम्पू !...लोग मेरी ताकत भूल गये हैं....उस्ताद भी हार कर मर गया तो गाँव के इन छोकरों की क्या बकत !”

“आज ही तो शाम का पंचायत बैठेगी...अगर हार गये तो ?”

“कभी हारा नहीं तो आज कैसे हारूँगा....अजगर साँप से भयंकर होता है पगले....” कहते-कहते टिकोरा के चेहरे पर स्वाभिमान की ओज छलक उठी ।

थोड़ी देर रुक कर बोला टिकोरा । इस बार उसका स्वर भारी एवं अतिशय गम्भीर था—“यह सब क्यों हो रहा है, जानते

हो सम्पू !....इसकी वजह है, मैना और वह परदेसी करैत !....दोनों ने मिलकर मुझे बरबाद कर दिया है....मगर रस्सी जलने पर ऐंठन बाकी है अभी...गाँव वाले किसके मंतर पर उछल रहे हैं जानते हों ?....तुम नहीं जानते होंगे मगर....”

“जानता हूँ उस्ताद !....चिकोरा के बल पर...चिकोरा नाग बन गया है, उसी के इशारे पर गाँव के साँपों ने फन उठाया है...”

“एक-एक की गर्दन तोड़ दूँगा सम्पू !....देखता चल तू....जरा मैना को ठीक तो हो जाने दे....सारी बुद्धि ता यही खा गई है मेरी !...ला, तेल इसके बदन पर लगा दूँ...” टिकोरा विवश आँखों से मैना की ओर देखने लगा, जो काली रात की नीरवता पीकर चुप थी ।

“इससे कुछ नहीं होगा उस्ताद !”

“चुप रह तू !...हुक्म तामिल कर....मुझसे अधिक जानता है क्या ?” तड़प उठा टिकोरा ।

उसका उद्भ्रान्त और विक्षिप्त मस्तिष्क किसी की बात बर्दाश्त करने का आदी नहीं था ।

सम्पू सहम गया टिकोरा की तड़प सुनकर । तेल लाकर मैना के मुर्दा शरीर पर मालिश करने लगा ।

साँप का जहरीला तेल, साँप के विष से भरी मैना के शरीर पर चमक लाने लगा । सूखी-सूखी चमड़ी मुलायम हो चली ।

“मेरा कहना माना कर सम्पू !...तुझे मंतर सिखलाकर पूरा सँपेरा बना दूँगा....अपने ही जैसा !” टिकोरा का स्वर स्वस्थ था मगर था भारी ।

“यह तो ठीक है....मगर इस तेल की मालिश से फायदा ?”

“फायदा !...परिन्दा उड़ गया पगले ! पर पिंजड़ा लेकर

नहीं...मारने वाला भाग गया मगर अपना हथियार छोड़ कर— इसी हथियार के जरिये कातिल का पता लगेगा....पिंजड़ा देख-देखकर ही दिल बहाऊँगा अब तो....कभी किस्मत ने पलटा खाया तो उड़ा पंछी वापस आ जायगा....खाली पिंजड़ा आबाद हो जायगा तब....हा-हा-हा !”

निराश प्रेमी मिलन की आशा का हाथ थामें, तड़पते दिल को, खोजती आँखों को तिनके का सहारा दिये जा रहा था। अतीत की कहानी को वर्तमान में खोज रहा था, अपना भविष्य पढ़ने के लिये।

नादान इन्सान !

अपना भला हमेशा ही सोचता है। सोचता है कि दिया बुझाने वाले तूफान में उड़ती हुई चिनगारी आयेगी और उसके बुझे चिराग को रौशन कर देगा। वह नहीं सोचता कि खिज्जों के भोंकों से बर्बाद, बचा-खुचा पेड़ का टूँठ भी न उड़ जाय आने वाली आँधी में।

“...कल चिकोरा मिला था उस्ताद !” मालिश करते-करते बोला सम्पू।

“तो ?”

“हाथ में जंगली विषधर लिये था....पूछा तो कहने लगा— तुम्हारे बाप का खून पीने जा रहा हूँ....यह सब तुम्हीं को कह रहा था वह...”

सुनकर तमतमा उठा टिकोरा। विकृत दिमाग में आग लग गई। बदन की नस-नस जल उठी। दिल में तूफान उठ खड़ा हुआ और वह जैसे तीव्र आँधी में उड़ चला।

“कहाँ है वह गेहुँअन !....कहाँ होगा वह लुचा !....चल तो....” चीख पड़ा टिकोरा। क्रोध से काँपता खड़ा हो गया।

“और यह....रोक दूँ मालिश !” हाथ में लगे तेल को दिखा कर पूछा सम्पू ने ।

टिकोरा की जलती आँखें मैना पर पड़ी । गम्भीरता से नशा उखड़ गया मगर खुमारी नहीं उतरी । क्रोध पानी बनकर बह चला । थरथरा उठे टिकोरा के पैर । उसकी उत्तेजना ठण्डी हो गई तो धम्म से जमीन पर बैठ गया ।

और मैना के शरीर पर अपना सर पटक कर आर्त्तनाद कर उठा—“तू....तू चुड़ैल बन गई मैना !....टिकोरा को मार ही डालेगी तुम मगर मरेगा नहीं यह टिकोरा....जी-जीकर तड़पेगा और तड़प-तड़पकर तड़पायेगा तुम्हें...”

उसके दिमाग पर पागल पन सवार हो गया था । कभी चीख-चीख कर हँसता वह और कभी हँस-हँसकर रोता । अजीब अवस्था होती जा रही थी उसकी ।

इधर वह पागल हो रहा था और उधर दिन का पागलपन खत्म हो रहा था । शाम हो रही थी गाँव वाले आज उत्सुक हो रहे थे टिकोरा की परीक्षा लेने के लिये !

शाम हुई ।

सभी तैयार होकर आये ।

बड़े से इमली के पेड़ के नीचे व्यग्र और उत्सुक संपैरों का गरोह एकत्र हुआ । प्रत्येक के गले में और हाथों में बिपैले गोहूँ-अन, करैत फुत्कार रहे थे । पञ्च अपने आसन पर आसीन थे । मशाल जल रहे थे । लोगों की उत्सुक आँखें किसी के आने का इन्तजार कर रही थीं । अजीब भाव साँप से खेलने वाले जन्तुओं के चेहरों पर उग और मिट रहे थे ।

टिकोरा अभी तक नहीं आया था और....और नहीं ही

आया टिकोरा !—सँपेरों में कानाफूँसी होने लगी । किसी-किसी ने कहा कि डर गया है वह !

मगर टिकोरा !

पागल, विक्षिप्त भूला-भूला सा किवाड़ बन्द किये, मैना के पास बैठा, पत्थरों से अपना सर फोड़ रहा था । खून बह रहा था उसके सर से लेकिन जैसे उसे फिकर ही नहीं । वह पागल था और पागल को अपने आपकी सुध कहाँ ?—पीड़ा और आराम की परिभाषा पागल भला क्या जाने ।

बगल ही में सम्पू आग जला कर दवा तैयार कर रहा था ।

अपने उस्ताद की हालत से हमदर्दी तो थी उसे मगर सहानु-भूति को कार्य-रूप में परिणत करने का साहस नहीं था । उदण्ड साँप को छेड़कर उसका कोप-भाजन नहीं बनना चाहता था वह ।

“हा-हा-हा !” टिकोरा अट्टहास कर उठा—“कोई है यहाँ ?.... है तो बोलता क्यों नहीं ?”

“उस्ताद !” सहमा-सहमा-सा स्वर था सम्पू का ।

“उस्ताद के बच्चे !....लुच्चा, बदजात !....इतनी देर से चीख-चीखकर गला फाड़ रहा हूँ और सुनता नहीं है तू ?....कमीना !” फुफ़कार उठा टिकोरा कुचले साँप की तरह । गरज उठा वह घायल शेर की भाँति ।

उसकी चौड़ी हथेली हवा में उठी । और—

चट ! चट !

चीख उठा सम्पू टिकोरा के वज्र सदृश हाथों के थप्पड़ ने जब उसके गालों का आलिङ्गन किया । मगर रहा खामोश, परिस्थिति समझ गया था वह ।

सम्पू को मार कर अपने सर के बाल नोचने लगा वह । गले के साँप को खींचकर जमीन पर फेंक दिया ।

उपेक्षा की चोट खाकर मणिधर उदड़ हो उठा। फुफकार कर दौड़ा वह टिकोरा की ओर मगर होशियार सम्पू ने दौड़ते साँप को मंतर से बांध दिया। बेजान होकर गिर पड़ा वह।

पागल टिकोरा उठ कर खड़ा हो गया। बढ़कर दरवाजा खोला उसने किवाड़ के पल्ले अलग हुए तो ठंडी हवा के झोंकों ने टिकोरा के विक्षिप्त दिमाग को प्यार से सहलाया।

आंखें फाड़कर देखा टिकोरा ने—बाहर आँधेरा मुस्करा रहा था। आकाश में तारे छिटक चुके थे।

“सम्पू शाम हो गई...आज परीक्षा है न मेरी....चलो चलें...लोग जुट गये होंगे...”

सम्पू के साथ टिकोरा गले में साँप की माला ढाले चल पड़ा।

मैना को घर में बन्द कर दिया था उसने ताकि भाग न जाय। मैना के मुर्दे शरीर पर भी विश्वास नहीं था उसे।

× × × ×

और इधर सँपेरों का क्रोधित समूह टिकोरा का इंतजार करते-करते थक गया था।

धिमान्ती सर झुकाये, गम्भीर होकर कुछ सोच रहा था।

चिकोरा भी खड़ा था बगल ही में, एक पेड़ का सहारा लिए हाथ साँप के मुलायम चमड़े पर चल रहा था उसका।

आज देखेगा वह कैसे बच जाता है टिकोरा।—कौन बचाता है उसे ?

अच्छा मौका है बदला लेने का। हजारों जन्तर-मन्तर के बीच साँप फँसने आ रहा था।

चिकोरा के चेहरे पर एक पैशाचिक हँसी आई तो होंठ सिफ

मुस्करा कर रह गये। पीछे की झाड़ी में छिपे शीतल और चमकी ने उसके दिली ख्यालों को पढ़ा।

“अभी तक आया नहीं टिकोरा !...बुला लाओ कोई !” धिमानी ने सर उठाकर कहा।

“हर गया है...वह नहीं आ सकता बाबा !...गुनहगार अपनी सफाई दे भी क्या सकता है...साँप काटकर भागना चाहता है....बुजदिल !”

“चुप रहो चिकोरा !...हस्ती के बाहर मत बोलो...बुजदिल होने का फैसला तो अभी हो जायगा...” किसी का क्रोधित स्वर सुनकर चौंका चिकोरा। आँखें खोलकर देखा उसने—सामने लाल-लाल लपटों-सा जलता टिकोरा खड़ा था। आगे बढ़ते हुए कहा टिकोरा ने—“लाये हो अपना साँप !...आ जाओ मैदान में....”

धिमानी कुछ बोले कि उसके पहले ही सिद्धहस्त संपेरे मैदान में उतर पड़े बाजी जीतने के लिए।

दो काले-काले साँप जमीन की छाती पर रेंग उठे फुफकार कर तो धरती का कलेजा काँप-काँप कर रह गया।

एक था टिकोरा का मणिधर !—किसी को काट ले तो उल्टी साँस भी न ले सके। जगा-जगाया मंत्र भी बेजान हो जाय। दवा-दारू का कोई असर नहीं उसके विष पर।

और दूसरा था चिकोरा का सफेद धारियों वाला साँप। जो संयोग से मिल गया था उसे। पाँच हाथ लम्बा, आँखों में क्रोध और बदन में फुर्ती, टिकोरा के विषधर से कम नहीं।

टिकोरा हटकर दूसरी तरफ बैठ गया, भीड़ से दूर।

उसका चेहरा तमतमा उठा था। भयानक काँपते होठों पर मंत्र चल रहे थे।

दोनों साँप तूफान बन गये थे। उलझे थे एक दूसरे से।

चिकोरा के साँप ने टिकोरा के साँप को कई जगह काट खाया ।

टिकोरा का मंतर कमजोर पड़ने लगा ।

भीड़ में खड़ा सम्पू धीरे-धीरे अन्धकार के आँचल से छिपते हुए टिकोरा की बगल में पहुँचा ।

बोला धीरे से—“यह क्या उस्ताद !....हार हो रही है यह तो...मनिधर कभी हारा तो नहीं किसी से, आज क्यों....”

“चुप रह !....आँखें मूँदकर देखता चल जो कुछ हो रहा है ।”

“उस्ताद ! मनिधर भाग गया...देखो-देखो....तो....आँखें खोलो उस्ताद !” घबड़ाया स्वर या सम्पू का

और टिकोरा आँखें बन्द किये पढ़ रहा था मंतर ।

उसका साँप मैदान छोड़कर भाग गया, पीछे-पीछे चिकोरा का साँप भी दौड़ा ।

देखकर अवाक् रह गया सम्पू । आश्चर्य से आँखें फट पड़ीं उसकी ! कहते-कहते भी कुछ कह नहीं पाया । मगर टिकोरा पूर्ववत् गम्भीर, मौन और निश्चल ! चल रहे थे तां सिर्फ उसके मंतर ।

“हा-हा-हा !” भयानक अट्टहास कर उठा चिकोरा—
“टिकोरा ! आज हार गये तुम !...आँख खालकर देखो तमाशा....”

“तमाशा देखो तुम !” टिकोरा की आँखें खुल गईं । लाल आँखों में लपटें उठ रही थीं—जरा-सी जीत कोई चीज नहीं चिकोरा !....अब देखो...”

“देखा है...मगर जरा-सी हार बहुत बड़ी हार...” कहते-कहते रुक गया चिकोरा, जैसे उसकी जवान को लकवा मार गया हो ।

उसने देखा—

टिकोरा का साँप उड़ता-उड़ता टिकोरा के सामने आ गिरा था । और उसका साँप !....और उसके साँप का एक नेवला टुकड़े-टुकड़े कर खून चाट रहा था मजे से ।

इतनी जल्दी यह घटना घट गई कि किसी आँखों ने देखा भी नहीं।

“जी भर कर तमाशा देख लो....अब जा रहा हूँ मैं!...कल के छोकरे हो तुम चिकोरा!...बहुत छोटे!”

कहकर जाने के लिये तैयार हुआ टिकोरा तो—

“रुको अभी....लौट जाने के लिये नहीं आये हो तुम!” कहते-कहते चिकोरा ने अपनी कमर के छुरे को हाथ में ले लिया और टिकोरा के आगे आ खड़ा हुआ—“तुम्हारा मंतर मेरे साँप को बाँध सकता है, इस कटार को नहीं!”

चिकोरा के हाथ में चमकते हुए छुरे को देखकर धिमानी चकित रह गया और आस-पास खड़े टिकोरा के विरोधी खुश!

पास की झाड़ी में शीतल के साथ छिपी चमकी का कलेजा धड़कने लगा। वह शीतल के पास खिसक आयी। हाथों में शीतल के हाथ को लेकर दबाया उसने। अजीब विह्वलता भरी थी उन हाथों के मिलन में।

चिकोरा दो कदम आगे बढ़ा। टिकोरा खामोश रहा, हाथ के साँप को सहलाता हुआ।

चिकोरा के हाथ में कटार काँप रही थी।

वह बिल्कुल पास आ गया टिकोरा के। दोनों के बीच सिर्फ पाँच हाथ की दूरी लेटी थी।

लोगों की आँखें, होनेवाली घटना का इन्तज़ार कर रही थीं।

“दुनिया से ऊपर भेज दूँगा तुम्हें....दुनिया में रहने लायक नहीं हो तुम....नीच, साँप!”

“चुप रहो चिकोरा!...” गरज उठा टिकोरा। भवें तन गई उसकी। आँखों में एक खूनी भाव जल उठा।

“चुप रहो तुम!...” चीख पड़ा चिकोरा।

उसके हाथ का छुरा सजग हुआ। वह झपटा टिकोरा पर और....

+ × × ×

और आजकल शीतल बहुत कम निकला करता था दिन में। चमकी के घर के आगे एक चट्टान की छाती पर जमा था वह। चमकी घर में नहीं थी शायद। दोपहरी थी। जंगली फलों को पेट में उतारने के बाद शीतल धूप सेंक रहा था। सामने ही एक साँप मुँह बाये मेढक लील रहा था।

जरा-सा मुँह और बड़ा-सा मेढक फिर भी साँप धीरे-धीरे उसे अपने पेट में उतार रहा था।

मेढक टर-टर के स्वर में आर्त्तनाद कर रहा था। जिन्दगी धीरे-धीरे मौत के समीप होती जा रही थी।

मेढक था विवश और साँप था अवश।

देखने में तल्लीन था शीतल। उसे आस-पास की सुध तक नहीं रह गई थी।

कोई आया और पीछे खड़ा हो गया मगर शीतल को कुछ पता नहीं लग सका।

फटी-फटी आँखों से देख रहा था वह, साँप और मेढक की हैरत-अंगेज लड़ाई।

आखिरकार आखिरी चीख मेढक के मुँह से निकली, एकदम आखिरी। मेढक की सारी काया पतले जहरीले साँप के बदन में घुस गई।

काँप उठा शीतल। उसका रोम-रोम भय से खड़ा हो गया।

“बाप रे!” अपने आप उसके होठों पर ये शब्द किसल पड़े।

“हा-हा-हा!” कोई भयावनी हँसी-हँस पड़ा।

चौककर शीतल उठ खड़ा हुआ। बिल्कुल डर गया था वह अट्टहास सुनकर। मुड़कर देखा—एक अनजान सँपेरा खड़ा था।

उसे आश्चर्य की आँखों से देखने लगा वह पर स्वर नहीं फूटे उसके मुख से ।

“डर गये बाबू !....यह तो एक मामूली खेल था....अजगर को आदमी लीलते देख लो तो जान ही निकल जाय....हा-हा-हा !” एक बार पुनः हँस पड़ा सँपेरा ।

“कौन हो तुम ?” धीमे से पूछा शीतल ने ।

“मैं....मैं हूँ—इसी गाँव का...नये उस्ताद का चेला....आज अकेले क्यों बैठे हो परदेसी !...चमकी कहाँ गई ? वह तो परछाईं बनकर रहती थी तुम्हारे साथ ?.. आज खोये-खोये क्यों हो ?”

कई सवाल एक ही साथ कर उठा वह खूँखवार सँपेरा । और एक भी सवाल का जवाब नहीं दे सका शीतल, शहरी परदेसी !

वह विचित्र सँपेरा को अकस्मात् अपने सामने देख घबड़ा गया था । सँपेरे के चेहरे पर पैशाचिक भाव देखकर अन्दर ही अन्दर काँप उठा शीतल मगर खामोश ही रहा । अपने भीतर के डरे भाव को बाहर आने नहीं दिया उसने ।

“अजी, मैंने पूछा—चमकी रानी कहाँ हैं....जल्दी बताओ, मुझे काम है...बहुत जरूरी....”

“मैं नहीं जानता....” छोटा-सा किन्तु टका-सा उत्तर दिया शीतल ने ।

“अच्छी बात है....फिर मिलेंगे....भूल मत जाना...मेरा नाम सम्पू है !....उस्ताद टिकोरा का ही शागिर्द हूँ—हाँ !”

कहते हुए चला गया सम्पू !

शीतल चिन्तित-सा घर के अन्दर जाकर बैठ गया । उसने जो भाव सम्पू के डरावने चेहरे पर देखा था उसे सोचकर काँप उठता था वह । अपने आप से पूछता वह—“आखिर क्यों ?” पर समझ नहीं पाता । मन्थर गति से सम्पू जा रहा था । तभी उसकी

आँखों ने दूर पगडंडी पर, जंगल की ओर से चमकी को आते देखा। लम्बे-लम्बे ढग भरता हुआ वह उधर को चला और पहुँच ही गया वहाँ।

बगल से निकलते हुए उसने चमकी को धक्का दिया। जवानी के ढगमगाते पाँव लड़खड़ा उठे। गिर पड़ी चमकी। धूल झाड़ती हुई उठ खड़ी हुई।

मुँह से निकला—“कमीना, लुच्चा, कुत्ता !”

सुनकर हँस पड़ा सम्पू। बोला—“क्या हो गया रानी, जो ‘आशीर्वाद’ की झड़ी लगा रही हो ? बहुत खुश हो क्या ?”

“देखकर नहीं चलते....अन्धे !” तड़प उठी चमकी।

“जियो जी जियो...” शरारत से हँसकर बोला सम्पू—
“आँखें तो उस्ताद कसम, दो हैं मगर तुम्हें देखते ही न जाने अन्धी क्यों हो जाती हैं ..इसमें मेरा दाँष कत्तई नहीं छबीली !... जरा अपनी आँखों से पूछ देखा...”

“चुप रहो जो....” चमकी फुफकार उठी।

“नागिन बनकर भय मत दिखा चमकी !” सम्पू भी गरम हो गया—“उस्ताद कसम ! मुझे किसी का डर नहीं...सीधे-सीधे एक दिन मेरी बन जा....नहीं तो....”

“नहीं तो, क्या कर लोगे तुम ?”

“करना चाहूँ तो अभी कर दिखाऊँ...देखती हो न—जंगल का रास्ता, यह सुनसान....अभी पकड़ कर गला टीप दूँ तो टें हो जाओ....चीख भी न सुने कोई....” कहे जा रहा था सम्पू—“अब भी मेरी बन जा तो ठीक—परदेसी को गले लगाकर सोती हो तो क्या डर नहीं लगता ?....सब कुछ जानता हूँ मैं, सारे गाँव में कह दूँगा....समझ रख....बोलो बनोगी मेरी सिर्फ..”

“तेरी बने मेरी जूती....जा-जा, जो करना हां कर लेना....”
कहकर चमकी गाँव की ओर चली गई।

सम्पू देखता ही रह गया। मदारी के हाथ से नागिन भाग ही गई।

“हूँ!....देखूँगा तुम्हें!” सम्पू के दौंठ बुदबुदाये। वह जंगल की तरफ चल पड़ा, पडयन्त्र रचता हुआ-सा।

क्रोध से जलती चमकी तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ी। तूफानी पैरों ने शीघ्र ही भोंपड़े के आगे ला खड़ा किया उसे। हाथ की गठरी फेंक दी उसने।

“छैला!....कहाँ हो जी?” तेज स्वर में पुकारा उसने।

“यहीं तो हूँ....दिखाई नहीं देता क्या?” पास ही लेटा शीतल बोला।

“देता तो है....आँखों में घाम समा गई है न, सो चौधियाँ रही हैं मेरी...कहो कैसे हां?”

“बहुत खराब!...देख लो न!”

“सच!” बोली चमकी और पास आकर शीतल की बगल आबाद की उसने।

“उसमें क्या है!” जमीन पर पड़ी गठरी की तरफ सकेत करके पूछा शीतल ने।

“बिसखोपड़ा और बिच्छू है....अचार बनाऊँगी....तुम तो खाओगे ही नहीं?”

“वह आया था...पूछ रहा था तुमको—”

“कौन?”

“अजी, मैं नहीं जानता...कह रहा था—मेरा नाम सम्पू है!” सहज ही में कहा शीतल ने।

सुनकर चौंक पड़ी चमकी। बोली—“अच्छा तो यहाँ भी

आया था वह...देखो जी, उससे मत बोला करो...बड़ा खराब आदमी है !”

“अच्छा !” कहा शीतल ने—“चिकोरा नहीं दिखाई पड़ा कल ही से....कहाँ गया है...जानती हो तुम ?”

“सदमा पहुँचा है उसे....हार गया न !....टिकोरा से भला पार भी कौन पा सकता है...मैंने लाख मना किया कि टिकोरा को मत छोड़ो । पर अपने मन की ही करता है वह....” कहते-कहते दुखी हो उठी चमकी—“जंगल में जाकर मंतर जगा रहा है... वहीं तो गई थी, समझाया...आज रात को आयेगा....”

“मन्तर कैसे जगाया जाता है....तुम तो जानती होगी ?” शीतल ने आँखों में उत्सुकता लेकर पूछा ।

स्वीकारात्मक ढंग से सर हिलाकर चमकी बोली—“मैंने भी सब सीखा है जादू-टोना...एकान्त में जगाया जाता है यह सब... और वह भी आधी रात बीते....घुटने भर पानी में खड़ा होना पड़ता है...मन्तर पढ़ते ही हजारों-लाखों साँप पानी में उतरा जाते हैं....काटने दौड़ते हैं सभी...जरा भी डरे कि जान गई...काट ही लेते हैं...किसी ने देख लिया तो सारा किया कराया मिट्टी...”

चमकी के कहने के ढंग से चकित था शीतल । रोम-रोम काँप रहा था उसका । लग रहा था कि चारों तरफ साँप लिपटे हैं उसके शरीर में । रोज ही अजीब-अजीब बातें देखने-सुनने को मिल रही थीं उसको ।

“अगर किसी साँप को पकड़ो तो हाथ में लेते ही लकड़ी हो जाय और छोड़ दो तो फिर साँप—समझे ?” कहते-कहते चमकी के चञ्चल हाथों ने शीतल की पीठ पर हलकी थपकी लगायी

चौंक पड़ा शीतल । तेजी से उसने चमकी के हाथ को भटका दिया ।

“नाराज हो गये ?”

“नहीं-नहीं...मैंने समझा....”

“कि कोई नागिन है...हा-हा-हा !” कोयल-सी-कूक उठी चमकी—“इतने दिन हो गये यहाँ रहते....मगर डरने वाली आदत नहीं गई तुम्हारी ?...”

“चमकी ! अगर चिकोरा छुरे से टिकोरा को मार देता तो....”

“तब तो अमन मिल जाता सारे गाँव को....मगर उसका वह साँप !....उस्ताद का है वह साँप, वैसा गाँव में किसी के पास नहीं....हरामी बीच में दीवार बनकर खड़ा हो गया था वरना टिकोरा तो नहीं ही बचता...”

इधर दोनों बात-चीत में व्यस्त थे। नधर जङ्गल में पड़ा चिकोरा साँपों से खेल रहा था। विक्षिप्त हो उठा था वह अपनी हार से। टिकोरा से बदला लेने का उपाय खोज रहा था और उसके साँप को अपने वश में करने का तरीका भी। अवश्य लड़ेगा टिकोरा से वह। उसके गले में लिपटा नाग ही ढँस लेगा और...

“मंतर तो रात में जगाया जाता है न ?” शीतल था।

“हाँ !” चमकी थी।

“तो अभी क्या कर रहा है जङ्गल में चिकोरा !”

“खोह में है....बड़ा डरावना है वह गुफा !...इतना अँधेरा रहता है वहाँ कि दिन-दोपहर में देखो तो आधी रात याद आ जाय....साँप बिच्छुओं से भरा है....मंतर पढ़कर वहाँ नहीं जाओ तो ढँस ही लें सभी मिलकर !”

मन ही मन गुफा की शकल आँखों के पर्दे पर बनाया शीतल ने और देखकर भय से काँप उठा।

“अजीब है यह देश चमकी !....मुझे पहुँचा दो शहर....लगता है, कुछ दिन यहाँ रहूँ तो बच नहीं सकूँगा....मौत की बात सोचकर

मस्तिष्क भन्ना उठता है...यहाँ के लोगों की सूरत देखता हूँ तो जैसे काटने दौड़ती है....और यह सम्पू जो आया था थोड़ी देर पहले वह तो धमकी ही देकर गया है...”

“क्या कहा हरामी ने ?”

“कहता था, भूल मत जाना मुझे परदेसी !...उस्ताद का शार्गिद हूँ मैं !”

“टिकोरा करैत जीत गया है तो सम्पू का सर आसमान पर चढ़ गया है....सांचता है, उसका कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता...उसके दाँत तुड़वा दूँगी....और देखो बाबू, जाने का नाम न लिया करो...मैं जिन्दा नहीं रह सकूँगी छबीले !....तुम्हें देख-देख कर ही तो जी रही है यह चमकी !”

इसी तरह की बातें करते रहे दोनों प्रेमी !—बातों-बात में ही दिन कब सो गया पता नहीं लग सका उन्हें । सितारे आकाश पर जल उठे । पूनम के चाँद ने बादलों के आँचल से पहाड़ी के छोटे से गाँव की ओर झुँका, जो रात आते ही उदास हो गया था ।

गाँव का गमगीन देखकर चाँद रो पड़ा ।

शबनम की नन्हीं-नन्हीं बूँदें चारों ओर मोतियों की तरह चमक पड़ीं । ऊपर खड़े चाँद ने जानना चाहा—रात-रात भर चुहल करने वाला यह गाँव आजकल क्यों मातम मना रहा है ? मगर कारण नहीं जान सका बेचारा सुदूर आकाश का पागल परिन्दा ! जमीन की बातों को क्या जाने आकाश पर बसने वाला चाँद !

चमकी और शीतल सोते-सोते जग रहे थे । दोनों की उर्नींदी आँखें चिकोरा का इन्तजार कर रही थीं ।

आधीरात के घड़ी भर बाद आया झुँकलाया-सा चिकोरा ।

आकर लेट रहा बदहवास-सा जमीन पर । मगर आँखों में नौद की एक भपकी भी नहीं झूल सकी ।

जिन आँखों में आग जलती हो, उनमें नौद की मदिरा का पहुँचना असम्भव था ।

दूसरे दिन—

चिकोरा स्नान करके अजगर की हड्डी के कंघे से बालों को सँवार रहा था । मन ही मन टिकोरा की हत्या का षड्यन्त्र भी रच रहा था ।

चमकी और शीतल घर में नहीं थे, शायद सुबह की हवा खाने जंगल में चले गये थे । तभी कोई आया । चिकोरा ने पलट कर देखा—होठों पर पैशाचिक हँसी लिये सम्पू खड़ा था !

देखकर जल-भुन उठा चिकोरा । मगर अपने अन्तर के भाव छिपा कर पूछा उसने—“कहो, कैसे आये सम्पू ! सबेरे-सबेरे कौन-सी जरूरत यहाँ तक खींच लाई ?”

“छैला, नजर नहीं आ रहा है और चमकी भी नहीं.... कहाँ गये हैं दोनों ?” बैठता हुआ बोला सम्पू । अपने आने का कारण एकदम ही उड़ा दिया उसने ।

थोड़ी देर ठहरकर बोला वह—“यह सब ठीक नहीं चिकोरा !”

“क्या ?....क्या ठीक नहीं है ?”

“यही सब....परदेसी को उसके घर भेज दो....गाँव वाले इसे अच्छा नहीं समझते...ऐसी-वैसी बातें सुनने को मिली हैं मुझे...”

चिकोरा के कान में सम्पू विष घोल रहा था । एक शंका पैदा कर रहा था उसके हृदय में ।

गाँव से जोरों से चर्चा फैल चुकी थी । सम्पू पर किसी को विश्वास तो नहीं था, पर उसकी बातों को सभी सच मान गये थे । लागों की आँखें तो देखती ही थीं शीतल और चमकी को हमेशा

एक साथ। इतना ही प्रमाण क्या शंका उत्पन्न करने के लिये कम था ?

आज चारों तरफ परदेसी छैला और चमकी के विषय की बातें बहार की तरह गाँव में फैल गई थी।

मगर चिकोरा से तो अभी ही सम्पू ने कहा था। वह तो दुनिया की चहल-पहल से दूर रहकर आजकल सिर्फ अपने दुश्मन टिकोरा को दफनाने का उपाय खोज रहा था निश्चल—खामोश।

सम्पू की बात सुनकर शंका की एक तीक्ष्ण लौ चिकोरा के अन्तर में जल उठी किन्तु शीघ्र ही उसका दिमाग कुछ और सोचने लगा। सोचने लगा कि शायद टिकोरा की चीख लेकर आया है यह करैत ! कोई नई चाल से परास्त करने आया है उसे यह नाग !

“तुम जा सकते हो सम्पू !...फजूल की बातों के लिये मेरे पास बख़्त नहीं....”

“फजूल की बात कहते हो इसे...उसूल के खिलाफ है यह सब....मेरा क्या, पञ्चों के आगे जवाब देना होगा तुम्हें !” कहता हुआ जाने के लिये उठ खड़ा हुआ सम्पू।

“दे लूँगा...”

“उससे पहले उस्ताद को जवाब देना होगा....” कहकर हँस पड़ा सम्पू।

“चुप रहो....” इस बार चिकोरा का स्वर घृणा से लबालब था—“उस्ताद कौन है इस गाँव में....जा सकते हो तुम....कह देना टिकोरा से, चिकोरा से भिड़ने के लिये तैयार रहे...आमने-सामने की लड़ाई में भले ही जोत ले, धोखे की लड़ाई में तो नहीं ही पार पा सकता...पागल भी तो हो गया है....”

टका-सा जवाब पाकर सम्पू मुँकला उठा और दाँत पीसता, पाँव पटकता चला गया।

वह सीधे टिकोरा के पास पहुँचा। टिकोरा मैना की लाश पर दवा लगा रहा था। जिस दिन से सम्पू ने यह दवा बनायी है, उस दिन से मैना के बदन पर चमक आ गई है। खराब होने से बच गई मैना। जड़ी बूटियों और विषैले साँपों के तेल से बनी औषधि ने मैना के खाली पिंजड़े को बचा लिया।

पास जाकर सम्पू भी चुपचाप बैठ गया।

टिकोरा अपने काम में व्यस्त रहा। बेजान शरीर की पूजा करने वाला पुजारी सजीव इन्सान के आने की खबर नहीं पा सका।

“तुम तो जीत गये उस्ताद !” खामोशी तोड़ी सम्पू ने।

“हाँ, तो...”

“मुझे तो आकाश का तारा मिल गया है उस्ताद !....तुम्हारी कसम, कमाल का मंत्र है तुम्हारे पास....चिकोरा बड़ा शैतान है...” मतलब की बात पर उतर आया सम्पू।

वह टिकोरा और चिकोरा को लड़ाकर चिकोरा को मारना चाहता था और उसके बाद तो रास्ता साफ था उसका। चमकी उसकी हो ही जायगी। चमकी की निखरती अदा पर कुछ ही दिनों से फिदा हुआ था वह और अब तो बीमारी काफी बढ़ गई थी—

“तुम्हारी शिकायत कर रहा था....कहता था—समझेंगे हम टिकोरा से...धोखे से मारने को कह रहा था वह !”

“किसे ?” मालिश छोड़कर टिकोरा ने सम्पू की ओर देखा।

“तुम्हें उस्ताद...तुम्हीं को तो...”

“हा-हा-हा !” सुनकर जोरों से हँस पड़ा टिकोरा—“आकाश के चाँद पर साँप का मंत्र चलाना चाहता है...आँखों से काजल

चुराने की हिम्मत है उसमें ?” कहकर फिर मैना को देखने लगा टिकोरा ।

मैना को देखते ही उसके हृदय में एक कसक, एक टीस पैदा हो गई । और तब भूल गया सभी बातें वह । उसकी उद्विग्नता बढ़ चली । क्रोध के स्थान पर दर्द आ खड़ा हुआ ।

थोड़ी देर गुमसुम रहने के बाद टिकोरा खिलखिला कर हँस पड़ा ।

पागलों की तरह अपने उस्ताद को हँसते देख, सम्पू अवाक्-सा उसकी ओर देखने लगा ।

“मेरा मुँह क्या ताकता है रे लुच्चे !...हँस,हँस न—हा-हा-हा ।”

“उस्ताद !” चकित स्वर था सम्पू का ।

“उस्ताद के बच्चे !...हँसता क्यों नहीं ?”

सम्पू हँसते-हँसते भी हँस न सका कि टिकोरा के चेहरे का भाव बदल गया ।

गम्भीर होकर उसने सम्पू से पूछा—“गाँव में तुमने कुछ देखा है सम्पू !”

“मेरे बाप ! देखा है....बहुत कुछ देखा है...तुम्हें जीतते देखा...लोगों को हारते देखा । तुम्हें उस्ताद बनते देखा और....”

“चुप रह....खाक देखा है तुमने...”बीच ही में रोका टिकोरा ने—“गाँव में कोई शहरी आया है ?”

“ओ, हाँ !...चिकोरा एक परदेसी को लाया है...बड़ा हसीन, खूबसूरत-सा !”

“बस कर....इस खूबसूरत बला को हटाना होगा गाँव से...शहरी नाग होते हैं सम्पू !...अगर किसी को डँस लें तो सारे मंतर छू मंतर हो जाय....मैना को देख, बरबाद कर दिया नाग ने...”

टिकोरा के भयंकर चेहरे पर क्रूर भाव आया । आँखों में पर-

देसी की आकृति नाच गई और जल उठा वह। हर एक शहरी टिकोरा की नजरों में साँप बन गया था। शहर का जर्जर-जर्जर उसका दुश्मन था। शहर का नाम ही उसके कलेजे में आग लगाने के लिये काफी था।

“चिकोरा को बुला सम्प ! गाँव के कानून तोड़ने वाले के लिये मेरे पास छमा की कोई गुञ्जाइश नहीं...”

कुछ ही देर बाद सम्प वापस लौटा।

टिकोरा मैना को कलेजे से लगाये अपने दिल की जलन, अपनी आँखों के आँसू और मुँह से निकलती आहों को संतोष दे रहा था।

सम्प बोला—“उस्ताद ! नहीं आया वह...बोला, फुरसत मिलने पर आऊँगा....”

खामोश रहा टिकोरा। वह तो मैना को गले से लगाकर अपने आपको भी भूल गया था।

“उस्ताद !” धीमें से पुकारा सम्प ने।

सुनकर टिकोरा ने नजर उठाई। आँखें पुरनम थीं।

“जाओ...भाग जाओ....किसने बुलाया तुम्हें....सम्प ! मुझे अकेला छोड़ दो !”

सम्प बिना कुछ बोले ही लौट गया अपने घर। टिकोरा मैना को प्यार करता रहा, दुलराता।

प्यार पाकर नासमझ जानवर भले ही बस में हो जाय मगर किसी की लाश तो जिन्दा नहीं हो सकती है। मगर यह कौन बताये टिकोरा को कि पत्थर पर सर पटकने से चोट के अलावा कुछ नहीं मिल सकता।

सम्प घर आकर चुप नहीं बैठा। चमकी को पाने के लिये तरकीब सोचने लगा।

उसके रास्ते का काँटा था झैला ! चमकी का मुँहलगा प्रेमी !
उमे तो रास्ते से हटाना ही होगा । मगर किस तरह ? यही तो
सोच रहा था सम्पू ! परदेसी जवान उसका तो कुछ बिगाड़ नहीं
सकता । मगर छोटा दुश्मन कम खतरनाक नहीं होता, यह जानता
है सम्पू ।

उसने सोचा, अगर सीधे से रास्ता साफ कर देगा शीतल तो
शहर छोड़ आयेगा वह । और उसके रास्ते की चट्टान बनकर
आयेगा तो निर्दयतापूर्वक उसे उखाड़ फेंकने में कोई कसर नहीं
रखेगा वह ।

थोड़ी देर खामोश होकर सम्पू ने एक चाल सोची और ठ
खड़ा हुआ । चाल चलाने के लिये चल पड़ा वह ।



सम्पू की लगाई आग की लपट पूरे गाँव में फैल चुकी थी ।
बूढ़े धिमानी के कानों तक भी गर्मी पहुँची । सभी का भला
चाहने वाला बुजुर्ग चिन्तित हो उठा ।

क्या ऐसा कभी हो सकता है ?

बेचारा परदेशी !—अगर चिकोरा को यकीन हो गया इस
बात पर तो वह जिन्दा नहीं रह सकता कभी !—सोचकर बूढ़े की
आँखों में करुणा आ बैठी । बूढ़ा दिल बेचैन हो उठा ।

धिमानी, जर्जर कांपती हथेलियों को सांप के बदन पर फेर
रहा था धीरे-धीरे । उसने चिकोरा को बुला भेजा है । आता ही
होगा अब !

चिकोरा आया तो—

“यह कैसा बवाल उठ खड़ा हुआ रे चिकोरा !” पूछा धिमानी ने गम्भीर होकर ।

“यह सब टिकोरा की चाल है बाबा !...उसी के मुँहलगे सम्पू ने आग लगायी है यह !”

“हो सकता है...सम्पू तो किसी और का नाम बता रहा था शैतान !”

“उसकी बातों पर यकीन न करो बाबा !...लुच्चा है वह तो....”

“लुच्चे तो तुम हो चिकोरा !...कोई भूठ तो कहता नहीं.... बाबा ! मेरी बात गलत निकले तो मेरी जान तुम्हारी—हाँ !” कोई पीछे से आकर गरज उठा । सम्पू ही था यह ।

सम्पू को देखकर चिकोरा का खून खौल उठा ।

मगर सम्पू बोलता ही गया—“चिकोरा ! तुमने अपने घर में भयानक साँप पाल रखा है....दूध पिला रहे हो तुम उसे मगर दूध साँप के जहर को मीठा नहीं कर देगा...”

चिल्ला मत छोरे !” धिमानी गरज उठा इस बार—“धीरे से बोल....सँपेरा साँप नहीं पालेगा घर में तो क्या छुछुन्दर पालेगा ?”

“मगर ऐसा साँप तो बहुत खतरनाक होता है बाबा !... जो काटे और पता भी न चले और जहर भी चढ़ जाय....किसी को ढँस लेगा किसी दिन तो हजारों-लाखों मन्तर बकाम हो जायेंगे...दवा-दारू कुछ भी असर नहीं करेगा...”

“किसी को ढँसा तो नहीं न ?...” धिमानी था ।

“ढंस लिया है उसने बाबा !...मेरे मुँह से सच बात मत निकलवाओ....सच सुनने में कड़वा लग जायगा किसी को....” कहते-कहते सम्पू ने चिकोरा की ओर देखा सहमी नजरों से ।

सुनकर चिकोरा को लगा कि यह व्यंग का तीर उसी के लिये छोड़ा गया है ।

गम्भीर मगर तेज आवाज में पूछा उसने—“तुम कहो... किसको डँसा है उसने ?”

“नहीं सुन सकोगे चिकोरा !...सुनने के पहले चुल्लू भर पानी खोल लो डूब मरने के लिये !” घृणा से भरा स्वर था सम्पू का जिसमें व्यंग का जहर भरा था ।

“जबान सम्हाल कर बोलो सम्पू !...बिच्छू घनकर डंक मारने की आदत छोड़ दो !”

“...तो सुन ही लो—चमकी को डँसा है उसने...कान खोलकर सुन लो कि चमकी को काटा है इसी शहरी नाग ने...”

“चुप रहो सम्पू !” ज्वालामुखी बनकर फट पड़ा चिकोरा । और—

चट ! चट !!

सम्पू के मुँह पर कई तमाचे जड़ दिये उसने । धिमानि हाँ-हाँ करता ही रह गया ।

तमाचा खाकर भी गम्भीर रहा सम्पू । बोला—“लग गया न बुरा...अब जाकर डूब मरो कहीं...”

इस बार खामोश रहा चिकोरा । उसका चेहरा लाल हो चठा था । दिल धू-धू जल रहा था ।

“तुम्हारे पास सबूत है रे छोकरे !”

“हाँ, बाबा !...अपनी आँखों देख सकते हो जाकर...नदी किनारे बैठे हैं दोनों...”

चिकोरा और कुछ नहीं सुन सका । उठकर दौड़ा नदी की ओर । धिमानि रोकता ही रहा मगर ज्वानी के तूफान को बूढ़ा पर्वत नहीं ही रोक सका ।

सम्पू का तीर ठीक निशाने पर बैठा था। ठठाकर हँस पड़ा वह।

छोकरे!...दूर हट आँखों के सामने से..." धिमानी ने डाँटा तो सम्पू हट गया वहाँ से।

चिकोरा के पैर आँधी बन गये थे और विचारधारा बेगवती नदी की धार। सम्पू का जहरीला स्वर उसके कानों में गूँज रहा था। दिल आग बन गया था। आँखों में ज्वाला धधक रही थी। चेहरे का पैशाचिक छाप उभर आई थी।

तो क्या सभी शहरी सॉप होते हैं? शीतल ने उसको अमानत पर ढाका ढाला है? नीच बन गया है परदेसी? चिकोरा का एहसान भूल गया है शीतल!

सोचता जा रहा था चिकोरा। शीतल को जिन्दगी दी है उसने और वह उसकी इज्जत पर कीचड़ उछाल रहा है। जीवन देने वाला जान भी ले सकता है। अगर बात सच निकली तो... शीतल की जान बेजान हो जायगी। चलती-फिरती मूरत को तोड़कर रख देगा वह...

चिकोरा आग बनकर शीतल को जलाने जा रहा था और... शीतल?...

वह चमकी के प्रेमपाश में दीन-दुनिया की सुघ भूले, गीन सपनों की गोद में सो रहा था।

चमकी और शीतल पहाड़ी नदी के कछार पर विहार कर रहे थे। नदी फलगान करती, इठलाती, बलखाती भागी जा रही थी। उठती लहरें दौड़-दौड़कर आती और युगल-प्रेमियों के मादक मिलन को भर आँख देखकर वापस लौट जाती, अन्तर में कसक और मूक अभिलाषा लिये।

“बाबू, अगर तुम चले गये तो....” चमकी ने उम्मीजित नेत्रों से शीतल की ओर देखते हुए कहा ।

“तो समझ लेना, रात का सपना था यह सब !...सपने की याद मादक होती है चमकी !” स्वर उन्मत्त था शीतल का ।

“नहीं मेरे रसिया !...जाकर सपना बनने की कोशिश न करना....चमकी बेमौत मर जायगी...मेरे छैला !” विह्वल हो उठी चमकी ।

“हमेशा मरने का नाम ज़बान पर न लाया करो रानी !... जाऊँगा तो तुम्हें भी साथ ले चलूँगा...चलोगी न ?”

“मेरे राजा ! मुझे कोई एतराज नहीं मगर चिकोरा ?—उसे भी ले चलोगे न अलबेले !”

“फूल का भार कितना भी क्यों न हो मग़्ग मादक और हलका होता है....पहाड़ उठाने की ताकत मुझमें नहीं चमकी !” शीतल ने चमकी के फहराते बालों को हाथों से सहलाया ।

“मेरे छैला !...तुम्हारी बात मेरे दिमाग में नहीं समायी.... तनिक सीधे बोला करो !”

शीतल के स्पर्श ने चमकी पर जादू करना आरम्भ कर दिया था ।

“बोलूँगा पर अभी नहीं...चलो, देर हो गई है रानी !... चिकोरा घर लौट आया होगा...”

“हा-हा-हा !” तभी भयानक रूप से कोई हँस पड़ा ।

शीतल और चमकी चौंक पड़े । उठकर खड़े हुए, पलटकर देखा तो आसमान में उड़ते-उड़ते ज़मी पर आ गिरे ।

चिकोरा था वह ।

“तुम्हारे पास ही आ गया हूँ बाबू !” बोला वह ।

“मेरे रसिया...कब आये हो तुम ?” कहती हुई चमकी चिकोरा की ओर बढ़ी ।

“रसिया !...हा-हा-हा...रसिया तो तेरा छैला है, कमीनी कहीं की—हट !” कहकर चिकोरा ने एक जोरदार धक्का मारा चमकी को । बेचारी ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ी ।

गिरी चमकी को उपेक्षा से देखता हुआ बोला चिकोरा—
“दगाबाज औरत !...मेरा जिस्म छूकर गन्दा करने की ताकत तुझमें नहीं...नागिन !”

चमकी की फिकर छोड़कर खूँखवार सँपेरा हाथों में विकराल काला-सा साँप लिये शीतल की ओर बढ़ा ।

भयभीत हो उठा शीतल । बोला—“चिकोरा भाई !”

“भाई ! हा-हा-हा....परदेसी बाबू ! यह रिश्ता इतना आसान नहीं कि निभा सको तुम !...रिश्ता निभाने की खातिर ही तो रोका था तुम्हें....अगर जानता कि शहरी आग लगाना ही जानते हैं तो यह नौबत ही नहीं आती....जहर उगलने के पहले गला टॉप कर रख देता तुम्हारा....”

चिकोरा शीतल की ओर बढ़ा जा रहा था । दोनों के बीच की दूरी कम होती जा रही थी—

“मगर आज तुम भाग नहीं सकते शहरी साँप !...आँखों से देखे खेल ने तुम्हारी मौत ला दी है...”

चिकोरा ने हाथ के साँप को सजग किया ।

“मेरे राजा ! गजब मत ढाओ...बेकसूर है छैला !” चीख पड़ी चमकी और दौड़ी चिकोरा को रोकने ।

“खबरदार !...हरामी ! पास न आना....छैला नहीं छलिया है यह तो...यह साँप देखो शीतल बाबू !” कहता हुआ चिकोरा शीतल

की बगल में पड़ी चट्टान की छाती पर बैठ गया—“बड़ा खतर-नाक !....इसका खेल नहीं देखा है तुमने, देख ही लो आज....”

“क्या कह रहे हो चिकोरा...आज क्या हो गया है तुम्हें ?”

शीतल सँपेरे के भावों को पढ़ रहा था ।

“नादान न बनो बाबू....जानता हूँ कि शहरी लोगों की जवान में मीठापन रहता है...बदन गुलगुन और चेहरा चाँद जैसा....पर जहर भी कम नहीं होता उनके भीतर....”

“मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है चिकोरा !....मुझे पहुँचा दो....मैं चला जाऊँगा !”

“हा-हा-हा, नासमझ बाबू !....जरूर पहुँचा दूँगा...ऐसी जगह कि वापस नहीं आ सकोगे फिर !”

चिकोरा ने साँप को जमीन पर छोड़ा । उसका चेहरा उत्तरोत्तर भयानक हाँता जा रहा था । उसने नीचे झुककर चुटकी में धूल उठायी तो—

“यह मत करो अलबेले !....छैला चला जायगा....आज ही, इसी बख्त...” दौड़कर चिकोरा को पकड़ लिया चमकी ने । चिकोरा ने बैठे ही बैठे चमकी की छाती पर एक लात मारी तो गिर पड़ी चमकी ।

चुटकी की धूल पर एक फूक मारी चिकोरा ने और....

किसी की चीख से जंगल का कलेजा काँप उठा ।

जमीन पर पड़ी चमकी ने पड़े-पड़े ही देखा—शीतल के पैरों में विकराल साँप मौत बनकर लिपटा था और उसके पैरों को धीरे-धीरे कसता जा रहा था ।

“चिकोरा !” किसी ने पुकारा ।

चिकोरा ने चारो ओर देखा, कोई नहीं था । चारो ओर देख कर उसने चीखते शीतल पर निगाह डाली तो हक्का-बक्का रह गया ।

शीतल के पैरों में लिपटा साँप भाग गया था कहीं ।

किसी ने साँप पर मंतर डालकर भगा दिया था । हैरान आँखों से चारों तरफ देखने लगा चिकोरा तो देखा उसने कि एक झाड़ी से 'कोई' हाथ के इशारे से बुला रहा था ।

दौड़ पड़ा वह उसी ओर, बेतहाशा !

और जब झाड़ी वाले आदमी को अपने साथ लेकर वापस आया तो जगह खाली थी । चमकी और शीतल का नामानिश्चान तक बाकी नहीं रह गया था, जिसके जरिये वह पता लगा पाता ।

“भाग गये दोनों !” दाँत पीसता और हाथ मलता हुआ बोला चिकोरा ।

“मगर दुनिया से बाहर नहीं !” साथ वाले आदमी ने कहा ।

×

×

×

चिकोरा हैरान-परेशान था चमकी और शीतल की खोज में । पलक मारते ही क्या हो गया, सोच-सोचकर चकित हो उठता था वह ! और अपनी हार पर क्रांतित भी ।

सम्पू के पास बैठा है चिकोरा । दोनों में दोस्ती हो गई है आजकल । सम्पू की बात सच निकली तो चिकोरा का विश्वास टूट हो गया है उसके प्रति । सम्पू चिकनी-चुपड़ी बातों का जहर चिकोरा के हृदय में भर रहा था, अपना रास्ता साफ करने के लिए ।

चिकोरा को क्या पता कि सम्पू कोई मामूली खिलाड़ी नहीं । वह तो अपना मैदान साफ कर रहा था धीरे-धीरे । सम्पू के मन की ही बातें हो रही थीं मगर शीतल और चमकी के गायब होने से उसके दिल में भी एक भय समा गया था ।

“आखिर कहाँ जा सकते हैं....कौन है इस गाँव में जिसने

मेरे खिलाफ कदम उठाया है ?” कुचले साँप की-सी दशा हो रही थी चिकोरा की।

“उसे खोजना ही होगा !....नहीं तो हो सकता है धोखे में तुम्हारी मौत जल्दी आ जाय !” सम्पू ने कहा।

“तू ही खोज दे सम्पू !....बड़ा एहसान मानूँगा तेरा...उल्टे मैंने तुम्हें ही मार दिया था कल...मुझे क्षमा कर...परदेसी सच-मुच साँप था...” कह रहा था चिकोरा—“शहरी नाग भाग गया सम्पू !....जंगली नाग शहरी नाग को काटने चला तो किसी संपेरे ने बचा लिया उसे !....छैला के भागने का अफसोस नहीं, जितना चमकी के चकमे का है—अगर वच्च हाथ में आ गये तो जिन्दा न छोड़ूँगा...उस वखत तू भाड़ी से न बुलाया होता तो यह गजब न हुआ होता...खैर... ! अब तो हाथ मलना ही रह गया है...मैं लुट गया सम्पू ! तू चाहे तो बचा ले....कहीं से खोज निकाल उसे देख किस बिल में छिपा है जाकर...मरोड़ उसकी...”

सम्पू मन ही मन मुस्करा रहा था। आवेश में भरा चिकोरा बौखला गया था।

“मेरी मति तो भ्रष्ट हो गई सम्पू !...खोजते-खोजते हार गया पर पता नहीं किस खोह में, किस बिल में घुसा है लुच्चा ! हरामजादा मिलता ही नहीं...” चिकोरा क्रोधभरी आवाज में बोला।

“अजी, हिम्मत क्यों हार रहे हो चिकोरा !...सम्पू कोई कच्चा खिलाड़ी नहीं...उस्ताद कसम ! आँख का काजल चुरा कर न ला दूँ तो कबो...हवा को पकड़ कर कैद कर सकता हूँ...यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है...आज जरूर पता लगा कर छोड़ूँगा।” पानी पर चिकोरा को चढ़ाते हुए बोला सम्पू—“बेफिकर रहो

तुम...तुम्हारे लिये जान तक दे सकता हूँ—समझे !” कह कर उठ पड़ा वह बेदिल सँपेरा ।

हँसते हुए सम्भू ने जोरों से अपना हाथ चिकोरा के कंधे पर पटका । सहारा मिल गया चिकोरा को । बैठते दिल को एक शक्ति मिली । बोला—“तो ठीक है....” और आगे कुछ नहीं बोल सका वह ।

दो भयानक दैत्यों की बात-चीत खल्लम हो गई दोनों ने अपनी-अपनी राह ली ।

मगर चमकी और शीतल ?

भूले-भटके प्रेमी ! राह खोजने में लगे थे । खोज रहे थे उस देश की राह, जो इस बेदर्द दुनिया से दूर बसा हो, जहाँ इन्सान का नाम, जिन्दगी के कानून और मौत का इन्साफ तक न हो ।

गाँव की एक भोंपड़ी, जो पता नहीं कब से एक किनारे खड़ी खड़ी दुख-सुख की साँस लेते-लेते जीर्ण-शीर्ण होकर जी रही थी, अपनी मौत की जिन्दगी को जिलाती जा रही थी किसी के जीवन की रक्षा करने के लिये ।

यह बूढ़े धिमानी की बूढ़ी भोंपड़ी थी । उजड़ी भोंपड़ी की छाया में दो व्यक्ति बैठकर धीरे-धीरे बातें कर रहे थे । चेहरे पर निराश और भय के निशान चमक रहे थे । खर-पत्ते की आवाज भी उनको डराने के लिये काफी हो जाती थी । भोंपड़ी का द्वार-अन्दर से बन्द किये बैठे थे दोनों ।

दूर से जर्जर और अनुभवी बुढ़ापा लिये धिमानी, अपनी भोंपड़ी की ओर आदिस्ता-आदिस्ता आ रहा था । उसने दूर से ही अपने बचपन के साथी को मायूस नजरों से देखा, जो अब तक साथ दिये जा रहा था । इसी हमदर्द भोंपड़ी की गोद में

उसका बचपन जवान हुआ था और इसी के दामन में जवानी बूढ़ी हो गई है उसकी ।

मंजिल समीप देख धिमान्नी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगा । तभी—उसे अपनी भोंपड़ी के बाहर किसी की आकृति हिलती-डुलती नजर आई । सफेद हुए भौंहों पर बल डाल कर पहचानने की कोशिश करने लगा धिमान्नी पर बूढ़ी आँखों की रोशनी ने साथ नहीं दिया उसका ।

कमान की तरह कमर को लाठी का सहारा दिए जल्दी-जल्दी अपने घर के आगे पहुँचा वह । मगर तब तक 'कोई' भाग चुका था । धिमान्नी चिन्ता में डूब गया । खोज भरी आँखों से चारों ओर निहारने लगा ।

किसी को देख नहीं पाया तो घर के दरवाजे के आगे आकर खड़ा हो गया ।

भीतर से किसी की बात-चीत हवा के साथ उड़कर उसके कानों से टकरायी, उसके कान सजग हो गये । ध्यान देकर सुनने लगा वह—

“अब क्या होगा ?” स्वर था किसी पुरुष का, विवश-दुखी ।

“चलो शहर भाग चलें बाबू !.. साँपों के बीच तुम्हारी जिन्दगी जी नहीं सकेगी, छटपटाती ही रहेगी....” औरत की आवाज थी यह करुण, दर्द-भरी ।

“रास्ता देखा नहीं है चमकी ! किस रास्ते से चलोगी ?”

“खँडहर की राह...जिधर से मैना के साथ परदेसी भागा था....” चमकी बोली ।

चमकी और शीतल ही थे दोनों ।

दो आकुल प्राण पछी बनकर उड़ने के लिये पंख फड़फड़ा रहे थे ।

किसी ने बाहर से दरवाजे को खटखटाया। चौंक पड़े दोनों। एक दूसरे की ओर आँखों में अजीब भाव लेकर देखने लगे। आँखों ने आँख से पूछा—“कौन हो सकता है ?” तभी—

“चमकी !” पुकारा किसी ने।

परिचित स्वर सुनकर आश्वस्त हुए दोनों।

चमकी बोली—“बाबा हैं !” और दौड़कर दरवाजे को खोल दिया उसने।

बूढ़ा धिमानी भीतर घुस आया। शीतल के पास बैठता हुआ बोला—“कौन आया था बाबू....अभी-अभी किसी को बाहर देखा था मैंने।”

“कोई तो नहीं बाबा !....” चमकी बोल उठी शीतल के पहले ही।

“घोखा हो गया शायद मेरी आँखों को...बूढ़ा हो गया हूँ न !” चेहरे पर के पसीने को पोंछते हुए कहा धिमानी ने।

चमकी और शीतल धिमानी के घर में थे। उस दिन जब क्रांथित चिकोरा गया था तो पीछे-पीछे धिमानी भी पहुँच गया था। जानता था कि दोनों सँपेरे मिलकर जान ले लेंगे निर्दोष परदेसी की। अगर उसने मंतर फेंक कर साँप को नहीं भगा दिया होता तो आज जिन्दा नहीं रह सकता था परदेसी। चिकोरा के जाते ही दोनों को वह भाड़ी से निकाल कर भगा लाया था अपने साथ और बच गये हैं दोनों !

मगर अभी तो खतरे से खाली नहीं थी उनकी जान। चिकोरा को मालूम हो जाय तो तूफान खड़ा कर दे वह और बुजुर्ग धिमानी के पास इतनी ताकत नहीं कि चिकोरा की जवानी से भिड़ सके।

“बाबा शहर पहुँचा दो इस परदेसी को...यह निर्दोष है

बाबा ! इसने तो मेरे मन की और..." कहते-कहते रुक गई चमकी ।

वह कह नहीं सकी तो शीतल ने कहा—"और हम दोनों में मुहब्बत हो गई....मेरे साथ इसे भी जाने दो बाबा ! चमकी को चिकोरा जिन्दा नहीं छोड़ सकता...."

"हाँ बाबा !...मैं नहीं रह सकूँगी छैला के बिना...."

"चुप रह तू....तूने बेकार ही बाबू को फेर में डाल दिया है—" धिमानी था । अजीब उलझन में पड़ गया था बेचारा ।

डाँट खाकर रोने लगी चमकी ।

रांती-रांती बोली—"तो इसे ही पहुँचा दो बाबा !....पैर पड़ती हूँ...चमकी को मार डालो....चुड़ैल हूँ मैं !"

"जवान गन्दी मत कर छोरो !....मेरे कहे को गाँठ मत बाँध ले..." धिमानी रोती हुई चमकी का आश्वासन दिया ।

"मैं यहाँ नहीं रहूँगी बाबा !....गाँव के लोग बेदर्द हो गये हैं...साँप हैं सभी..." रोना बन्द कर बोली वह ।

"रहना तो मैं भी नहीं चाहता पगली !....मगर बुढ़ापे में गाँव छोड़ते मोह लगता है...परन्तु राहत भी हासिल करने की हसरत है...सो तो यहाँ है नहीं...साँझ होने दे तो चलें शहर की ओर...."

"हाँ बाबा !...." खुशी से चीख पड़ी चमकी । शीतल खामाशी लिये सोचता रहा कुछ ।

"जरा गाँव को देख आऊँ मैं...टिकोरा भी मैना के पीछे पागल हो गया है !....जाते-जाते उधे भी समझा-बुझा दूँ; फिर कहीं मौका मिलेगा ?" कहते हुए जाने के लिये उठा बूढ़ा धिमानी ।

"वह तुम्हारा कहा नहीं मानेगा बाबा !...किसी की बात

नहीं मानता वह !” बोली चमकी—“पत्थर पर सर पटकने से फायदा ?”

“बुजुर्गों का फर्ज है पगली ! इन्सानियत का तकाजा है यह तो....” कहता हुआ धिमानी बाहर निकल गया ।

धिमानी के जाने के बाद चमकी शीतल की ओर देखने लगी । उसे खामोश देख बोली—“क्या सोच रहे हो जी !... अब तो भाग चलेंगे हम, साँझ तो होने दो....” चमकी का स्वर खुशी से पग उठा था ।

शहर के सपने देख रही थी चमकी । मगर शीतल मन मारे बैठा अपने भविष्य पर विचार कर रहा था ।

और धिमानी चला जा रहा था टिकोरा के घर की ओर । रास्ता आधा ही तय किया था उसने कि उसकी विवश दृष्टि ने अवश जवानों को आपस में बातें करते देखा ।

एक था चिकोरा और दूसरा था नया सँपेरा मगर काइयाँ—सम्पू !

दोनों नागों को फन मिलाये देख धिमानी के दिल में शंका उठ खड़ी हुई । उसका कलेजा धड़का और माथा ठनका । उसने एक चीज और देखी—सम्पू धिमानी की ओर संकेत कर चिकोरा को कुछ बता रहा था, जो दूर रहने से धिमानी सुन नहीं सका ।

टिकोरा के पास जाते-जाते भी जा नहीं सका धिमानी । उल्टे पैर वापस लौट आया अपनी भोपड़ी में । बरामदे की एक चट्टान पर बैठ गया । चौड़े मस्तक पर चिन्ता के चिह्न नजर आ रहे थे ।

अन्दर शीतल और चमकी शाम होने का इन्तजार कर रहे थे ।

“बाबा !” किसी ने पुकारा मीठी आवाज में ।

धिमानी का झुका सर ऊपर उठा । बोला—“चमकी तू....

क्या है ? अन्दर जाकर बैठ....आज कल के पेड़-पत्तों को भी आँखें हो गई हैं...देख लेंगे तो चिकोरा को पता दे देंगे....”

“अच्छा बाबा !....देखने आई थी कि साँप हुई कि नहीं...” कहती हुई चमकी फिर भीतर चली गई ।

चिन्ता में डूबा धिमानी दूर क्षितिज की ओर देखने लगा । तभी किसी को पगडण्डी पर आते हुए देखा उसने । आने वाले दो थे । चौक पड़ा वह । दोनों की छाया जानी-पहचानी लगी उसे ।

थोड़ी ही देर में दोनों छाया धिमानी के आगे आकर खड़ी थी, काले चेहरे पर काला भाव लिये ।

“आ बैठ चिकोरा !....कैसे भूल पड़ा बेटे !”

“मैं बैठने नहीं आया हूँ बाबा !” क्रोधित स्वर में गरज कर बोला चिकोरा—“चमकी और शीतल को जानते हो तुम ?” हाथ में साँप लिये आगे बढ़कर धिमानी के पास आ गया वह ।

“नहीं जानता मैं....”

“लेकिन मैं जानता हूँ !” सम्पू बोला ।

“क्या इरादा है तेरा ?” धिमानी गरज पड़ा, आवेश से चेहरे की भुर्रियाँ जल उठीं ।

अन्दर से जब चमकी और शीतल ने चिकोरा का स्वर सुना तो बेजान-से हो गये दोनों । मौत आँखों के आगे नाच उठी ।

“अभी बताता हूँ...” कहकर चिकोरा ने हाथ के साँप को धिमानी के घर के भीतर फेंक दिया ।

“छोकरे !” धिमानी चिल्लाता हुआ भीतर दौड़ा साँप के पीछे ।

“यह साँप मन्तर से बँधा है बाबा !...तुम्हारा मन्तर इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता...भला चाहते हो तो रुक जाओ यहीं, नहीं तो जबान हिलाने के पहले ही तुम्हारी जान निकल जायगी...”

मगर धिमानी ने कुछ सुना नहीं। वह बिना रुके भीतर की ओर दौड़ा। तभी चिकोरा के इशारे ने सम्पू को कुछ कहा।

सम्पू ने कमर में लटकी कटार को हाथों में लिया और विद्युत वेग से धिमानी की पीठ में एक-दो-तीन !

चीख कर चित्त हो गया बूढ़ा धिमानी खून के फौवारे उछल कर निकल उठे वीभत्स रूप से।

तभी एक चीख और निकली, जो शीतल के गले की थी। साथ-साथ चमकी भी चीख उठी।

चिकोरा दौड़कर भीतर घुस पड़ा। जमीन पर शीतल के मुर्दे शरीर से लिपटी चमकी के बालों को उसने बेदर्दी से पकड़ लिया। शीतल को काटकर खामोश पड़े साँप को सम्पू ने हाथ में उठा लिया।

दोनों सँपेरों का काम फतह हो गया था। चमकी को खींचता हुआ चिकोरालिये जा रहा था अपने घरकी ओर। सम्पू मुस्कराता हुआ पीछे-पीछे चल रहा था। चमकी की नजरों ने देखा, सम्पू को और वह जान गई कि यह करतूत इसी हरामी की है।

चिकोरा घर पहुँचा। चमकी को जमीन पर पटक कर उसे लगा धूँतने रूई की तरह। अपना क्रोध उतारता रहा वह और सम्पू देखता रहा—चुपचाप।

जब मार खाते-खाते चमकी बेहोश हो गई तो बोला सम्पू—
“छोड़ दो इसे चिकोरा ! कसूर तो उस शहरी नाग का था अब तो रहा नहीं वह....चैन की वंशी बजाओ....इसका दिमाग ठीक करने के लिये सम्पू जिन्दा है अभी....”

चिकोरा ने सम्पू का कहना मान लिया। उसकी नकेल तो सम्पू के हाथ में थी चाहे जिधर घुमा दे वह।

मस्तक का पसीना पोंछा चिकोरा ने और हाँफता हुआ बैठ गया ।

“इस नागिन ने मुझ सँपेरे की इज्जत लूट ली...”

“अब तो रास्ता साफ है दोस्त !....सिर्फ रानीजी का दिमाग ठीक करना है सो मैं कर ही लूँगा...तुम्हारे लिये तो जान हाजिर है जी ! ..अच्छा, फिर मिलेंगे....” कहकर सम्पू चला गया ।

उसकी लगाई आग में छैला जलकर राख हो गया था । उसके रास्ते का काँटा वही तो था । और चिकोरा भी उसी के हाथ का पुतला बन गया था । अब क्या है....चमकी को जब चाहे कलेजे से लगाकर अपनी आग बुझा सकता है वह । चाहता तो अभी ही मगर किस बात का खौफ है, जो इतनी जल्दी कर दे वह ।

दूसरे दिन—

सम्पू हँसता हुआ हाजिर था चिकोरा के आगे । चिकोरा खुशी-खुशी मिला ।

“कैसा दिमाग है ?” सम्पू था ।

“अभी ज़हर उतरा नहीं....” चिकोरा था यह ।

चमकी भीतर बड़हवास, बेहोश, अस्त-व्यस्त-सी पड़ी थी । उसकी दुनिया अँधेरी हो गई थी । जाने की तमन्ना मर गई थी ।

कितने बेदर्द हैं दुनिया वाले कि दो प्रेमियों को चैन से रहने नहीं देते ।

“सम्पू !—तुम रहो यहाँ....मैं जरा जंगल घूम आऊँ....चिड़िया उड़ न जाय—देखना !”

“अजी, चिड़िया की आँख और पाँख तो परदेसी छैला था और वह तो कट चुका है....” हँसते हुए बोला—“तुम जाओ और ठाट से जाओ...”

चिकोरा चला गया तो सम्पू रोती हुई चमकी के पास आकर

बैठ गया। कुटिल हँसी हँसकर पूछा उसने—“कैसी तबियत है रानी!....देख ली न सम्पू की ताकत?....अब भी मेरी बन जा, चैन से रह लोगी वरना सम्पू गत बना देगा तुम्हारी...” कहते हुए सम्पू ने चमकी का हाथ पकड़ लिया।

हाथ भटक दिया चमकी ने। नागिन की तरह फुफ्फुकार कर बोली—“हरामी, कमीना, चला जा यहाँ से....चैन से नहीं रहना चाहती मैं...छैला के मरने के बाद जीने की साध नहीं...मुझे भी सोंप से डँसवा दे न....”

“घबड़ाती क्यों हो गोरी!....सोंप बनकर सम्पू डँसने के लिये हाजिर है....मेरा ज़हर बड़ा मीठा लगेगा—समझी....” कहते-कहते सम्पू बेबस चमकी को बाँहों में कस लिया। जबरदस्ती चूम लिया उसके ललाम अधरों को। उसके मुलायम गालों में उसके तीखे दाँत घँस गये। सह नहीं सकी चमकी। उसने भी अपने दाँत सम्पू की बाँह में गड़ा दिये चीख पड़ा सम्पू, मगर छोड़ा नहीं उसने!

चोट खाकर भयानक सँपेरा उत्तेजित हो उठा। उसका बन्धन कसता गया। वासना का भूत सवार था उस पर।

चीखती-चिल्लाती रही चमकी मगर छुड़ा न सकी अपने को लौह सदृश पंजों से।

और सम्पू? वह तो पागल हो गया था। वासना का पर्दा आँखों पर लगा कर अन्धा बन गया था शैतान।

उन्मत्त सम्पू अपनी बाँहों में कसे जा रहा था छुटपटाती चमकी को। आज वह अपनी इबिस पूरी करके ही दम लेगा। चिकोरा भी तो नहीं था घर में, किसी का डर नहीं उसे।

सुना घर, बेबस चमकी और सबल सँपेरा!—कोई कुछ कहने वाला नहीं।

वह वीभत्स दृश्य दीवार की आँखें भी नहीं देख सकी। चमकी

का वह रूप—ऊफ ! चोली खुलकर जमीन की छाती पर मुँह के बल गिरी थी, अजगर के चमड़े का लहँगा अस्त-व्यस्त हो गया था, उसका मादक सौन्दर्य नष्ट होकर दिलफरेब नजर आ रहा था। देखकर सम्पू की आँखों में शैतान जाग पड़ा। वासना की आँधी जोर से चलने लगी और...और सम्पू मनमानी करता रहा। चीखती रही चमकी....

जमाने ने चमकी का सब कुछ लूट लिया था और अब उसके बचे बदन के चमकते चाम पर भी दाग लगाने जा रहा था बेदर्द दुनिया का शैतान इंसान !

मजबूर बेजबान नारी सब कुछ लूटा कर बची-खुची इज्जत को भी लुटाने के लिये तैयार हो गई और आज का हैवान इन्सान !...ऊफ !

तभी किसी की आवाज ने गरज कर पुकारा—“सम्पू !”

चमकी को छोड़कर सम्पू अलग हो गया।

सामने चिकोरा दैत्य बनकर खड़ा था चेहरा गम्भीर था उसका मगर आँखों में प्रतिहिंसा की आग जल रही थी ?

पहले तो देखकर सम्पू हक्का-बक्का रह गया फिर सँभल कर बोला—“क्या है चिकोरा !...गरम क्यों हो रहे हो ! देखो न, चिड़िया फड़फड़ा रही थी। उड़ने की खातिर....कई जगह काट खाया हुरामी ने...”

“चुप रह बदजात ! आस्तीन का साँप निकला तू ! केवल शहर के लोग ही नाग नहीं होते...गाँव वाले भी ज़हर उल्लगना जानते हैं !”—चिकोरा का स्वर तेज था—“धोखेबाज दोस्त !...शक तो पहले ही था तेरी दोस्ती पर मगर तूने मेरी आँखों में धूल भोंक दी....”

कहता हुआ चिकोरा दो कदम आगे बढ़ा। हाथों की मुठ्ठियाँ बँध गई थीं।

“आगे मत बढ़ो चिकोरा !....सब कुछ जान गये हो तो कुछ छिपाना भी नहीं है मुझे....तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते—समझे ?” ढँसने के बाद भी साँप छाती फुलाये खड़ा था।

“सम्पू !” चिल्लाकर चिकोरा लपका उसका गला पकड़ने के लिये।

होशियार सम्पू बगल हट गया तो चिकोरा जमीन पर गिर पड़ा मुँह के बल। सम्पू ने फुर्ती दिखालाई, पास ही पड़े पत्थर को उठाकर उसने चिकोरा के सर पर मारा। मारता रहा, जब तक उसे यकीन न हो गया कि वह मर गया।

फिर रुका नहीं वहाँ। हवा का झोंका बनकर ऐसा भागा कि पीठ भी नहीं दिखाई पड़ा उसकी।

इधर बलात्कार और जुदाई की चोट से चमकी बेहोश थी और उधर पत्थर की चाँट से चिकोरा बेजान-सा पड़ा था।

छोटे से गाँव में दुश्मनी का रिवाज-सा चला गया था। सभी एक दूसरे को दबाकर खून पीना चाहते थे। एक दूसरे को नीचे मुकाकर अपने कदमों पर गिराना चाहते और खुद आसमान का आफताब बनना चाहते, हवा का झोंका बनकर आजाद होना चाहते थे सभी।

और गाँव का उस्ताद टिकोरा ?—उपे किसी की फिकर नहीं। मैना के सिवा दुनिया में सभी मर गये थे उसके लिये। अपने आपको भूल गया था वह। दिन-दिन भर मैना की लाश कलेजे से लगाये पड़ाई की किसी खोह में पड़ा रहता था। उसकी ज़िन्दगी तूफान में उड़ता सूखा पत्ता बन गयी थी।

जड़ ही कमजोर, खोखली बन गयी थी तो ऊपर के डाल-पात किसका हाथ पकड़कर ज़िन्दा रहते ।

जमीन पर पड़े चिकारा को जब होश आया तो सर की पीड़ा से कराह उठा वह और बौखला गया । बगल में चमकी पूर्ववत् पड़ी थी । उसे हिलाया-डुलाया उसने और नहीं उठी वह तो उपेक्षा से लात मारकर उठ खड़ा हुआ । हाथ में साँप और कटार संभाली और दाँत पीसता चल पड़ा सम्पू की गर्दन काटने ।

थाड़ी देर बाद जब चमकी की चमकहीन आँखें खुलीं तो आस-पास सन्नाटे के सिवा और कुछ नहीं था ।

“छैला !...मेरे रसिया !....तुम चले गये निर्मोही छलिया !.... देखो, अपनी चमकी को लोग कितना सता रहे हैं....” द्विचकियाँ लेती हुई बोल रही थी चमकी—“साथ देने का वादा करके अकेले भाग गये बाबू !....तुम मर गये हो...साँप बनकर आओ, ढँसकर ले चलो मुझे भी....छैला !” सर पीट लिया चमकी ने ।

रात हो गई । गाँव सो गया मगर चमकी की आँखों में नोंद कहाँ ? करवटें बदल-बदल कर किसी प्रकार रात गुजारी उसने । रोते-रोते थक गयी किन्तु आँखों से पानी का बहाव रुका नहीं । अथाह सागर भी कहीं सूख सका है ?

शीतल की जान लेकर चिकोरा ने अपने दिल की आग बुझाई और शीतल को खोकर चमकी ने अपने कलेजे में शोला भड़काया ।

दिन बात चले ।

कुछ ही दिनों में लोग धिमानों और शीतल की बात भूल गये मगर चमकी की पलकों की कोरों पर वेदना के आँसू छलकते ही रहे ।

वह नहीं भूल सकी अपने छैला को, जो उसके रोम-रोम में बैचैनी बनकर छा गया था ।

वह भूल नहीं सकी धिमानी को, जिसने उसे सहाग दिया था ।

भूलती स्मृति को चमकी जंगल-भाड़ियों में घूम-घूमकर याद करती रहती । पगडण्डी की धूल पर शीतल के पद-चिह्नों का बावरी होकर खोजती-फिरती । नदी के चञ्चल जल में परदेसी छैला की परछाईं ढूँढती फिरती । रात को आकाश के चाँद सितारों की दुनिया में निहारने की कोशिश करती मगर सब बेकार । बेवफा छैला कहीं नजर नहीं आता उसे । खोजते-खोजते हार जाना तो आँखें बन्द कर सपने में उसे देखने लगती ।

देखकर मन ही मन कहती—“तुम कहाँ हो बाबू !....मेरे पास....” जंगल-पहाड़ों में खोजते-खोजते निराश हो गई थी वह ।

सुनकर हँस देता शीतल तो दौड़ पड़ती पकड़ने के लिये चमकी पर पकड़ नहीं पाती उसे । नौद भटके के साथ खुल जाता उसका । फिर वही पुराना खोफनाक मंजर उसकी निगाहों में मचल उठता ।

चमकी जंगल के एक पेड़ की छाया में बैठी है, आँखों में निराशा की रोशनी और कलेजे में टूटा दिल लिए । इसी पेड़ का छाया में छैला के गले में बाँधे डालकर उसने कभी एक नई दुनिया बसाई थी । यहीं पर उसकी मुहब्बत जवान हुई थी और आज अकेलीबैठी है चमकी शीतल की याद कर आँसू बहाती हुई ।

चारों तरफ देख रही है । बैचैन दिल का सहारा खोज रही है वह । जंगल का हसीन रूप उसे नहीं भा रहा है । ठंडी-ठंडी हवा भी बैरन बनकर जला रही है उसे । फूल का स्पर्श भी शून्य बन गया है उसके लिए ।

शाम हो गई ।

भूली-भूली चमकी अभी तक वहीं बैठी है भयावने जंगल में । वह सजग हुई तब, जब पीछे से आकर किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—“चमकी, घर चल !”

“मेरे छैला !” चीखकर चमकी ने कंधे पर के हाथ को पकड़ लिया । पलटकर देखा उसने—सामने चिकोरा खड़ा था ।

देखते ही उसकी क्षणभर की खुशी ने उदासी का जामा पहन लिया ।

“छैला ! हा-हा-हा... उसे भूली नहीं तू !... चल-चल... अब नहीं आ सकता वह !” घृणा में बोला चिकोरा ।

मर कर जिन्दा चमकी की लाश, खांसी-खोयी चल पड़ी चिकोरा के पीछे-पीछे ।

चिकोरा घर आया और खा-पीकर सो गया, टिकोरा के बारे में सांचता और सम्पू के विषय में विचारता हुआ । दोनों साँपों को कुचलना है उसे ।

चमकी ने खाया नहीं, भूखी ही पड़ी रही । गम खाकर तो ऐसे ही उसकी भूख मिट गई थी और प्यास बुझाने के लिए उसके नयनों में नीर पर्याप्त था ।

रात सयानी हो चली । मछली की तरह छटपटाती, पिंजड़े में कैद परिन्दे की तरह पर फड़फड़ाती सो गई चमकी । आँखों में बीते दिन हँस पड़े दिलफरेब अदा से ।

चारों तरफ खामोशी, दुनिया की काली छाती पर छिटकी चाँदनी, पत्तों और दूबों की गोद में सोयी मासूम शबनम ! अजीब छटा थी, विचित्र शान्ति थी । कभी-कभी किसी जंगली जानवर या उल्लू के चीखने से नीरवता अपनी आँखें खोल देती मारे भय के । जहरीले साँप जहाँ-तहाँ फुफकार रहे थे ।

इसी समय एक काली छाया चिकोरा के घर से निकलती जान पड़ी। वह छाया बाहर आकर थोड़ी देर खड़ी रही फिर उसके पाँव जंगल की ओर चले। थोड़ी देर बाद छाया जंगल के दैत्याकार वृक्षों के साये में खो गई।

राज-रोज अजीब-अजीब घटनाओं की सृष्टि हो रही थी, इस छोटे-से पहाड़ी गाँव के दामन में। टिकोरा का मैना की लाश के साथ इश्क!—शीतल का मरना और आज इस छाया की पैदाइश।

पिछली रात की बात दिन की आँखें खुलते ही चारों तरफ धूप की तरह फैल गई। किसी ने उस छाया को देख लिया था और सभी की जबान पर यही किस्सा मचल रहा था।

विचित्र-विचित्र बातें होने लगीं सपेरो में। कोई कहने लगा मैना की रूढ़ थी। कोई कहता कि आँखों का धोखा है मगर अधिक लोग तो मैना की रूढ़ ही समझ कर काँप रहे थे।

लोग रात हाने का इन्तजार करने लगे। सभी मैना की रूढ़ को देखने के लिए व्याकुल हो चले।

रात हुई और वह छाया फिर हिल-डुल पड़ी गाँव की पगडण्डी पर। पर किसी ने यह नहीं देखा कि एक विचित्र बात और हो गई थी। कल की भाँति ही छाया चिकोरा के घर से निकली थी। मैना की रूढ़ टिकोरा के घर से नहीं निकली थी।

जब सपेरो ने देखा तो उनके दिल में साँप रंगने लगे। आँखों में मौत नाच उठी। सभी टिकोरा के पास पहुँचे। हाथ जोड़कर विनती की कि मैना को दफना दो नहीं तो गाँव में कोई जिन्दा नहीं बच सकेगा अब ?

मगर टिकोरा को क्या ?—उसे किसी के दुख से क्यों हमदर्दी होने लगी ? वह तो खुद जखमी था, दूसरों के घाव पर मरहम कहाँ से लाकर लगता ?

टिकोरा ने सभी को डाँटते हुए भगाया ।

बोला—“मैना तो मेरे पास है...अगर रूढ़ देखा है तुम लोगों ने तो अन्धे होकर...मुझे दिखाओ तो जानें....”

सपेरे निरुत्तर और भयभीत अपने-अपने घर लौट आये । गाँव भर सो नहीं सका रात को । लोगों की आँखें झपकते ही सपने में मैना की रूढ़ आ जाती ।

दूसरे दिन सभी मैना की रूढ़ टिकोरा को देखाने के लिये तैयार हो गये । अगर उनकी बात गलत निकली तो खैरियत नहीं । टिकोरा को छेड़ तो आये सभी लेकिन उसके गुस्से से सभी परिचित थे । मैना की रूढ़ टिकोरा को दिखलानी ही पड़ेगी ।



जागरण का संदेशा लेकर दूर से मुर्गे की आवाज आई । पिछली रात का अन्धेरा अभी तक धुँधले आवरण में हिल-डुल रहा था ।

राज महल के सामने ही दूसरे किनारे पर नौकरों के रहने के लिए क्वार्टर बना था । वारिस रात भर पहरा देने के बाद कन्धे पर वजनी बन्दूक लादे धीरे-धीरे अपने क्वार्टर की तरफ जा रहा था ।

दूर से ही उसने क्वार्टर की ओर निगाह डाली । रात भर की जलती शमा ने जो अभी तक जाग रही थी, झिपी-झिपी आँखों उदास रोशनी से वारिस का स्वागत किया ।

“गुलनार !....अरी ओ गुलनार !” दूर से ही वारिस मुर्गे की तरह बाँग देने लगा ।

जानता है न कि उसकी चाँद-सी हसीन, गुलाब-सी मादक

बीबी जब नींद का शराब पीकर मदहोश हो जाती है तो—उसकी पलकों की मदहोशी आसानी से नहीं भागती ।

कई बार वारिस चीखा मगर क्यों जगने लगी गुलनार ! जवानी की नींद क्यों टूटने लगी इतनी जल्दी ।

“या रब ! वारिस को बीबी भी मिली तो पल्ले नम्बर की सुतकड़...” कहता हुआ वारिस अपने कार्टर के बरामदे में हाज़िर था—“गुलनार, दरवाजा खोलो मेरी हूर !...खैर भई, मत खोलो आँखों का फाटक...खुदा कसम—कुत्ते की तरह भौंकते-भौंकते जान हलक में आकर अटक गई है बुलबुल !...”

कहता हुआ वारिस वहीं जमीन पर बैठने लगा । तभी दरवाजे के दोनों पल्ले भटके के साथ खुले और तब निकली एक मोहिनी प्रतिमा, चर्नीदी आँखें, बेछबर जवानी, आईने-सी चमकदार सूरत लिये । देखकर वारिस की जान में जान आई । अँगड़ाई लेते हुए उठा वह ।

“जग गई मेरी हूर !...मैंने तो अन्दाज़ लगा लिया था कि मेरी मलका नींद की दुनिया में ख़ाब की ब्लैकमार्केटिंग करने में मशगूल होंगी....”

“हटो जी, सबेरे-सबेरे आये तो लगे मजाक ही उड़ाने.... यह कुत्ता-कुत्ती क्या बक रहे थे ?”

“खुदा खैर करे !...नींद में भी सुन लेती हो मेरी जान !.... वह तो ज़नाब वारिसअली ख़ाँ कुत्ते की तरह भूँक रहे थे....और उनकी मलका....” अन्दर आते हुए वारिस कह रहा था ।

मगर बीच ही में बोल उठी गुलनार—“खुदा के नाम के पहले जबान गन्दी मत करो जी !” अदा के साथ कमरे के भीतर आ गई वह ।

सुबह की रोशनी में वारिस ने देखा अपनी बीबी की दिल-

फरेब अदा को, जो उसके दिल पर गदा की तरह गिर रही थी। हाय-हाय कर उठा वह। गुलनार रात की खुमारी को अपनी नरगिसी आँखों से, कमल के झण्डल की तरह हथेलियों से मल-मलकर छुड़ा रही थी। उसे क्या मालूम कौन जी-जी कर मर रहा है।

“गुलनार !” वारिस ने हाथ बढ़ाकर गुलनार को अपने पास खींचा।

पके आम-सी गुलनार वारिस की गोद में टपक पड़ी। वारिस के अरमानभरे दिल ने गुलनार को अपनी बाँहों में भरजोर कस लिया। और उसके बेचैन होठों ने उसके गुलाबी गालों पर अंगार-सा रख दिया।

जल उठी गुलनार, बोली—“खैरियत तो है न मेरे सरताज !”

“बस, यही तो नहीं है मेरी जान !....और सब कुछ है...” कहा वारिस ने।

“क्या मतलब ?” आँखों में ताज्जुब भर कर बोली गुलनार।

“मतलब तो साफ है चुनमुन की अम्मी !...अरे हाँ, चुनमुन कहाँ है ?”

“छोड़ो भी उसे...वह तो सोया है अभी तक...तुम कहो ?”

“क्या कहूँ गुलनार ! खुदा कसम कुछ समय में नहीं आता !” वारिस कहने लगा—“यह राजमहल क्या हो गया शैतान भानमती का पिटारा बन गया है...रोज-रोज नया फ़िस्सा...कल ही तो देखा तुमने हमारे छांटे कुँवर साहिब पिस्तौल लेकर बहिश्त की तैयारी कर रहे थे...ज़िन्दगी क्या हुई फुटबाल हो गई...चाहे जब ठोकर मारकर दूर कर दो...वह तो अल्ला की मरजी से ऐन वक्त पर एनी मेम पहुँच गई और मौत के मुख में जाने से रोक लिया, नहीं तो ग़ज़ब हो गया होता अब तक...सभी रानी

साहिबा के कलेजे पर लात मार रहे हैं...अगर यह बात जमाना जान ले तो क्या कहे ?....या खुदा, बूढ़ी माँ की किस्मत कैसी लिख दी है तूने..." कहते-कहते वफादार वारिस की आवाज रो-सी पड़ी ।

"यह तो बताओ, रानी साहिबा का गठिया कैसा है....ठीक तो है न ?"

"ठीक ही है.. बूढ़ी जिन्दगी आफत है गुलनार ! अल्लाह करे किसी को न मिले यह !" बोला वारिस—“छाँड़ो इन बातों को... इधर आओ बुलबुल !....जरा प्यार कर लें फिर तो ड्यूटी बजानी ही है...चुनमुन सो ही रहा है अभी तक...जरा नजदीक आओ...."

"ऐ मियाँ ! जबान सम्हाल कर बोलो...शाहजादा कहाँ उसे !" बोली गुलनार प्यार की डाँट सुनाती हुई—“हरदम तुम्हारी जबान गाली ही बकना जानती है ?"

"और तुम्हारी मेरी हूर, मुझसे भी एक-दो कदम आगे बढ़कर गाली दागना जानती है !" हँसते हुए वारिस बोला—“अगर रात को मेरे साथ पदरे पर रहा करो तो कमबख्त चोर फटाफट तुम्हारी आवाज का निशाना बना करें...बोलो, रहोगी ?"

"कहो तो कब्र में जाकर सो रहूँ...मेरे मालिक ! गुलनार तुम्हारे एक-एक इशारे पर जान कुर्बान कर सकती है...." कहा गुलनार ने—“मगर जब तुम फजूल मेरी तारीफों का पुल बाँधने लगते हो तो सच जानो मैं आसमान में उड़ने लगती हूँ !"

"उड़ने कहाँ लगती हो रानी ! चाँद बनकर चमक उठती हो तुम तो...और लगती हो चाँदनी बिखेरने...क्यों, गलत कह रही है वारिस की जबान ?"

"मैं क्या जानूँ !..." शरमा कर बोली गुलनार । वह लजाकर ऐसी सिमट गई जैसे सूरज देखकर कुमदिनी अपना दामन समेट लेती है ।

उसे शरमाते देख वारिस ने एक तीर और छोड़ा—“खुदा कसम ! यह अन्दाज तो बड़ा सितमगर है....कसम तुम्हारी, मर गया बेमौत ...”

“चुप रहो जी अब तो...” भिन्नक तोड़ कर बोली गुलनार—
“मैं जाती हूँ रानी साहिबा की खिदमत में...जरा चुनमुन का खयाल रखना....” और उठ कर खड़ी हो गई गुलनार।

वारिस ने सांथे चुनमुन पर निगाह डाली और बोला—
“तुम्हारा चुनमुन भी सुतकड़ निकला तुम्हारी ही तरह....ललित को देखो, उठकर हवा ग्याने का इन्तजार करता होगा मेरा...”

मगर गुलनार ने सुना नहीं, तब तक बाहर निकल कर रानी साहिबा के महल की तरफ कदम बढ़ा चुकी थी। अब रात का बाकी धुंधलका भी छंट गया था।

क्षितिज को गाँद छोड़कर सूरज आकाश की छानी पर आ गया। चारों तरफ सूरज की खुशी धूप बनकर छा गई। मगर आज यह क्या ?—राज नये सबरे की खुशी में हँसने वाला राज-महल महरूम क्यों पड़ा है, खामोश क्यों है ?

अजीब चुप्पी छितरायी है चारों तरफ !—शायद रानी साहिबा की हालत आज बेहद नाजुक हो उठी है।

सभी लोग रानी साहिबा की बीमारी से परेशान हो उठे हैं। अचल और कुँवरानी कविता भी। रात-रात भर दोनों जगकर सेवा में लगे रहते हैं। फेमिली डाक्टर दास भी हमेशा मौजूद रहते हैं। बूढ़ी जिन्दगी के दिये में दवाइयों का तेल डाल-ढालकर उसे हमेशा जलाना चाहते हैं, उसे रोशन देखने की हसरत लिये बैठे हैं।

“कैसी हालत है डाक्टर साइब !” अचल का स्वर बेचैन था।

“ठीक है अब तो...सो गई हैं....” बोले डाक्टर दास अपने

चेहरे को ऊपर उठाते हुए। बूढ़ी आँखों में कसूना थी—“इन्हें सोने दीजिये अभी...ठीक हो जायेंगी....घबराने की कोई बात नहीं....”

“रात भर आप भी जग गये डाक्टर साहब ! अब जाकर आराम कीजिये...जरूरत पड़ने पर वारिस बुला लायेगा...”

“डाक्टरों का जीवन उनका अपना नहीं होता कुँवर साहब !... उन्हें दूसरों के लिये मशीन बन जाना पड़ता है और इस महल का नमक खाकर तो यह जिन्दगी बूढ़ी हो चली है....यहाँ के लोगों के लिये जीवन भी देना पड़े तो एतराज नहीं है...रानी साहिबा अच्छी हो जायें, यही तमन्ना है...” कहते हुए डाक्टर दास अपने घर जाने लगे। बोले—“कोई बात हो तो तुरत इनफार्म कीजियेगा....”

डाक्टर के जाने के बाद अचल अकेला हो गया वहाँ।

रानी साहिबा बूढ़ी पलकों में नींद भरे चैन हासिल कर रही थी। कुँवर चिन्तित और दुखित होकर रानी साहिबा के सौम्य चेहरे पर छाया मौत की छाया को निहारने लगा। रानी माँ के चेहरे पर वही खुशी और वही शान्ति व्याप्त थी। उनके महान हृदय की ममता उनकी सुर्रियों पर चुपचाप सोयी थी।

बुढ़ापा भी कितना विवश होता है कि चैन की एक साँस लेना कठिन हो जाता है। जिन्दगी का यह आखिरी सफर कितना खौफनाक है। सोच-सोचकर कुँवर अचलनारायण की उद्विग्नता बढ़ती जा रही थी।

सदा हँसमुख रहने वाला कुँवर आज माँ की पीड़ा देखकर विचलित हो उठा था। उसकी आँखों में वेदना के आँसू छलक-छलक पड़ते थे।

मायूस आँखों से एकटक माँ की तरफ देख रहा था वह। इन बन्द-सी पलकों के पीछे कितना प्यार और कितनी ममता छिपी है, जानता है वह। और उसे तो रानी साहिबा अपने बेटे

चंचल से भी अधिक प्यार करती हैं। करें भी क्यों न ?—अचल भी तो उनके पीछे परेशान रहता है हरदम। कई दिनों से रात-रात भर जाग रहा था, खाने की सुध नहीं, पीने की अभिलाषा नहीं। खबर है तो सिर्फ रानी साहिबा की बीमारी की, चिन्ता है तो केवल उनके जीवन की।

और चंचल ? वह तो आ ही नहीं रहा था अपनी माँ को देखने। अपने कमरे में बन्द होकर पता नहीं क्या करता रहता है हरदम ?

रानी साहिबा की गोद में पला चंचल दूर था और उनकी ममता और प्यार में पला अचल बैठा था उनके पास। आँखें शुष्क, चेहरा फीका, बिखरे बाल, अजीब सूरत बना रखी थी उसने। सब कुछ भूल गया था वह। माँ की बीमारी ने लूट-सा लिया था उसे।

“माँ !” बैठा-बैठा कुँवर अपने आप बोल उठा।

एक स्त्री के मर जाने पर इन्सान दूसरी स्त्री पा सकता है मगर माँ के खोने के बाद, यह कमी पूरी नहीं कर सकता वह। कितनी बड़ी मजबूरी है।

अचल के अन्तर में तूफान उठ खड़ा हुआ था। मस्तिष्क के आगे अन्धेरा के सिवाय कुछ नहीं था ! बिकराल आँधी में उड़ा जा रहा था वह अनजान दिशा की ओर। अन्धेरे में राह खोज रहा था। अपनी बेबसी पर आँसू बहा रहा था केवल।

आहिस्ते से कोई कमरे में आया और आकर कुँवर की बगल में खड़ा हो गया। चेहरे पर उसके भी उदासी छायी थी। रानी माँ की बीमारी से महल का जर्जर-जर्जर रो रहा था। हवा तक आँसू बहाते-बहाते गोली ही उठी थी।

“सरकार !” बगल में खड़े व्यक्ति ने धीमी और मधुर आवाज में पुकारा ।

सुना नहीं अचल ने और उसने सुना नहीं तो उस व्यक्ति ने धीरे से अपने कोमल हाथों से हिलाया कुँवर को । स्पर्श से सजग हो उठा कुँवर । बोला—“कविता !” भीगी आँखें उसकी ओर उठी—“ओह, तुम !...क्या है ?...कविता कहाँ ?”

“कुँवरानी साहिबा, महल की देख-रेख कर रही हैं इजूर !... राजमिस्त्री ने मालिक को याद फरमाया है...”

सुनकर कुछ बोला नहीं कुँवर । उठकर खड़ा हो गया जाने के लिये ।

जाते-जाते उसने कहा—“गुलनार ! माताजी का ध्यान रखना मैं अभी आता हूँ ।”

कहकर कुँवर धीरे-धीरे अपने महल की तरफ चल पड़ा ।

आजकल उसके महल के सामने एक स्मारक तैयार हो रहा था, रानी साहिबा की आज्ञा से ! उस जगह पर जहाँ टिकोरा के विकराल साँप ने उष्टे डँसा था ! स्मारक उस नारी का था, जिसने कुँवर को अपनी जिन्दगी बेजान बना कर जीवन दिया था, जाने की खातिर ।

कीमती और रंग-बिरंगे पत्थरों से बनते-बनते छोटा-सा स्मारक आज पूर्ण होने जा रहा था । वह स्मारक जो कविता की अभिलाषा और अचल का जीवन था । लोगों की नज़रें छोटी सी यादगार को आसमान में सर उठाये देखने के लिये उतावली थीं ।

अचल आकर उसी जगह खड़ा हो गया । करुण आँखों से एक बार निहारा उसने । मैना की याद ताजी हो गई । कविता द्वारा बतायी गई मैना के अमर त्याग की कहानी, उसके मस्तिष्क

के पर्दे पर चल-चित्र की भाँति नाचने लगों। और उसके अन्तर में मैना की धुँधली तस्वीर खिच गई।

जैसे-जैसे दिन गुजरते जा रहे हैं, वैसे-वैसे मैना भी अचल के खयालों में जिन्दा होती जा रही है। कविता ने उससे जो कुछ कहा था वह उसी पर विचार किया करता था हमेशा।

किसी बात को सुनते-सुनते इन्सान का दिमाग न फिरे ऐसा तो नहीं, यह तो स्वाभाविक है। और इसी स्वाभाविकता का शिकार होकर आज-कल कुँवर बेकरार रहता था। स्मारक को देखकर मैना का हासिल करना चाहता था।

मैना को एक बार पाने की इच्छा करने लगा था कुँवर। वह जीवन देने वाली नारी को एक बार सिर्फ एक बार अपनी आँखों से भर नजर देखने का स्वादिष्टमन्द था मगर था मजबूर।

और उसकी यही मजबूरी उसे चैन से जीने नहीं दे रही थी। दिल की बात दिल में ही छिपाये जल रहा था वह। अन्तर की आग धीरे-धीरे भयंकर लपटों का निर्माण कर रही थी।

अचल खड़ा-खड़ा अनिमेष नेत्रों से देख रहा था कारीगरों की कला का और उनके छेनी-हथौड़ों का जो बदसूरत और बेढंगे पत्थर के टुकड़ों में चित्ताकर्षक सौन्दर्य भर रहे थे।

आज का मानव सब कुछ कर सकता है। सोच रहा था अचल मगर....मगर नहीं कर सकता तो एक चीज!—आकाश का चाँद तोड़कर जमीन पर नहीं ला सकता वह।

पत्थर में जीवन देने की ताकत, सागर को बाँधने की शक्ति मुर्दे में जान डालने की क्षमता भी नहीं है आज के इन्सान में। और यही पर आकर हार हो जाती है उसकी।

बनते स्मारक को देखते-देखते ऊब गया अचल तो 'उक' करके उठ खड़ा हुआ। वहाँ भी शान्ति नहीं मिली उसे। जहाँ जाता

है वह, वहीं आँसू की नदी और दर्द का पहाड़ सामने आ जाता है। उसे कोई राहत नहीं दे सकता। एक कविता है जो हमेशा-हमेशा परेशान रहती है उसके पीछे। मगर उसे चैन तो नहीं ही दे सकती। जिस्म के जख्मों पर मरहम लगा सकती है मगर दिली जख्मों को कैसे अच्छा करे बेचारी !

माँ की बीमारी और मैना की याद से प्रताड़ित भारी मन लिये अचल आकर फौवारे पर बैठ गया। एकान्त पाकर उसका दिमाग और भी उड़ने लगा, मैना आँखों की रोशनी बन गई। अतीत को पाकर वर्तमान की सुध खो बैठा कुँवर ! मैना का अन्तिम स्वर उसके कानों में गूँज-सा उठा—“परदेसी....तुमको....मैंने...अपनी...जान....दी...है....भूलना नहीं....याद...करते...रहना...मैं....चली...”

अव्यक्त स्वर जब उसके अन्तर में बंला तो विचलित हो उठा अचल। उठकर खड़ा हो गया। फूलों की क्यारियों में टहलने लगा अपनी बेचैनी दूर करने के लिये। हाथों से फूल तोड़ने लगा तो काँटे चुभ गये। भुला नहीं सका मैना को और तब—विचार-धारा आगे बह चली—

...मैना का सर उसके आगे लटक गया। मौत की शान्ति में खो गई मैना। टिकोरा उठाकर जाने लगा। अचल उस वक्त वर्तमान पाकर भूत को भूल बैठा था। वह टिकोरा और मैना को पहचान नहीं सका। लेकिन टिकोरा की भयानक आवाज तो अब तक उसके कानों में गूँज रही थी।

फूलों की क्यारी को भी छोड़कर अचल दूर चला गया। टहलते-टहलते चंचल के महल के पास चला आया। अपने को वहाँ पाकर चौंक पड़ा वह। थोड़ी देर रुककर चंचल के कमरे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे के पास पहुँचा ही था कि उसके पाँव ठिठक गये ।

अन्दर से किसी की बात-चीत बाहर आ गई थी ।

एक स्वर था मधुर, किसी नारी का और दूसरा था किसी पुरुष का, कुछ मोटा ।

बाहर खड़ा होकर सुनने लगा कुँवर । क्षण भर के लिये मैना की स्मृति खो बैठा वह ।

“मुझे बार-बार आकर मत छेड़ा करो...मैं दगावाज हूँ... तुम्हारा साथ नहीं दे सकता...” पुरुष-स्वर था यह ।

“तुम बहोत Angry है चंचल कुँवर !” स्वर था किसी नारी का—“हम तुमसे माफी माँगता है...Excuse me please !”

“मगर तुम क्षमा क्यों माँगती हो एनी !...गलती तो मेरी ही थी । अगर तुम आकर मुझे नहीं बचाती तो कल मैंने आत्म-हत्या कर ली होती । आज मुझे कोई नहीं देख पाता इस दुनिया में...” इस बार छोटे कुँवर का स्वर पश्चाताप ने भरा था—“मगर दुख तो इस बात का है एनी !... मेरे पास कुछ नहीं है तुम्हें इनाम देने के लिये...तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं...”

“तुम हमको इनाम देगी ?” एनी का स्वर लड़खड़ा रहा था ।

“देता तो पर कुछ है नहीं....सिर्फ जान है मेरी—ले सको तो ले लो...”

“थैंक यू !...” एनी बाली धीमें से ।

आखिरी आवाज बाहर खड़े कुँवर के कानों तक नहीं पहुँच सकी । कुछ देर इन्तजार करने के बाद आयी भी तो चुम्बन की मादक ध्वनि । कुँवर हटने की सोचने लगा तभी—

“चलो डालिंग ! मदर का हाल देखेगा हम !”

“तुम जाओ...मुझे अपनी नजरों के आगे आने के लिये रोक लगा दी है माँ ने....मैं जाऊँगा तो बिगड़ खड़ी होगी....”

“नहीं बिगड़ेगा...तुम चलती क्यों नहीं....I am with you”

अचल ने जब सुना तो वहाँ से हट गया वह । एनी चंचल का हाथ पकड़े निकली और रानी साहिबा के महल की तरफ चल पड़ी ।

इधर रानी साहिबा घण्टे भर सोने के बाद उठ गई थीं । बदन की पीड़ा कम हो चली थी । बूढ़ा बदन हिलने-डुलने लायक हो गया था । पहले तो करबट लेना मुहाल हो गया था ।

कुँवरानी वहीं बैठी थी और धीरे-धीरे किसी तेल का मालिश कर रही थी उनके शरीर के गाँठों पर । छोटा ललित भी फर्श पर बैठकर अपने खिलौने से उलझा था । रानी साहिबा ललित के खिलवाड़ को देख रही थीं ।

“सुनता है ललित !....उस गुड़िया को घोड़े पर मत चढ़ा रे, पालकी पर रख दे....” बोलीं रानी माँ ।

“क्यों लानी माँ...मेरी गुलिया तो बहादुर है...हाती पर चल्हेगी....” ललित था ।

“पागल !” कहकर मन्द-मन्द सुस्काराया रानी साहिबा—
“कबिता, पानी दे बेटी !”

पीकर आश्वस्त हुईं तो बोलीं—“मेरे बेटे नजर नहीं आते बहू !....कहाँ हैं अचल-चंचल !”

तब तक एनी के साथ चंचल दरवाजे पर आ चुका था । बाहर से ही उसने ममताभरी माँ की पुकार सुनी थी ।

“मैं आ गया माँ !....” दौड़कर चंचल रानी साहिबा के पलंग के पास आ गया ।

“आ गया तू...अच्छा तो है न ?” रानी साहिबा के प्यार-भरे हाथों ने चंचल का सिर सहलाया । प्यार की चोट खाकर चंचल रो पड़ा । रानी साहिबा ने इधर-उधर देखा—“अरे, तू भी आई है !....खड़ी क्यों है एनी । वहाँ किसी पर बैठ...।”

“माताजी...” बाहर से आते हुए किसी ने गम्भीर स्वर में पुकारा ।

“अचल है क्या....आ इधर...बूढ़ी आँखें इतनी दूर से तेरी सूरत नहीं देख पातीं !”

अचल अन्दर आया । पीछे-पीछे डाक्टर दास भी आये । रानी माँ को चंगा देख सभी खुश थे ।

अचल की तरफ एकटक निहारने लगी रानी साहिबा । कुछ देख देखकर बोलीं—“तू उदास क्यों है अचल ! कैसी हालत बना रखी है तू ने ?”

“मै कहाँ उदास हूँ माताजी !” फीकी हँसी-हँसकर कहा कुँवर ने ।

मगर उसकी क्षणिक हँसी उसके चेहरे पर छाया कीलिमा को हटा नहीं सकी ।

रानी साहिबा नीचे से लेकर ऊपर तक अचल का देख रही थीं । अचल का चेहरा पहले-सा चमकदार नहीं मालूम पड़ा उन्हें । उस पर उदासी की एक परत दिखायी पड़ी । एक अव्यक्त चिन्ता की छाप थी उसके उदास चेहरे पर ।

“यह तेरे हाथ में क्या है ?...खत है क्या किसी का ?”

“आह !...इसे तो भूल ही गया था....यह पत्र ऋषेदहाँ से आया है....एक लठैत लेकर आया था....बड़े राजा ठाकुर ध्रुवसिंह का जन्म दिवस है...बुलाया है उन्होंने....”

गुनकर रानी साहिबा ने एक ठंडी साँस ली ।

बोलीं—“बड़े भले आदमी हैं राजा साहब !....तुम्हारे पिता से खूब पटती थी उसकी....जाना तो पड़ेगा ही तुम्हें....चञ्चल को भी साथ लिवाते जाना ! कब बुलाया है ?”

❀ सेदहाँ के बारे में जानने के लिये ‘झैला’ दूसरा भाग पढ़ें ।

“कल ही...मगर मैं तो नहीं जा सकूँगा माताजी !...चञ्चल जायगा....आप बीमार हैं, यहाँ मेरा रहना जरूरी है....”

“अच्छा भाई, चञ्चल ही चला जायगा...सेदहाँ जंगली इलाका है, कहीं फिर तुम अजगर-साँप के चक्र में न आ जाओ। बड़ा असावधान है कुँवर मेरा...” कहकर हँस पड़ी रानी साहिबा। कमजोर शरीर खुशी के वेग में बहुत बोल गया था सो थक चला। आगे फिर नहीं बोलो वे।

“अच्छा, अब आप लॉग रानी साहिबा को मत परेशान करें...जरा मैं अपना काम करूँ !” डाक्टर दास बोले।

“ये परेशान कहाँ करते हैं डाक्टर !....ये लॉग पास रहकर मेरा दुख बटा लेते हैं...” रानी साहिबा बोलीं।

डाक्टर साहब इंजेक्शन लगाकर चले गये। रानी साहिबा दिन भर स्वस्थ रहीं। सभी बेफिक्र होकर अपना अपना काम देखने चले गये। अचल भी अपने आफिस में आकर बैठ गया। दो-चार मजदूर उसके आगे अपना दुखड़ा रो रहे थे। और खामोश सुन रहा था वह। वारिस दरवाजे पर खड़ा था।

चुपचाप।

शाम हो गई इसी तरह। अचल आकर मैना के स्मारक के नजदीक बैठ गया। दूर से वारिस अपने मालिक की परेशानी पढ़ रहा था !

और उधर रात की कालिमा जब चारों तरफ फैलने लगी तो रानी साहिबा के जीवन में भी अंधेरा छाने लगा। दिन भर सभी से बातें करने वाली रानी साहिबा इस समय खामाश थीं। पलंग पर मछली की तरह छटपटा रही थीं। गठिया की वेदना मुँह से कराह बनकर निकल रही थी। चेहरे पर मौत अपनी चादर तान रही थी...धीरे-धीरे...

महल के सभी, बड़े से लेकर छोटे तक उनके पास आकर बैठे थे। सभी रहमदिल रानी माँ की जिन्दगी के लिये भगवान से बिनती कर रहे थे।

किन्तु अचल ?

वह तो बैठा था मैना के स्मारक के आगे। दाहक-स्मृति ने विश्विप्त-सा कर दिया था उसे।

अचल के पास खड़े वारिस ने शोर-गुल सुना तो रानी साहिबा के महल की तरफ चल पड़ा। रास्ते में गुलनार मिली। सभी बातें जानकर अचल के पास दौड़ा आया वह।

“हजूर ! रानी माँ की हालत खुदा कसम, बेहद नाजुक है...”
आँसी हो उठी थी वारिस की आवाज।

अचल ने सुना तो उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक गई।
उसकी जिन्दगी में क्या चैन नहीं ही लिखा है ?

अचल दौड़ पड़ा माँ को देखने। वारिस भी साथ-साथ था।
कई जगह तो अचल गिरते-गिरते बचा। वारिस सहारा दिये जा रहा था अपने पागल मालिक को।

किसी तरह वहाँ पहुँचा अचल। दृश्य देखकर सन्न रह गया वह।
उसका दिमाग चकराने लगा। आवाज तक नहीं निकली उसके मुँह से।

बदहवास-सा होकर वहीं बैठ गया कुँवर। वारिस ने लपक कर गिरते अचल को संभाला, बोला—“या खुदा, राजब मत ढा !....
तेरी ताकत के आगे इन्सान कुछ नहीं, मेरे मालिक !”

डाक्टर दास अपना काम करने में तल्लीन थे। सभी आँखों में आँसू लिये घटने वाली घटना का इन्तज़ार कर रहे थे।

दुनिया में दो रिश्तों को इन्सान जिन्दगी भर नहीं भूल सकता है—एक है दोस्ती और दूसरी दुश्मनी !

दोस्ती और दुश्मनी !

गुल और खार !

एक को छुओ तो दिल का शिकन-शिकन तर हो जाय और दुश्मरे का स्पर्श करो तो कलेजे में चुभकर पीड़ा भर दे !

उलफत में उलझा टिकोरा मैना को नहीं भूल सका है तो अपन दुश्मन परदेसी को भी नहीं भला है ।

लुटेरा परदेसी ! उसने टिकोरा को बरबाद कर दिया, उसका खुशी में आग लगा दी है और वह इस समय अपने महल में खुशियाँ मना रहा होगा ।

टिकोरा ने अपने दुश्मन को कमी माफ नहीं किया है । मैना की आँख नहीं खुलेगी तो शहरी नाग को भी सो जाना पड़ेगा, हमेशा-हमेशा के लिये ।

टिकोरा उद्भ्रान्त हो गया है । मस्तिष्क सही-सही कांड बात ही सोच पाता । भूख और प्यास मर गई है उसकी । दिन-रात की सुध नहीं उसे । पागल टिकोरा की आँखों की नींद ने भी हड़ताल कर दी है । दिन-दिन भर किवाड़ बन्द किये, मैना को अरमानभरे कलेजे से दबा पड़ा रहता है गाँव का वह खूँखार संपेरा । न किसी से मिलना, न किसी से बोलना । दुनिया में रहनेवाले मदारी को दुनिया के लोगों से घृणा हो चली है ।

इसलिये कि उसके मन की नहीं हो पाती ।

इसलिये कि अपने दिल को रिफा नहीं पाता वह ।

इसलिये कि मैना उठकर बोलती नहीं उससे ।

मैना उसकी गोद में पड़ी है । सारा गाँव सोया है । आजकल तो यह गाँव चक्का झूबने के पहले ही सोने की तैयारी कर लेता है । आधी-आधी रात तक नींद को आसमान का तारा बनाकर, खुलकर खेलने-नाचनेवाले सँपेरे चिराग जलते ही घर में घुस जाते हैं । लांगों में मैना के मरने की खबर फैल चुकी है, इसीलिये तो सँपेरे भयभीत हैं । टिकोरा के आगे गाँव वाले लाश मरतबा सर पटक आये कि लाश घर में न रखो मगर क्यों मुनने लगा टिकोरा ? उसे किसी की फिकर भला क्यों होने लगी ? वह एक कान से सुनता और दूसरे से निकाल देता ।

मैना मर कर भूत बन गई है, यह चर्चा गाँव की जवान पर है । रात को जब डर के मारे सँपेरे आँखें बन्द करके सोते हैं तो अजीब सपना देखने लगते हैं । विचित्र-विचित्र रूप धारण कर मैना उनके सामने आती है और चीखकर जाग उठते हैं वे । भीत नजरों से रात के अँधेरे में किसी की छाया भी देखकर उनका जी सन्न रह जाता है मगर लांग जरें भी तो क्या ? टिकोरा से जवान लड़ाने की ताकत उनमें नहीं ।

सभी अपने-अपने घरों में जागते-सोते पड़े हैं । काली रात मुँह बाये अपनी नीरवता बिखेर रही है । ऐसे ही समय में टिकोरा निकल पड़ा मैनाकी लाश लेकर सघन अँधेरे की छाती चीरता हुआ ।

खँडहर की तरफ जा रहा है वह । चारों तरफ सन्नाटा है । पैरों के नीचे सूखे पत्ते आते हैं तो अजीब स्वर में चीख पड़ते हैं । काली रात नागिन की तरह फुफकार रही है ! शबनम की बूँदें आसमान से उतर कर पेड़-पत्तों पर बैठ रही हैं ।

मगर टिकोरा तो है अपने धुन में मस्त । गले में लिपटा मणिधर मुँह बा-बाकर ठंडी-ठंडी हवा के झोंकों को पी रहा है ।

टिकोरा के पीछे-पीछे एक काली छाया भी जा रही है मगर उसको इसकी खबर नहीं।

खँडहर के नजदीक आकर टिकोरा एक चट्टान पर बैठ गया। पीछा करने वाली छाया एक दरख्त की आड़ में हो गई। थोड़ी देर बैठने के बाद टिकोरा खँडहर में घुस गया मैना को लेकर।

दूर छिपी छाया ने उसे खँडहर में जाते देखा तो वापस लौट गई।

खँडहर में जाकर टिकोरा ने साँप की मणि से वहाँ पर छाये अंधेरे का गला दबाया। चारों तरफ हरी-भस्मि रोशनी की चादर-सी फैल गई।

वह मैना के सर के बाल को सहलाने लगा मगर मैना रही मौन ही। प्रेमी का स्पर्श जीती-जागती जान को पागल कर सकता है लेकिन मुर्दे में जान नहीं डाल सकता कभी।

टिकोरा ने सर उठाया तो हलकी रोशनी में उसका उदास चेहरा झलक उठा। कुछ ही दिनों में बरगद-सी देह बाँस के रूख में बदल गई थी। उसने चारों तरफ निगाहें उठाकर देखना शुरू किया। उसे वहाँ की हर चीज भयावनी प्रतीत हो रही थी।

यह वही गुफा है, जिसने मैना और परदेसी को शहर का रास्ता बतलाया था। यह वही जगह है जहाँ मैना ने टिकोरा की पीठ में छुरा भोंका था और परदेसी ने उसके सर पर पत्थर की चोट की थी।

पुरानी बात टिकोरा की आँखों के सामने ताजा होती जा रही थी। भूली-सी स्मृति आँख मलती हुई जाग पड़ी थी। सोच-सोच कर खामोश पड़ा सँपेरा क्रोधित हो रहा था। आवेग से उसका मस्तिष्क फटा जा रहा था।

अपना सर ठोकने लगा टिकोरा! गुजरी बातों को भूलना

चाहता था वह । मगर गुजरे जमाने को भी उससे हमदर्दी नहीं हुई, खयालों में आता ही रहा ।

—और जब उसे हाश आया तो शहरी परदेसी मैना को उड़ा चुका था, बहुत दूर, टिकोरा को नजरों से काफ़ी दूर और तब ?

कुचले साँप की तरह फुफकार कर खोज में निकल पड़ा था टिकोरा । पोठ में छुरे का घाव, सर में पत्थर की चोट और अरमानभरे दिल में एक साध लिये ।

आखिर घिसटते-घिसटते उसने उड़ती मैना को पकड़ ही लिया मगर परदेसी तो भाग चुका था....मैना का खींचता हुआ चला था गाँव की ओर तो किसी ने उसे मारा था और बेहोश हो गया था वह । मैना खो गई—शहर की खाक छानने लगा वह दिल में हिमालय-सी दृढ़ता लेकर....मैना मिली उसे मगर तब जब कि उसके पंख कट गये थे । प्राण के पछी उड़ चुके थे ।....उसके बाद....

उसके बाद उसने अपना सर पटक दिया चट्टान पर । उसका दिमाग भन्ना उठा था । चोट खाकर भी बिगड़े दिमाग का घोड़ा रुका नहीं । दौड़ता ही रहा—

....परदेसी से हार कर लौट पड़ा टिकोरा...मामूली शहर के जवान से हार गया वह, मगर उसने अपनी हार नहीं कबूल की ।

“मैं हारा नहीं, हार नहीं सकता....” सोचते-सोचते सद्गसा चीख पड़ा विक्षिप्त टिकोरा ।

सुनसान खँड़हर की दीवारों से उसकी चीख टकरा कर फिर उसके कानों के पर्दे से टकरायी—“मैं हारा नहीं, हार नहीं सकता—”

उसे लगा कि परदेसी का स्वर है यह । मामूली-सा परदेसी

उसे जलकार रहा है। उत्तेजित हो उठा वह और कुचले साँप की तरह फुफकार उठा।

आवेग में भरा टिकोरा उठकर खड़ा हो गया और लपका उधर, जिधर से एक बार शहर जा चुका था।

वह परदेसी का गला घोट देगा। अब बच नहीं सकता परदेसी।

उत्तेजित, क्रोधित और पागल पहाड़ी-सा दीर्घाकार सँपेरा जब दौड़ता हुआ खँड़हर के दरवाजे के पास पहुँचा तो किसी का चीख से गूँज उठा वहाँ का वातावरण।

चीख उसी के गले की थी।



रात की जवानी ढल चुकी थी।

टिकोरा के घर के सामने की चट्टान पर सोया था सम्पू। किसी जंगली जानवर की आवाज़ से उसकी नींद खुल गई। उनींदी आँखों से इधर-उधर देखने लगा। आस-पास उसे कोई जानवर दिखाई नहीं पड़ा। उसकी नज़रें जब पगडण्डी की ओर गईं तो चौंक उठा वह।

एक काली छाया थी। पगडण्डी की छाती कुचलती हुई चली जा रही थी जंगल की तरफ। उसकी चाल में गजब की तेजी थी।

थोड़ी देर तक तो देखता रहा सम्पू; फिर लेट गया। उसे इससे क्या मतलब? लेटते ही उसे कोई बात याद आ गई तो उठकर खड़ा हो गया।

टिकोरा के घर के आगे आकर बोला—“उस्ताद !...सो गये हो आज क्या ?”

“.....” कोई जवाब नहीं ।

और दिन तो ऐसी घटना नहीं घटती थी । कहाँ गये उस्ताद ? आवाज सुनकर फुफकार उठने वाला मणिधर भी खामोश है आज तो...

सम्पू घबड़ा उठा । उसकी आँखों की नींद घबराहट में विलीन हो गई । फटी-फटी आँखों से दरवाजे की ओर देखा उसने—दरवाजे के दोनों पल्ले बेतरतीबी से खुले थे । अन्दर अंधेरा हँस रहा था ।

दौड़कर अन्दर घुसा वह, किन्तु हाथ लगा कुछ नहीं । उल्टे पाँव वापस लौट आया ।

बुदबुदाया—“तो अभी तक नहीं आये उस्ताद !”

अजीब हैं यह उस्ताद भी । किसी की फिकर नहीं उन्हें । गाँव में आग लगे या संपेरे भाँड़ में जाँय, उन्हें किसी की चिन्ता नहीं ! गाँव का सरदार ही नियम भंग करे तो गाँव वाले कब तक कानून के शिकंजों में बँधे रहना चाहेंगे । जब देखा, मैना की रट लगाये परेशान, उसकी मौत से बेजान ! यह भी कोई इश्क है ?

धीरे-धीरे बरगद की जड़ें कट चली हैं । किसके सहारे जियेंगे ये डाल-पात ? घण्टों एकान्त में बैठकर मैना को प्यार करता है । पत्थर की मूरत पर सर पटकता रहता है मगर कठोर पाषाण क्यों मोम बनने लगे ?

ऐसी जिन्दगी किस काम की, जिसमें चैन की एक साँस, खुशी का एक जरा और सुख की एक किरण तक न हो । इससे भली तां मोत है, कम से कम शान्ति तां दे ही देता है ।

मगर क्या करे सम्पू ! अगर वह अपने उस्ताद के पागलपन

की दबा ला सकता तो ले आया होता अब तक ! वह तो स्वयं परेशान है । टिकोरा के खिलाफ बोलने की ताकत भी उसमें नहीं । कोई भली सलाह भी देने लगे तो शामत आ जाय उसकी । बात-बात पर तो ऐसे ही उसे लात-घूसे मिलते रहते हैं इनाम में । कुछ कहकर अपनी मौत क्यों बुलाये....

अजीब-से विचार उठ रहे थे सम्पू के मन में । उसने सोचा— टिकोरा बैठा होगा खँडहर में और आँसुओं में नहलाता होगा मैना की लाश को ।

देखते ही देखते सबेरा हँस पड़ा, मगर सूरज क्षितिज की गोद में था अभी । उठकर खण्डहर की ओर चल पड़ा । खँडहर के पास पहुँच गया ।

अन्दर घुसकर उसने वहाँ के वातावरण पर निगाहें बिछा दीं ।

मैना जमीन पर पड़ी थी, पास ही बिकराल साँप अपनी मणि के चारों तरफ घेरा ढाले बैठा था । लेकिन टिकोरा !....वह तो नहीं था वहाँ ।

“उस्ताद !” सम्पू ने घबड़ाये स्वर में पुकारा । उत्तर नहीं मिला कुछ तो उसका कलेजा धड़क उठा । व्यग्र होकर वह देखने लगा इधर-उधर ।

कुछ दूर पड़ी एक चीज पर उसकी नजर पड़ी तो एकदम पीछे हट गया वह, मुँह से चीख निकलते-निकलते बची । सहसा उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ ।

साहस करके उस डरावनी चीख के नजदीक गया ।

बोला कम्पित और भयभीत स्वर में—“उस्ताद !”

टिकोरा ही था वह । गिरा था जमीन पर, आसपास की जमीन लहू-लुहान थी । सर से खून बहकर उसके भयानक

चेहरे पर छा गया था। भयानक सँपेरा खँडहर की तरह पड़ा था चित्त।

उस खौफनाक मंजर को देख-देखकर सम्पू की आँखों के आगे अँधेरा छाता जा रहा था। पृथ्वी घूमती मालूम हो रही थी।

किसने ऐसा किया? सम्पू के हृदय में प्रश्न उठा। एक व्यक्ति की आकृति उसके सामने आई। वह था चिकोरा!—टिकोरा का जानी दुश्मन!

पागल टिकोरा को चिकोरा ने मार डाला धोखे से।

सम्पू ढगमगाते पैरों से टिकोरा के बिल्कुल पास आ गया, काँपते हाथों से उसने स्पर्श किया। उसके बदन को हिलाया-डुलाया भी पर निश्चल रहा टिकोरा। सम्पू ने बेचैनी से जख्मी टिकोरा की छाती पर हाथ रखा तो खुशी से चीख उठा।

अभी धड़कन बाकी थी।

दौड़कर सम्पू बाहर से पानी लाया। अजीब फुर्ती आ गई थी इस समय उसके बदन में। पानी के छींटे से टिकोरा के मुँह को तर किया उसने।

बेहोश टिकोरा काँपा। उसके मुँह से एक आह निकली। सम्पू की आँखों में चमक आ गई। उसके पैरों के नीचे की भागी जमीन वापस लौट आई।

“उस्ताद!” सम्पू का स्वर विह्वल था—“आँखें खोलो उस्ताद!”

टिकोरा ने आँखें तो खोल दी मगर बोला नहीं कुछ।

पलकों के पट खुले तो भीतर से लाल-लाल क्रोध से भरी आँखें इधर उधर देखने लगीं। पास बैठे सम्पू को घूर कर देखने लगा वह।

“परदेसी!” चीख पड़ा टिकोरा। तेजी से उठकर उसने

सम्पू का गला पकड़ लिया—“सोचा था तुमने पत्थर मारने से टिकोरा मर जायगा....जरा-सी चोट टिकोरा की जिन्दगी नहीं छीन सकती...हा-हा-हा !”

सम्पू का गला कसता जा रहा था टिकोरा । उसने उसे परदेसी समझ लिया था ।

“उस्ताद !...मैं-मैं...सम्पू हूँ उस्ताद !....छोड़ो....” कहते हुए सम्पू ने गला छुड़ाने की कोशिश की ।

“तू भाग नहीं सकता शैतान....तुम्हारा खून पीऊँगा मैं !”

“उस्ताद !...उस्ताद !...यह तो तुम्हारा सम्पू है...मैं....” जोरों से चीख पड़ा सम्पू ।

आवाज पहचानी टिकोरा ने तो उसके हाथ का बन्धन ढीला हो गया ।

“तुम हो....भाग गया परदेसी...सम्पू ! भाग नहीं सकता वह शहरी साँप !.... मैं टिकोरा हूँ...उसे जिन्दा नहीं छोड़ सकता....ला मेरा साँप....” इतने जोरों से बोला टिकोरा कि खँडहर की गिरती दीवारों का कलेजा काँप उठा ।

सम्पू ने काल-सा विकराल काला साँप उसके हाथों में दे दिया । टिकोरा ने साँप को जमीन पर रख दिया ।

“यह शहर जायेगा सम्पू !...परदेसी को खोजकर ढेंसेगा...फिर वापस लौट आयेगा...हा-हा-हा !” अट्टहास करके टिकोरा मंतर पढ़ने लगा ।

मगर यह क्या ?—मंत्र की चोट खाकर साँप हिला तक नहीं और दिन तो तूफान बन जाता था ।

साँप को निश्चल देकर टिकोरा का क्रोध भभक उठा । सम्पू भी चकित आँखों से तमासा देख रहा था । टिकोरा ने अपना माथा पकड़ लिया । क्या हो गया है उसे ? मंत्र सोचने लगा

तो दिमाग में अंधेरा और तूफान के सिवा कुछ नहीं दिखाई पड़ा उसे। कुछ भी सोच नहीं सका वह।

उसके दिमाग की सारी शक्ति काफूर हो गई थी। मैना के पीछे सब खो बैठा था वह और माथे में जो कुछ बचा-खुचा भी था वह चोट लगने से खून के साथ निकल गया।

अपने उस्ताद के चेहरे पर अजीब भावों को उगते-मिटते देख सम्पू हैरान था।

“उस्ताद !...क्या हो गया है तुम्हें ?” ताज्जुब से बोला वह।

“पागल हो गया मैं सम्पू ! मैं पागल हो गया हूँ...टिकोरा को मैना ने खा लिया....फिर भी परदेसी का बच्चा बच नहीं सकता मेरे हाथों....” उत्तेजित टिकोरा उठकर खड़ा हो गया—“मैना कहाँ है....भाग गई वह भी ?....बोलता क्यों नहीं ?”

“वह तो वहाँ पड़ी है उस्ताद !” डगमगाते पैरों को सहारा दिया सम्पू ने।

“एक काम करेगा सम्पू !....बोल, करेगा कि नहीं ?” डाँफता हुआ बोला टिकोरा।

“करूँगा उस्ताद !....कहो तो जान भी दे दूँ....”

“तेरी जान नहीं चाहिये...परदेसी की जान लाकर दे दे तो उस्ताद बना दूँ तुम्हें...कहता हुआ टिकोरा मैना के पास आकर बैठ गया।

उसे देखते ही सारी उत्तेजना पानी बनकर बह चली। धीरे-धीरे आश्वस्त हुआ वह और जब आवेश का तूफान खत्म हो गया तो उसके सर पर पीड़ा होने लगी। सर का जखम अँगड़ाई लेने लगा। मैना की बगल में बेजान-सा कराह कर लेट गया वह।

“तुम्हारा हाल बेहाल है उस्ताद ! चलो घर चलें !”

“मैं यहाँ से नहीं जा सकता सम्पू !...यहाँ राहत मिलती

है मेरे दिल को....जानते ही हो तुम कि इसी खंडहर में मेरा जीवन बरबाद हुआ...यहीं पर मैना ने मेरी पीठ पर छुरा भोंका था...यहीं पर मैं पागल हुआ हूँ....मैं नहीं जा सकता यहाँ से...यहाँ पर मर जाऊँगा मैं....इस दगाबाज मैना ने और शहरी शैतान परदेसी ने हरा दिया टिकोरा को । तुम जाओ—मुझे छोड़ दो....यहाँ मरूँगा तो गाँववाले देख नहीं सकेंगे...आज सबसे हार मान गया है टिकोरा—जाओ...चले जाओ यहाँ से...” चीख पड़ा टिकोरा पागलों की तरह—“तुम भी चले जाओ फिर, वापस लौटकर फिर मत आना...हार कर मरने के बाद अपना मुँह नहीं दिखाना चाहता किसी को....अगर तूने मुझे उस्ताद माना है तो मेरा हुक्म सुन....मेरा नाम लेकर शहरी परदेसी का गला काट लेना....मेरी रूढ़ को शान्ति मिल जायगी...”

कहते-कहते भी आगे नहीं कह सका टिकोरा । अपना जख्मी सर जमीन पर पटकने लगा । इस समय घाव का दर्द भी भूल बैठा था वह । मस्तिष्क विकृत हो गया तो अनुभव खो बैठा ।

“तुम तो सभी से जीते हो उस्ताद !....हारे कहाँ हो ?....गाँव के सरदार हो तुम तो....तुम्हारे हुक्म के वगैर हवा भी टस से मस नहीं हो सकती....” कहते सम्पू ने टिकोरा के सर को अपनी हथेलियों से आहिस्ते-आहिस्ते दाबना शुरू किया ।

कुछ देर सोचते-सोचते बोल उठा टिकोरा—“मैं हारा नहीं, हार नहीं सकता....टिकोरा नहीं हारा है अभी....तू ठीक कहता है सम्पू !....हा-हा....” इस बार खुशी से हँसा टिकोरा—“सम्पू, पानी ला....”

सम्पू ने पानी लाकर पिलाया । शीतल जल जब अन्दर पहुँचा तो टिकोरा की चेतना लौटी । उसने पूछा—“तू यहाँ कैसे आया सम्पू !”

सम्पू ने संक्षेप में बताया सब कुछ कि रात को उसके पीछे-पीछे आया था। लेकिन खँडहर में उसे घुसते देखकर लौट गया था।

“तुम्हें चोट कैधे लगी उस्ताद !” सम्पू ने पूछा।

“परदेसी को पकड़ने जा रहा था सम्पू !...तो खँडहर के उस दरवाजे ने रोक लिया मुझे...उसी से टकरा कर गिर पड़ा मैं— दुनिया का बेजान पत्थर भी मेरा दुश्मन बन बैठा है...सबसे बदला लूँगा मैं !”

सम्पू बाहर गया और किसी पत्ती का रस निचाड़ कर उसने टिकोरा के जख्म पर लगा दिया। कुछ आराम मिल गया टिकोरा को।

“तुम जाओ सम्पू !...मुझे अकेला छोड़ दो...”

सम्पू चला गया तो टिकोरा ने मैना की तरफ निगाह डाली। उसे देख-देख कर शान्ति मिलने लगी उसे। कई रातों से जागी आँखों की पलकें नींद के भूले पर भूलने लगीं। पलकें बन्द हो गईं तो उसकी छाया में भयानक सपने दौड़ने लगे।

कभी मैना छुरा मारती तो कभी परदेसी पत्थर का वार करता। कभी चिकोरा उसका गला दबाता और कभी विशालकाय अजगर उसे अपने जबड़े में दबाने के लिये सामने मुँह बाकर आ जाता।

खौफनाक सपने देख-देखकर चौंक पड़ता टिकोरा। आँखें खोलकर इधर-उधर ताकने लगा। पर कुछ हाँ तब तो दिखलाई पड़े। कई दिनों के बाद नींद भी आई तो हराम हो गई...

पीपल के पेड़ के नीचे सभी सँपेरे एकत्र हैं। मशाल जल रहे हैं। सभी के मुख पर भय की छाया, रात की कालिमा की तरह छा गई है। सामने ही पीपल के दरखत के नीचे, चबूतरे पर बेढंगे पत्थर की मूरत रखी है। जो सँपेरी के देवता नाग भगवान की है। सभी के हाथ में तुम्बी है। बजा-बजाकर भगवान को रिम्का रहे हैं सँपेरे। गाँव से मैना की रूह भगाने के लिये।

चिकोरा भी मौजूद है मगर चमकी की चमक नहीं है उसके साथ।

हाथ में पड़े महुवर को मुँह से लगा लिया उसने। एक मधुर स्वर काँप कर हवा में तैर उठा। पीपल के पत्ते कान खोलकर सुरीली और मोहक आवाज का पीने लगे।

तभी किसी सँपेरे की नजर दूर हिलती-डुलती छाया पर पड़ी।

उसके इशारे पर महुवर की आवाज बन्द हो गई। उसी छाया की तरफ देखने लगे सभी। कमजोर दिल वालों का कलेजा धक-धक धड़क रहा था। फिर भी चुप थे वे।

“मैना की रूह आ गई....टिकोरा भी देख ले अपनी आँखों अब....” किसी ने चिकोरा के कानों में फुसफुसा कर कहा।

“आज तो देखना ही पड़ेगा...नहीं देखेगा तो जायगा कहाँ!....छबीले, जाकर तू कह दे टिकोरा से—आकर देख ले अपनी मौत को...” चिकोरा ने एक सँपेरे से कहा।

और उसका हुक्म नहीं टाल सका वह सँपेरा। आजकल गाँव में चिकोरा का रंग था। सभी उसके इशारे पर भूमते थे फन उठाकर। आज चिकोरा तैयारी करके आया है...या तो खुद रहेगा

गाँव में या टिकोरा ही रहेगा। आज फैसला करके छोड़ेगा वह। छाया धीरे-धीरे जंगल की झाड़ियों की तरफ भागी जा रही थी। और सभी सँपेरो के साथ चिकोरा छबीले के लौटने का इन्तज़ार कर रहा था बेचैन-सा।

तभी दौड़ा-दौड़ा छबीले आया। हक्का-बक्का था वह। बड़बड़ास होकर बोला—“चिकोरा !....चिकोरा !....वहाँ तो टिकोरा है ही नहीं....खाली पड़ा है उसका घर....मैना का भी पता नहीं है !”

सुनकर अचम्भे में पड़ गया चिकोरा—“क्या कहते हो तुम ?”
“मैं ठीक कहता हूँ...खाली पड़ा है उसका घर....”

“और वह सम्पू ?...” उठकर चिकोरा खड़ा हो गया।

“वह भी नहीं...”

टिकोरा और सम्पू के एक-एक गायब हो जाने से सँपेरे चकित हो उठे। उधर मैना की रूढ़ जंगल की तरफ बढ़ती ही जा रही थी।

“डर के मारे छिप गया करैत !....आओ चलो, इस रूढ़ का गला काटूँ पहले...”

गाँव वाले रोकने लगे चिकोरा को। बोले—“अपनी जान जोखिम में मत डालो चिकोरा !”

“गाँव के लिये कुर्बानी दे दूँगा मैं....डरपोक टिकोरा थोड़े ही हूँ !” कहता हुआ दौड़ पड़ा वह। उस छाया के पीछे विकराल साँप लिये।

उसके पीछे गाँव के कुछ हिम्मती सँपेरे भी दौड़े।

पीछा करते-करते चिकोरा छाया से दस कदम पीछे चल रहा था। तेजी से छाया भी एक झाड़ी में घुस गई। चिकोरा के पाँव थम गये। अब क्या करे वह ? उसने हाथ के साँप की ओर देखा। जमीन पर से चुटकीमें धूल उठाई और उस पर एक फंका मारी।

हाथ का साँप फों कर उठा ।

मंत्र से बंधे साँप को झाड़ी में फेंक दिया उसने । गाँव के संपेरे चुपचाप उसकी लीला देख रहे थे । वे सोच रहे थे, भला रुह का साँप क्या बिगाड़ सकता है ? चिकोरा के होंठ बुदबुदा रहे थे । लगातार साँप पर मंत्र फेंक कर उसे उत्तेजित कर रहा था वह ।

तभी—

किसी के गले की चीख नीरव रात्रि और सुनसान जंगल की शान्ति चिहुँक कर जाग पड़ी । आवाज किसी नारी के गले की थी ।

“वह मारा !” खुशी से उछल पड़ा चिकोरा—“आओ टिकोरा की खबर लें !....बदजात ! घर के किसी कोने में छिपा होगा....”

मैना की रुह का हराने के बाद संपेरो का सारा भय भाग गया था । नई ताकत आ गई थी उनमें । आवेश और जाश में भरे सभी टिकोरा के घर के आगे उमड़ पड़े थे ।

चिकोरा और उसके साथियों ने छोटे से घर का जर्जर-जर्जर छान डाला मगर पता नहीं लगा टिकोरा का ।

आग लगाई गई टिकोरा के घर में । पहले धुआँ उठा फिर लपटें लपलपा उठीं । किसी का घर जल रहा था, कोई हंस रहा था । इधर टिकोरा के घर में आग लगाई गई थी और उधर वह मैना को गोद में लिये खंडहर में बैठा था । अपने दिल की आग बुझाने की कोशिश कर रहा था । सम्पू भी वहीं था ।

“सम्पू ! आज मैना बहुत अच्छी लग रही है मुझे तो....तुम्हें कैसी लगती....” पूछा टिकोरा ने, मैना की ओर देखते हुए ।

“हाँ उस्ताद !” सम्पू ने टिकोरा का मन रखने के लिये हाँ में हाँ मिलाया ।

टिकोरा ने मैना की लाश को दीवार से लगाकर खड़ा कर

दिया। आज मैना को सजाया था उसने। मैना का पूरा बेजा शरीर फूलों से ढंका था।

बोल रहा था टिकोरा—“मैना रानी !....आज तुम मेरे पास हो....तुम्हारा परदेसी बहुत दूर है यहाँ से...कहा था न मैंने—इन्सान जब ताकत से नहीं जात सकता किसी को तो पीछे से वार करता है...घोखा देता है, दगाबाजी पर उतर चलता है...और आज टिकोरा दुनिया से ऊपर है....तुमने खूब सताया है मुझे, परदेसी के साथ घण्टों मौज करती थी तुम, मगर मेरे लिये तो एक पल भी खाली नहीं रहता था तुम्हारा। आँखों की पुतलियाँ तुम्हारी राह देखते-देखते थक जाती थीं और तुम...हा-हा-हा !” पैशाचिक अट्टहास कर उठा टिकोरा—“देखो यह साँप....उस्ताद का उड़ने वाला साँप भी मेरे पास है, तुमने कहा था—एक दिन तुम्हीं को काटेगा यह कि साँस भी नहीं ले पाओगे तुम....आज तो यह भी मेरे हुक्म के बगैर फन नहीं फैला सकता—समझी ?” कहते हुए टिकोरा ने हाथ के साँप का अपने आगे फेंक दिया।

“आज टिकोरा तुम्हारे साथ खेलेगा...मैं अपनी हसरत पूरी करूँगा....कोई बचा नहीं सकता तुम्हें....” कहता हुआ टिकोरा मैना का अपनी बाँहों में कसने के लिये लपका !

सम्पू वासना की आग में जलते उस्ताद को देख रहा था। एकाएक टिकोरा को मैना की तरफ लपकते देखा उसने तो चौंक पड़ा वह। आज क्या करने जा रहा है उसका उस्ताद !

बीच ही में उस्ताद फेरई का भयानक साँप फन फैलाये टिकोरा की ओर देख रहा था। मगर टिकोरा को इसकी खबर कहाँ ? वह तो उत्तम हो उठा था। मैना की सूरत से प्यास बुझाते-बुझाते उसे ‘भूख’ लग गई थी।

मैना के नजदीक पहुँचा भी नहीं था टिकोरा कि आर्त्तनाद कर उठा वह ।

जमीन पर लड़खड़ा गया भयानक सँपेरा ।

मणिधर के फन पर पैर पड़ गया था उसका और क्रोध में आकर विकराल साँप ढँस लिया था उसे ।

गिरा टिकोरा फौरन उठ खड़ा हुआ । तब तक सम्पू ने भी साँप का मतर से बाँध दिया ।

“अभी नहीं मर सकता मैं...मैना रानी ! काट तो लिया साँप ने मगर टिकोरा की ताकत इतनी कम नहीं कि इस साँप के ढँसने से छन...छन भर में मिट्टी बन जाऊँ...जहरीले साँप से अधिक जहर है मेरे भीतर....आओ चलो...तुम्हारे परदेसी को तुम्हारी आँखों के आगे यह साँप काटेगा...उसे छाँड़ नहीं सकता...” टिकोरा ने तेजी से मैना को अपनी थरथराती भुजाओं में कस लिया और फिर....

और फिर लड़खड़ाते पैरों से खोह के भयानक अंधेरे की तरफ दौड़ पड़ा फुफकारते हुए ।

टिकोरा को भागते हुए देखा सम्पू ने तो चीख पड़ा—
“उस्ताद !”

“हा-हा-हा !” कोई अट्टहास कर उठा उसके पीछे ।

पलट कर सम्पू ने देखा तो सन्न रह गया—“चिकोरा के साथ कितने ही सँपेरे दरार की राह मशाल लिये घुस पड़े थे ।

“यहाँ दो तुम लोग....भागने की कांशिश मत करो सम्पू !” दो पग आगे बढ़ा चिकोरा—“तुम्हारा उस्ताद भाग गया हा-हा-हा....पत्थर की चोट भूला नहीं दगाबाज !”

कहते-कहते चिकोरा की नज़र दूर पर रेंगते किसी चीज पर पड़ी तो दौड़ कर उठा लिया उसने ।

बोला—“साँप अपना यही छोड़ गया करैत !...चुप क्यों खड़ा है तू !” चिकोरा का स्वर क्रूर हो उठा था ।

परदेसी को मारने की जल्दी में अपना साँप भी भूल गया था टिकोरा ।

“चिकोरा !” भयभीत सम्पू गिड़गिड़ा उठा—“मुझे माफ करो.. टिकोरा ने बहका दिया था मुझको....”

“हा-हा-हा....तो जा उसी के पास....ले अपने अहसानों का बदला...” कहकर चिकोरा ने मणिधर को उसके सर पर फेंक दिया ।

क्रोधित साँप सम्पू के गले में लिपट गया और...और उसने जहरीले दाँतों को उसकी छाती में गड़ा दिया । दूसरे ही क्षण सम्पू जमीन पर पड़ा था ।

चिकोरा अपनी विजय पर खिलखिला उठा । आज उसके रास्ते के सभी काँटे हट गये थे अपने आप ।

बाहर निकला वह तो हुक्म दिया उसने—“इस दरार में पत्थर भर दो ताकि शैतानों की रूढ़ गाँव में नहीं आ सके....”

उत्तेजित संपेरो ने ढकेल कर एक भारी चट्टान की दरार में गिरा दिया । खुला रास्ता बन्द हो गया । सभी ने शान्ति की साँस ली ।

“आओ जरा मैना की रूढ़ को झाड़ी में देखें, कैसी है...” चिकोरा ने कहा तो उसके पीछे सभी चल पड़े ।

मशाल की रोशनी से पूरा जंगल दिन की रोशनी लिये सो रहा था, जब संपेरो का गरोह झाड़ी के पास पहुँचा तो चिकोरा ने सभी को बाहर ही रोक दिया । खुद झाड़ी में घुस पड़ा, हाथ में मशाल लिये ।

मैना की रूढ़ पर जब उसको नजर पड़ी तो उसके ऊपर आसमान फट पड़ा ।

“चमकी !” चीख पड़ा वह ।

चमकी ही थी वह ! छैला की याद ने उसे इतना पागल कर दिया था कि बावरी होकर नींद में भी उठकर अपने छैला की छाया खोज रही थी । चिकोरा करुण नेत्रों से चमकी के चेहरे पर छाया खामोशी का देख रहा था ।

चिकोरा को देर हो गई झाड़ी में तो और सपेरा भी आ पहुँचे । सभी देखकर स्तम्भित हो गये । चिकोरा ने धीरे-धीरे चमकी को उठाया । इस वक्त गम्भीर था वह । उसे उठाकर घने जंगल की ओर चला ।

“चिकोरा !” कुछ सपेरे रोकने लगे उसे ।

“चिकोरा, टिकोरा नहीं, जो चमकी की लाश को कलेजे से लगाकर बेकरारी मोल ले ले...जाओ तुम लोग...मैं इसे नदी में फेंक कर आता हूँ अभी....”

लुटा सपेरा आगे नहीं बोल सका । उसके दिल का दर्द उभर आया था मगर था वह चुप ही ।

उसके पाँव धीरे-धीरे चल पड़े नदी की तरफ !

X

X

X

खंडहर से लड़खड़ाता टिकोरा नदी के किनारे निकला । उसके ऊपर विकराल साँप का जहर धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था मगर कसमसाती जिन्दगी को सम्भाले था वह । सिर्फ परदेसी का गला दबाने के लिये, उसके खून से अपनी प्यास बुझाने की खातिर ।

मैना उसके कंधे पर थी । काँपते हाथों का सहारा दिये था वह बेजान शरीर को ।

शान्ति की गोद में सोयी नारी को कब तक सहारा देगा बेचैन मानव !—इसे वह नहीं जानता ।

सँपेरे की जिन्दगी का सफर मौत की मंजिल पर जाने के लिये छूटपटा रहा था । मगर टिकोरा इतनी जल्दी शान्ति हासिल करने का खुवाहिशमन्द नहीं । वह तो शान्ति छूटने वाले परदेसी से छीनेगा अपनी शान्ति ।

अचल को मौत का रास्ता दिखाने जा रहा था टिकोरा ।

और अचल ?...

मैना का बदनसीब परदेसी !

रफ् !

जिन्दगी एक सफर है और मौत एक मंजिल....

— 'छैला' प्रथम खण्ड समाप्त —

नोट—टिकोरा की इस बात पूरी हुई कि नहीं, अचल और मैना का क्या हुआ ? आदि घटनायें 'छैला' के दूसरे भाग में पढ़ें ।

कान्त-साहित्य

- | | |
|------------------|--------------------|
| ४) निर्मोही | ३) कुकुम |
| २॥) इशारा | ४॥) मदमरे नयना |
| ४) नागिन | ५॥) विद्रोही सुभाष |
| ४॥) चूड़ियाँ | ४) पपिहरा |
| २॥) जलन | ३॥) लालरेखा |
| ३॥) भँवरा | ५) परदेसी २ भाग |
| ४) लवंग | २॥) उड़ते उड़ते |
| ४) मंजिल | १॥) रक्त मंदिर |
| ३॥) आहुति | ३) जंजीर |
| ५॥) नीलम | २॥) बसेरा |
| २॥) पागल | २॥॥) अकैला |
| २॥) जवानी के दिन | ४) दानवदेश २ भाग |
| २॥) उसके साजन | ४) गोल निशान |
| ॥॥) कैसे कहूँ | ३॥) हमारी गलियाँ |
| ३॥) पारस | ४) लालकिले की ओर |

२॥) पराजिता (कहानी-संग्रह)

